उपदेश-रत्न कथाकोश

(हिंदी अनुवाद सहित)

छठो खंड

सपादन

डॉ. किरण नाहटा

अनुवाद

शंकरसिंह राजपुरोहित

प्रकाशक

आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान

(आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान रो साहित्य-प्रकल्प)

आचार्य तुलसी समाधि-स्थल

नोखा रोड, गगाशहर-३३४४०१ (बीकानेर) राजस्थान

अर्थ सौजन्य : 'उपदेश-रत्न कथाकोश' रो औ छठो खंड सूरतगढ निवासी स्व. चानणमलजी, स्व. धापूदेवी, स्व. रेशमीदेवी अर स्व. कमलेशकुमारजी रामपुरिया री पुण्य स्मृति में श्री मालचन्द, डॉ धनपत, लखपत, दीपक अर सतोषदेवी रामपुरिया रै अर्थ-सौजन्य सू छप्यौ।

पैलो संस्करण : २००७

प्रतियां : ११००

मोल : ४० रुपिया

प्रकाशक : **आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान**
आचार्य तुलसी समाधि-स्थल, नोखा रोड
गगाशहर-३३४४०१ (बीकानेर), राजस्थान
✆ : ०१५१-२२७०३९६

मुद्रक : **कल्याणी प्रिंटर्स**
अलख सागर, बीकानेर-३३४००१
✆ : ०१५१-२५२६८९०

आशीर्वचन

अर्हम्

उपदेश के लिए कथाकोश लिखने की परंपरा बहुत प्राचीन है। उस परपरा का अनुसरण कर श्रीमज्जयाचार्य ने 'उपदेश-रत्न कथाकोश' लिखा। सहज-सरल मारवाड़ी भाषा। यह साहित्यिक दृष्टि से भी अनुपम ग्रंथ है। इसका काव्य बहुत मार्मिक है। यह केवल धर्मोपदेश से संबद्ध नहीं है। इसमे बौद्धिक विकास और मानसिक प्रसाद की भी पर्याप्त सामग्री है।

डॉ किरण नाहटा ने इसका संपादन कर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। एक विचित्र संयोग है कि वह आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-संस्थान के माध्यम से आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर की प्रकाशन-सुषमा की श्री-अभिवृद्धि कर रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ

जाणयाणा (बालोतरा)
८ फरवरी, २००२

पुरोवाक्

जैन-दर्शन रै माय नव तत्त्वां री झीणी चरचा मिलै। जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अर मोक्ष नांव रा आं नव तत्त्वा में पुण्य अर पाप रो सीधो-सीधो सबंध कर्म-सिद्धांत सूं है। यूं आश्रव, संवर, निर्जरा आद रो संबंध भी कर्म सू ही है। जैन-दर्शन ही नीं, वरन् प्राय: सगळा ही प्रमुख भारतीय दर्शनां री आ मानता है कै जीव नैं आपरै कर्मां मुजब सुख-दुख भोगणा पड़ै। सद्कर्म कर्यां जीव रै पुण्य रो बंधन हुवै अर असद्वृत्तियां रै कारण पाप रो। पुण्यबंध रै जोग सूं जीव नैं सुख अर अनुकूलता मिलै तो पाप-कर्मा रै जोग सूं विपदावां अर अबखाया भोगणी पड़ै।

चूंकि जैन-दर्शन अर बीजा भारतीय दर्शन पुनर्जन्म रै सिद्धात मांय विश्वास करै, इण खातर बारी आ मानता है कै जीव नैं आपरै कर्योड़ा कर्मां रो फळ जन्म-जन्मांतरां ताईं भोगणो पड़ै। औ जरूरी कोनी कै कोई भी जीवात्मा इणी जन्म मे आपरै सद्-असद् कर्मां रो फळ भोगलै। औ ही कारण है कै इण जन्म में सुकारथ क़रण रै बावजूद भी मोकळा जणा दुखी अर संतप्त निजर आवै अर इणरै विपरीत घणा ही कुकर्मी अर दुराचारी मिनख सुख-संपत्ति विलसता दीसै। इण विपर्यय रो कारण है कै मिनख पूर्व जन्मां रै कर्मां मुजब पुण्य अर पाप रै जोग सू सुख अर दुख रो भोग करै।

आपां जाणा कै समाज अथवा सत्ता रो भय मिनख नैं पूरी तरियां असद्वृत्तिया सूं विमुख नीं कर सकै। आ दोनूवां सूं भी इधको प्रभावी हुवै निकाचित कर्मां रै भोग रो भय। जकां रै मन में अै संस्कार प्रबळ हुवै कै सत्कर्मां सू पुण्य-बधन हुवै अर असद् कर्मा सू पाप-बंधन, बै लोग अमूमन हरेक काम जागरूकता अर विवेकबुद्धि रै साथै करै। अैडा सत्संस्कारी लोग राज अर समाज, दोनूवा खातर किणी भात री परेशानी का असुविधा रा कारण नीं बणै, क्यूकै अै

लोग आत्मानुशासी लोग हुवै। पाप रै डर सू अैड़ा लोग असद् आचरण सू विरत हुवै तो पुण्य सू मिलबा वाळा सुख री चाह मे स्वत: सदाचरण में भी प्रवृत्त हुवै।

अैडा ही भावा नैं पोखण वास्तै श्रीमद् जयाचार्य आपरै 'उपदेश रत्न कथाकोश' मे पुण्य अर पाप रै परिणामां नैं दरसावण आळी मोकळी कथावा रो संकलन कर्‌यो है। 'उपदेश रत्न कथाकोश' रै इण छठै खंड में गुलाब कुंवर री कथा, धन्नै रा भाग, दो बहिना री कथा, केवन्ना री कथा, पाप-पुण्य रो जोडो, जैडी कथावां पुण्य अर पाप रै परिणामां नैं दरसावै। अैड़ी कथावां, यूं तो हर किणी रै खातर प्रेरक हुय सकै पण कोमल बालमन नैं संस्कारी बणावण री दीठ सूं आ कथावा रो मोल तो सवायो ही समझो।

पुण्य अर पाप री भांत जैन वाङ् मय रै मांय सात व्यसना री चरचा भी प्रमुखता सूं मिलै। अै सात व्यसन है- जुओ, चोरी, मदिरा रो सेवन, मास-भक्षण, शिकार, वेश्यागमन अर परस्त्रीगमन। उपदेश-रत्न कथाकोश रै इण छठै खंड मे श्रीमद् जयाचार्य आं सात व्यसनां रै बुरा नतीजां नैं दरसावण आळी कथावां भी भेळी है। आ छोटी-छोटी कथावां रै माध्यम सूं पाठक नैं आं दुर्व्यसनां सू दूर रैबा री प्रेरणा दिरीजी है। आज रै इण भौतिकतावादी जुग मे जदकै मिनख उद्दाम वासनावा रो दास बण'र उन्मुक्त भोग रो आदी बणतो जा रैयो है- अैडी कथावा री उपादेयता स्वत: सिद्ध है। इण कथाकोश में मूलदेव नीं कथा, वररुचि नीं कथा, उजीया नीं कथा, श्रेणक राजा नीं कथा, बृहष्पत प्रोहित नीं कथा शीर्षक सूं संकलित कथावा आं दुर्व्यसनां सू विरत हुवण री प्रेरणा आपरै पाठक नैं देवै है।

श्रीमद् जयाचार्य री आ खूबी है कै बै मिनख रै परलोक सुधारण री ही चिता नीं राखै वरन् उणरै ईहलौकिक जीवन रै भी सौरै-सुखी अर मगळदायी हुवणै री कामना करै। इण दीठ सूं लोकव्यवहार री सम्यक् जाणकारी घणी महताऊ। आदमी नैं कठै कांई बोलणो अर काई नीं बोलणो, किणरै साथै कैडो व्यवहार करणो अर नीं करणो, किणरी बात मानणी अर किणरी नीं मानणी, कठै मून रैवणो, तो कठै निष्क्रिय हुय जावणो आद लोकव्यवहार रा मोकळा ही प्रसंग है। आ प्रसगां मांय सूं कींएक प्रसंगां नैं ध्यान मे राखता थका बै मूरख मिनखां अर पशुआ रै ओळावै भी खास सीखामण आपरै पाठका नैं दी है। इण छठै खड मे अैडी भी कीं कथावा भेळीजी है। अै कथावा प्रेरक हुवणै रै भेळै ही घणी रजक भी है।

आ भांत-भात री कथावां रो विवेचन अर मूल्याकन केई तर्‌है सू कर्‌यो जा सकै है। विषय प्रतिपादन री दीठ सू विचार करा तो औ तथ उभर'र सामै आवै कै आं मांय सू मोकळी कथावा रा स्रोत जठै लोकजीवण में व्याप्त कथावा, घटनावा, प्रवाद अर प्रसग रैया है, बठै ही कींएक कथावां रो संबंध पौराणिक आख्याना सूं भी रैयो है। कथावां री विषयवस्तु रै चयन मे जयाचार्यजी री उदार दीठ अर विस्तृत अध्ययन रो पतो लागै है।

अै कथावा भोळा-ढाळा टाबरियां अर कम भण्या-गुण्या मिनखां रै खातर जितरी रोचक अर उपादेय है उण सू कम रोचक अर उपादेय पढ्या-लिख्या लोगा अर साहित्य-प्रेमी विद्वानां री दीठ सू भी नीं है। सद्‌सस्कार देवण आळी आ लोकरजक कथावां नैं पाठका रै हाथा सूपता घणै संतोष रो अनुभव करू हूं।

डॉ. किरण नाहटा

मानद निदेशक

आचार्य तुलसी राजस्थानी शोध-सस्थान

वसंत पंचमी, वि सं. २०६३

७ ग १५, पवनपुरी दक्षिण

बीकानेर ३३४००३

गुलाब कुंवर री कथा

एक राजा राज करै, जिणरै पुत्र नहीं। राणी गर्भवती हुई। राजा आउखौ पूरौ कीयौ। राणी पुत्री जन्मी, पुत्र बिना राज सूनौ। जद पुत्री नैं रांणी कुवर ठेहरायौ। बधायां बाटी। ओछव-महोछव कीधा। गुलाब कुंवर नाम दीधौ। पुरुष नौं वेस बालपणा थी राखै। सात-आठ वर्स री हुई जद भण-गुणनै पकी हुई। इणरै मरदी सिरपाव घोडा खेलावै।

एक दिन अवळी वाग रै घोडै चढी। ज्यू वाग खाचै त्यू घोडौ दोडै, सो उजाड रन वन रोही मैं चल्यौ गयौ। दिन आथम्यौ जद वाग ढीली मेली, जद घोडौ ऊभौ रह्यौ। जद इण हेठी ऊत्तरनै वन फळ खाधा। घासीयौ विछायनै सूती, जद जिनावर बोल्या– सो आपा री वींट पडै जद वींट नैं चुग घसनै आख्यां मैं अजन करै तो आधा री सूझतौ हुय जावै।

गुलाब कुवर सुण वींट पलै बाध दूजा देश रा अंध राजा रै सैहर आई। वेद री रूप कीयौ जद किणहि जायनै राजा नैं कह्यौ– महाराज ! घणी पुन्यवान वेद आयौ छै।

राजा बोलायनै कह्यौ– अरे वेद ! तोनै आधौ तो राज देवूं अनैं म्हारी बेटी परणावू।

जद इण कह्यौ– ठीक।

वींट घसनै दोया आख्यां में अजन कीयौ, सो आख्या खुल गई। बेटी परणायनै आधौ राज दीयौ। महिला मैं आया, राजा री कुवरी चाळा चिरत करवा लागी जद गुलाब कुवर बोल्यौ– अबारू तो म्हैं सौगन लीधा छै सो बारै महीना पछै काई वात।

अबै सुखे समाधे अठे रहै। घोडा खेलावै। जद लोका चै चै वाता करवा लागा, सो राजा रै जमाई तो स्त्री दीसै छै। आ वात राजा सुणी, जद बेटी नैं पुछायौ, जद बेटी जाब देवै नहीं।

जद राजा विचार्‍यौ, कीमत तो करणी। सवारै फाग रमवा नैं सिरदार अनैं हू गुलाब कुवर स्नान करसा। सारा ई नैं तीन-तीन हाथ नौं अगोछौ पहिरवा नैं देसा। इसी विचारनै राजा सूतौ। गुलाव कुंवर आपरा महिला मैं जाय सूती, पाछली रात्रि रा कुळदेवी आयनै बोली– गुलाव कुवर सूती कै जागै ?

जद गुलाव कुवर बोली– हा जागू छू।

जद कुळदेवी बोली– सवारै राजा आ वात विचारी छै।

जद कुवर कहे– अबै काई करणौ ?

जद देवी कह्यौ– घोड़ा फिरावता फिरावता आघौ ई चल्यौ जाइजै।

जद औ दिन ऊगौ नै घोडा फेरावता-फेरावता चलतौ रह्यौ। उजाड मैं दिन अस्त हुऔ नै पाछली रीते सूतौ, सो चकवौ चकवी अळगा बैठा वाता करै।

चकवी बोली– कह रे चकवा वात, ज्यूं कटै रात।

जद चकवौ बोल्यौ– वड़ला हेठै जिनावरा री वींटा पड़ी छै, सो घसनै लगावै तो कोढ परौ जावै।

गुलाब कुंवर पाछली रीते वींटा चुग तिहां थी अन्य देशे गयौ। घणा रा कोढ मेट्या। ते सहर रौ राजा तिणरै कोढ रौ रोग। तिण वेद नैं बोलायौ, जद ते वींटा घस राजा रा शरीर रै लेपन करनै कोढ गमायौ। राजा अर्द्ध राज दीयौ, आपरी किन्या परणाई।

पूर्वली परे किन्या नैं कह्यौ। फेर लोक छांनै-छांनै वाता करवा लागा। जद राजा समाचार सुण्या। कीमत करवा नैं ढोलीयौ विछायौ, सिरातौ ऊचौ राख्यौ। स्त्री स्वभाव सरात्यौ ऊंचौ थोडौ राखै। जद कुळदेवी समझाय दीयौ, सो सिरांतीया कानी सूतौ। जद राजा कुवर जांण्यौ। फेर कीमत करवा नै लेखणा री भारी मेली।

जब देवी कह्यौ– लेखणा काढबौ करौ, सो काढता-काढता कला आय जासी। अबै लेखण काढवा री कला आय गई सो लेखण काढ दीवी। फेर देवी बोली– अबै अठै आप रहौ मती। जद दिन ऊगै घोडा ऊपर चढनै चालतौ रह्यौ।

आगै एक सैहर आयौ, जठै तळाव री पाळ ऊपर बैठौ, सो राजा आऊखौ पूरौ कीयौ। हथणी सिणगारी, सो हथणी घूमती-घूमती गुलाब कुवर रै वरमाळा घाली, राजा री कुवरी ही, सो इणनैं परणाय दीधी।

अबै औ गुलाब कुवर राज भार चलावै। पाछली रीते किन्या नैं कह्यौ। एक दिन गुलाब कुंवर असवारी करनै सिकार गयौ जठै आगै दूजे राजा री कुवर उण अटवी मैं आयौ, सो कुवर बुद्धिवांन। इणनैं स्त्री जाणी, पुन्यवान जाणी मोहीज गयौ। गुलाब कवरी पिण रूप देखनै मोही। दोनू ई एकांत वात् करनै अटवी मैं ईज परणीज गया।

पाछा आपरै महिला आया। किन्या नैं जणाय दीयौ औ आपारौ भरतार। सगळी स्त्रियां नैं भेळी कर पाछा गुलाब कुंवर पोतारी नगरी मैं आया। उठै समाचार माता नैं सुणाय दीधा अनैं कुवर नैं राज बैसांण्यौ। २ किन्या रा मात-पिता साधुपणौ

लीयौ, उणारै पुत्र नहीं, सो राज इणनैं हीज दीयौ। अबै च्यारू ई देसा रौ राज भोगवै, सुखे समाधे रहै।

यू करता-करता कितोयक काळ वीता छता साधु मुनिराज पधास्या, ज्यारी वाणी सुणी गुलाब कुंवरी आदि च्यारूं रांण्या अनैं राजा पुत्र नैं राज थाप, साधुपणौ ले करणी कर, कर्म खपावी, पांचू ई मुक्ति मैं जाय विराजमान हुआ। औ सारौ ई गुलाब कुवर रौ उपगार।

गुलाब कुंवर ससार लेखै पुन्यवांन हुतौ तो जिहा गया तिहां मनोवंछित कार्य सिद्ध थया।

(२५२)

धनै रा भाग

एक साहुकार, जिणरै च्यार बेटा। लाखां रुपइया री आसांमी ही, सो विणज में तोटौ पड्यौ। जिहाजां डूब गई। गुमास्ता धन खाय गया। हूड्या बध हुई, लोका रौ देणौ रहि गयौ। इणरी आसामी कची पडी, माथै मिलै नहीं जद औ साहुकार विणजणी करै। तेल, लूण, तमाखू गामड़ीयै जायनै वेचै। च्यारू ई बेटा मोटा हुआ पिण सगपण मिलै नहीं।

एकदा समैं गामडीयै गयौ। आगै आरता ही ज्यांनैं कह्यौ— कठैई बेटां री सगाई करावौ। जद आरतीयां नैं दया आई, सो ३ बेटा री तीन गामा मैं सगाई कराई। सगाई करनै सैठ सैहर मैं आयौ। दीपता साहुकारा री दुकाना जायनै कह्यौ— हजार-हजार रुपइया दौ तो तीन बेटा नैं परणाय देवू पछै प्रदेश जायनै थारा ब्याज सहित दे घालसू। जद तीनू ई सेठा नैं दया आई, सो हजार-हजार रुपइया दीया। जद सेठ तीनू ई बेटा रै गैहणा घाल विहाव कर दीयौ। वहुआ घरै आई। एक धनौ चौथौ बेटौ कुवारौ।

अबै नव जीवा नैं धान खावा नैं चाहीजै। जद तीन बेटां नैं प्रदेश मेल्या। धना नैं भणवा मेल्यौ। जब औ पारसी आदि भण परपक हुऔ। जद धनौ बोल्यौ— बापजी ! आप पुक्ता हुआ। अवै गामडीयै जाणी आवै नहीं, सो दोय सै रुपइया दौ तो हू दुकान माडू। जद तीनू वहुआ री थोडौ-थोडौ गैंहणौ लेनै दोय सै रुपइया करनै दुकान माडी। घर रौ काम चलावै।

उण सैहर में एक साहुकार घणौ धनवान, जिणरै वेटौ नहीं। सेठाणी मर

गई, पोतै बूढौ हुऔ। विचारयौ, म्हारौ धन-माल न्यातीला खाय जासी तो काई करला करणी ? न्यातीला रै पांनै न पडै जिसौ करणौ। इसी विचारनै खाती कारीगर नैं बोलायौ अनैं कह्यौ— ईस ऊपळा पागा पोला कर ढेबडी वेमालम पडै जिसी करनै ल्याव। जद खाती इसौ ढोलीयौ करनै सूप दीयौ। जद हीरा-पना, माणक-मोती सर्व जवेहर ढोल्या मैं घाल ढीवड्या बीड ढोल्या नैं वणाय ऊपर सेठ सूवै।

एक दिवस मैं सेठ मादौ पड्यौ, जद न्यातीला नैं कह्यौ— औ ढोल्यौ म्हा सागै दीजौ, इण ढोल्या मैं बाळजौ। इम भळावण दे सेठ आऊखौ पूरौ कर गयौ। न्यातीला ढोल्या सहित बाळवा ले गया। उठै ढोल्या सहित चेह मैं बाळवा लाग्या।

जद लोक बोल्या— इसा सेठ नैं थे ढोल्या में बाळौ, लोक निदवा लागा।

जब कह्यौ— म्हानैं तो सेठजी कह्यौ कै म्हनैं ढोल्या मैं नहीं बाळ्यौ तो म्हारा दावागीर रहोला, जिणसूं बाळां छां।

जद लोक बोल्या— मसाण मैं तो ले आया, अबै भंग्या रै काम आसी, इम कहीनै ढोल्यौ राख सेठ नैं दाग देनैं आप आपरै घरै गया।

भगी ढोल्यौ लेनै बाजार मैं बेचवा आया, जद धना री दुकांन आया। धनैं कह्यौ— रे ढोलीया रौ काई लो ?

जद भगी बोल्या— पाच रुपइया।

जद इण च्यार रुपइया देनैं ढोल्यौ मोल लीयौ। लोक भेळा होयनै धना नैं निंदवा लागा— अरे दळिद्री, महाजन होयनै मूआं रौ ढोलीयौ मसांण मांहिलौ लीयौ।

जब धनौ बोल्यौ— अरे इता लोक मसांण मैं गया ज्यूं ढोल्यौ ई मसाण मैं गयौ।

जद लोक बोल्या— लोका तो स्नान कीयौ तिणसू शुद्ध हुआ।

जब औ बोल्यौ— हू ढोलीया नैं ई स्नान कराय देसूं जद शुद्ध हुय जासी, म्हैं तो निर्धन छां भाई, सो लखपति रै ढोलीयै पोढसां, आ ऐश करसा।

जद लोका जायनै धना रा बाप नैं कह्यौ— थारौ बेटौ इसौ अन्याव कीयौ। डोकरौ आयनै बेटा नैं घणौई कह्यौ— जद बेटै पाछौ लोकां नैं जाब दीयौ, ज्यूं बाप नैं जाब देनै, ढोल्या नैं स्नान करायनै बाप-बेटौ ऊचायनै दुकान मैं जायनै न्हाख्यौ, सो ढेबड़ी अळगी होय गई अनैं हीरा-पन्ना, माणक-मोती, जवैर रौ ढिगलौ होय गयौ। जद किंमाड़ तो ढक दीया अनैं बाप बेटौ दोई राजी हुआ। रात्रि ना समा रै विषै धीरे-धीरे सर्व जुहार घरै ले गया।

एक हीरौ वटायौ, सो मोकळा दांम आया। चदगी वापरी। सेठ लोका नैं कहै— बेटा प्रदेश गया, सो धन घाल्यौ। जे मागतोडा मागै म्हानैं दौ जद सर्व व्याज

सहीत चुकाय दीया। तीनू ई वहुआ नैं बोलाय लीधी, तीनू नैं सोना रा जडाव रा गैंहणा पहिरायनै पीळी कर दीधी। भोजाया धना रा गुण गावै, लालजी-लालजी करती धापै नहीं, धना नैं मोटै ठिकाणै परणायौ।

धनौ बोल्यौ— बापजी ! अबै तीनू ई भाया नैं बोलायलौ। जद समाचार मेल्या, आपारै धन मोकळौ, सो समाचार वाचता पाण वेगा आईजौ।

या दोय-दोय सै रुपइया कमाया, सो लेनै आवता हा। सैहर कोसेक रह्यौ नैं रात्रि पडी, सो चोर मिल्या सो धन नैं कपडा सर्व खोस वस्त्ररहित करनै चोर गया। यां एक मानवी नैं कह्यौ— सो फलाणौ फलाणौ म्हारौ बाप है, सो जायनै कहिजौ, थारा बेटा फ्लाणी जायगा बैठा छै, यू कह्यौ। जद धनौ तीनू इ भाया नैं गैंहणा कपडा पहिराय मोटै मंडाण सू घरै ले आया।

च्यारू ई भाई आछी तरै ससार ना सुख भोगवता। धना री आव-आदर घणौ। च्यारू वहुआ मा-बाप लालजी-लालजी करै। जद तीनूं ई भाई कुढै, देखौ ! आपांरौ हाल-हुकम नहीं, ए गैंहणा पहिराया जिका री तो खबर है, दूजी धन माया जिणरी आपानैं खबर नहीं तो अबै धना नैं मार न्हांखणौ, इसौ मनसोबौ तीनू जणा कीधौ।

एक दिन वडा भाई री वहू रा खोळा मैं धनौ आय बैठौ जद आ जूआ काढवा लागी, अनै बोली— लालजी खोळा मैं सूयनै नींद लेलौ। यूं कहिता भोजाई विचार्यौ— देखौ, या तो इसा गुण कीया, ए पापी सो इसा गुलाब रा फूल नैं मारवा री धारै, सो इणरै आसू आय गया, सो धना रै माथा ऊपर पड्या। जद इण साहमौ जोयौ, दिलगीरपणौ देखनै पूछ्यौ— आप तो म्हारै माता री ठौड़, आपरै किण बात रौ दु:ख, सो कहौ !

आ बोली— लालजी ! आपरा प्रताप सू म्हारै तो सर्व वात रा आणद लाग रह्या है।

जद इण हठ करनै पूछ्यौ, जद इण सर्व वात माडनै कही, आपरा ए भाई, आपनैं मारैला जिणसू म्हारा मन मैं दिलगीरी आई।

जद औ बोल्यौ— म्हनैं दस्त लागै है, सो पाणी रौ लोट्यौ भर ल्यावौ। जद· भर दीयौ।

औ पाणी रौ लोटौ लेनैं नीकळ्यौ पिण सुखमाल छोड़ अबै औ दोड्यौ जावै। पाणी तो पी गयौ अबै तृखा लागी। एक ठाम वैठौ, चालणी आवै नहीं। जद थोडौ विश्राम लीयौ। एक जाट हळ खडतौ जठै जायनै कह्यौ— तृखा लागी, सो पाणी पावौ।

जद जाट बोल्यौ– उवा तळाई दीसै, जायनै पी आव, हू तो हळ खड़ू।

जद औ बोल्यौ– हू हळ खड़ू छू, थू जायनै ल्यायदै, म्हारी आसग नहीं।

जद जाट हळ इणनैं सूप्यौ। पोतै पाणी लेवा चाल्यौ। हळ खडता हळ जमीं मैं अटक गयौ, घणोई खस्यौ पिण आघौ चालै नहीं। जाट नैं पाणी ल्यावतौ देख्यौ तो इण विचार्‌यौ, हळ खोटी कीयौ सो म्हनैं हेला करसी, इण भय सूं स्हामौ गयौ, पांणी धापनैं पीधौ, लोटौ भरनै अठा सू चाल्यौ।

लारै जाट, हळ अटक्यौ जाणी धकायनै बळधा नैं आघा चलाया जरै जमीं मासू मोहरा रौ चरु नीकळ्यौ, सो देखनै जाट धना नैं आयनै कह्यौ– भाईजी मोहरा रौ चरु थारा भाग रौ नीकळ्यौ, सो थे लौ।

जद धनो बोल्यौ– तूं ईज राख, हू कहू ज्यू कर, जिनेश्वर देव रौ धर्म आदरै, माल मोकळौ खाव, हळ-खेती छोड। इणनैं धर्म अदरायनै आघौ चाल्यौ।

जाट मोहरा लै घरे आय लोका रौ वोहरौ हुऔ, औ धर्म-ध्यान करै, सुखी हुय गयौ।

हिवै धनौ एक सैहर मैं आयौ, सो तळाव री पाळ सूतौ। उण समा रै विषै उण सैहर रौ राजा आउखौ पूरौ कर गयौ, सो हथणी सिणगारी। हथणी वरमाळा घालै, सो आपारौ धणी। जिणनैं ईज राजा री कुंवरी परणाय देवा। जद हथणी घूमती-घूमती सैहर बारै होय तळाव री पाळ ऊपर धना नैं बैठौ कर वरमाळा घाली। मोटै मडाणै सैहर मैं ल्याय पाट बैसाण, कुवरी परणायदी, अवल न्याय-नीत प्रवर्त्तावै देश-प्रदेश मैं शोभा प्रशसा फैली।

अबै धनौ राज करै, सो न्यारा म्हैल करावणा माड्या। अबै साहुकार लारै सोच करै, धनौ लाधौ नहीं सारै सोझ्यौ। एकदा समैं एतौ सोच मैं बैठा अनैं चोर आया। धन-माल सारौ ई ले गया। आगै हो जिसौ भिख्यारी हुय गयौ जद वहुआ रा गैंहणा वेचनै खाय गया। खावा नैं धान नहीं, सो दुखी घणा, पेट भरीजै नहीं। नवू ई जीव प्रदेश मजूरी करवा चाल्या।

गेला मैं लोक कबूतरां नैं दाणा न्हाखै, सो ए नवू ई जीव दाणा चुग नै राबडी पीवता चाल्या जावै। चालता चालता एक सैहर आयौ जठै मजूरी लागा, सो टकौ-टकौ देवै पिण पूरी पडै नहीं। देनगीया आगै सुण्यौ धनसिघजी राजा नवा म्हैल करावै, सो दोय-दोय टका देवै।

ए वात सुणनै नवू ई जीव धनसिघजी राजा रा सैहर मैं आया। अबै तीन बेटा, तीन बेटा री वहुआ, ए छइ महिला री मजूरी करवा लागा, भाटा ल्यावै। एक दिन बाप नैं मजूरी करवा ले आया।

जद कोटवाळ बोल्यौ— औ डोकरौ, इणसू कांम व्है नहीं, सो टकौ देसा। यू म्हैंझर करवा लागा।

राजा म्हैल देखवा आयौ। आपरा भाई-भोजाई बाप नैं राजा ओळखनै बोल्यौ— इण डोकरा रा दोय टका दो। डोकरा नैं कह्यौ— थू दु ख क्यू देखै ? म्हारै म्हैला री पोळीयौ बैठौ रहीजे। औ राजी होयनै म्हैलां गयौ।

अबै इणनैं सिनान सपाडौ कराय गैंहणा-वस्त्र पहिराय ढोल्यौ विछाय सीरख पथरणा सूप मनसा भोजन जीमावै। अबै औ डोकरौ महासुख मानै।

एक दिन राजा डोकरा नैं बोलायनै कह्यौ— थारी वहू में फोडा पड़ता व्हैला, सो वहू नैं बोलायलै। जद बोलाय लीधी। यां दोया नैं राजा एक म्हैल भळाय दीयौ। डोकरी नैं गैंहणा-कपड़ा पहिराय दीया, मनसा भोजन जीमै। सुख मानै। कोटवाळ नैं कह्यौ— या छही जीवा नैं महीना तांई रोजगार दीजे मती। डोकरी नैं बोलायनै राजा कह्यौ— थारै तीन वहुआ है कै च्यार है ?

जद डोकरी रोवती बोली— महाराज ! च्यार है पिण चोथी वहू सुखमाल है, इणनैं बारै काढां नहीं, माहे रसोई करनै वा तो जीमावै।

जद राजा कह्यौ— उणनैं बोलायलौ, सो म्हारै अठै रसोई करसी, जद सासू बोलावा गई।

जद आ बोली— हू तो राजा री रसोई करवा आवू नहीं, म्हारै शील राखणौ।

डोकरी जायनै राजा नैं समाचार कह्या।

राजा कह्यौ— ले आव थूं तो।

जद आ जबरी सू ले आई। इण सासू री कह्यौ न लोप्यौ, मरणौ धारनै आई। राजा पटराणी नैं कह्यौ— म्हे इण रा हाथ री रसोई जीमसा।

पटराणी इणनैं कह्यौ— थू हजूर रै वास्तै रसोई कर।

जद इण कीधी। राजा जीम्यौ, घणौ राजी हुऔ। पटराणी नैं कहै— आज धापनै जीम्या। इणनैं गैंहणा-कपडा था बरोबर पहिराय दौ।

जद राणी मन मैं चिमकी पिण राजा रौ हुकम लोपणी आवै नहीं। गैंहणा-कपडा इणनैं पहिरावा लागा। जद आ बोली— हू तो पहिरूं नहीं, म्हारै इसा गैंहणा रौ कांई काम ?

जद पटराणी इणनैं तो भली मनुष्य जाणी राजा नैं समाचार कहिवाया— महाराज ! उवा तो गैंहणा पहिरै नहीं।

जद राजा बोल्यौ— इत्ती थांमैं कला कोई नहीं, सो थारौ कह्यौ मांनैं नहीं, सो थे और कांम काई करसौ ?

जद राणी इणनैं कह्यौ-- थू म्हारौ कह्यौ करनै पहिरलै।

जद आ बोली-- महाराणीजी ! राजाजी रा तो परिणाम दुष्ट है अनैं आप इसी खोटी दलाली करौ ? हू तो राजा नैं मन कर वछू नहीं। पर पुरुष भाई-बाप समान है, मर पूरा देसू और कोई जोर नहीं।

जद राणी इणनैं सती जाणनै बोली-- बाई, थारै मरणौ आयौ पिण म्हारौ कह्यौ माननै पहिरलै। जद इण पहिर लीया। रांणी जायनै राजा नैं सर्व समाचार कह्या। राजा मन मैं घणौ राजी हुऔ। मन मैं जाण्यौ-- है तो सती तो अबै अतराय क्यांनैं राखू ?

राणी नैं कह्यौ-- पांणी रा चरु ऊन्हा करावौ। म्हैला मैं स्नान करसा, रसोई वाळी नैं थे कला करनै मेल दीजौ, सो म्हारै मौरा रै हाथ फेरसी।

रांणी आयनै इणनैं कह्यौ। जद आ बोली-- हू तो जीवू नहीं।

जद राणी बोली-- बाई ! जाणौ तो पडसी, हू वचन देनैं आई छू।

जद आ बोली-- महाराणीजी ! आपरौ हीयौ क्यू फूट्यौ है ? आपनैं भूडी काई सूझी है ?

जद राणी बोली-- थू जा, निश्चै वात होसी ज्यूं होसी, जब आ गई।

राजा बोल्यौ-- म्हारै मौरा रै हाथ फेर।

जद आ हाथ जोडनै बोली-- हू तो रसोईदार, म्हारा हाथ तो खरधरा, आप तौ राजा हो, सो बडा सुखमाल हो।

जद आ बोली-- हूं तो पर पुरुष सूं सघटौ करू नहीं। इण वात री खैंच कीधी है तो जीभ खंड नै मर जासू। इतरै राजा रा मौरा मैं लसण मसादिक देखी मन मैं विचार्‌यौ, म्हारै भरतार रै इसा ईज छै, जद इणरै विचारणा करता दिलगीरपणौ आयौ, आसू राजा रा मौरा ऊपर पड्या।

जद राजा इणनैं पूछ्यौ-- आसू क्यू आया ?

जद आ बोली-- यू ही आय गया।

जद राजा बोल्यौ-- साच बोल।

जद आ बोली-- मस, तिल, लसण म्हारै भरतार रै हा, जिसा आपरै है जिणसू आसू आया।

जद राजा बोल्यौ-- थारौ भरतार कठै छै ?

जब इण रोवती सारा समाचार कह्या।

जद राजा बोल्यौ-- थारौ भरतार तो हू छू, ढोल्यौ आदि सारा ई समाचार कह्या, राजा पूछ्यौ-- धन आपारै घणौ छो, सो कठै गयौ ?

जद आ बोली— आपरौ सोच करता था जितरै चोर आया, सारौ ई धन-माल ले गया। सर्व वात पाछली माडनै कही। राजा नैं भरतार जाण पगां पडी। राजा इणनैं घणौ सनमान दीयौ, ससार रा सुख भोगवै, पटराणी थापी। आगली पटराणी घणी कुढै पिण जोर लागै नहीं, दुख भोगवै। जद पटराणी राजा नैं कह्यौ— आगली पटराणी नैं राजी करौ तो थांसू बोलूं नहींतर बोलू नहीं।

जद राजा राणी नैं बोलायनै सर्व वात कही, आगली राणी भी राजी होय गई।

तीनू भाई, भोजाया, डोकरै-डोकरी आ वात सुणी धना री वहू नैं राजा घर मैं घाली। सारा नैं चिंता हुई। भेळा होयनै राजा कनैं आया। हाथ जोडनै अर्ज कीधी— महाराज ! आप इसा अन्याव करौ, सो म्हारा भाई री वहू नैं घर मैं घाली, म्हांनैं पाछी सूप दौ, रोजगार मन व्है तो द्यौ म्हांरौ मनुष्य द्यौ।

जद राजा सर्व वात सुणाय दीधी। भाई आय पगा पड्या। आपरा भाया नैं कह्यौ— थे म्हनैं मरावता इसी अजोगाई कीधी जिणसू थांनैं भेळा न राखू। दस-दस हजार रौ पटौ देनैं न्यारा न्यारा मेल दीया, म्हारी चाकरी मैं पाछा थे आईजौ मती।

कितायक काळ सू साधु पधारया। बेटा नैं राज थाप साधा कनैं दिख्या ले देवलोके गया।

(२५३)

दो वहिनां री कथा

दिली सरिखा सैहर मैं बातसाह, जिणरै च्यार साहजादा भणीया-गुणीया। मोटा हुआ, जद बातसाह कहिवायौ— थारौ विहाव करा।

जद या कहिवायौ— म्हे तो विवाह न करां, म्हे म्हारा मन सू बांण फेंका जिण हवेली जिण वन मैं बांण जायनै पडै जिणरी बेटी नैं परणीजसां।

जद बातसाह वडा लड़का नैं कह्यौ— बाण फेंक।

जद इण वांण फेंक्यौ, सो काजी रा घर मैं जाय पड्यौ।जद हलकारा हाथ जोडनै बातसाह नैं कह्यौ— काजी रै घरै बाण पड्यौ।

जद बातसाह बोल्यौ— काजी नैं बोलावौ।

जद बोलायौ, सो काजी आयौ। काजी हाथ जोडनै बोल्यौ— मोनैं याद क्यूं कीयौ ?

जद बातसाह बोल्यौ— थारै कुवारी लडकी है ?

जद काजी बोल्यौ— छै।

जद बातसाह कह्यौ– म्हारा वडा साहजादा नैं परणावौ।

जद काजी राजी होयनै मोटै मंडांणै आपरी किन्या परणाई। हिवै बादसाह दूजा साहजादा नैं बोलायनै कह्यौ– जद तिणहिज रीते इण ही बाण फेंक्यौ, जद उजीर रै घरै जाय पड्यौ, तिण रीते इण पिण मोटै मडाणै आपरी किन्या परणाई। तीजै साहजादै पिण बाण फेंक्यौ, सो पठाण रै घरै जाय पड्यौ, आगली रीते मोटै मडाणै परणाय दीधी।

हिवै चोथै साहजादा ऊपर बातसाह रौ मोह घणौ। बातसाह री पदवी देवा रौ मन पिण वडा बेटा थका जोर लागै नहीं। बातसाह उपाय कर रह्यौ छै। चोथै साहजादै नैं कह्यौ– बाण फेंक।

जद औ बांण फेंक्यौ, सो वाग मैं जाय पड्यौ। जद चोथौ साहजादौ अनैं हलकारा आयनै वाग नैं जोयौ पिण कांई लाधौ नहीं। जद पाछा वाग मासूं नीकळवा लागा। जद दोय विद्याधर की लडकी, सो माहोमा मोह घणौ, सो वडी बहिन आऊखौ पूरौ करनै देवगना हुई, छोटी बहिन वडी बहिन नैं झुरै, रोवै, विलापात करै। पिता परणावै पिण परणीजै नहीं।

जद वडी बहिन देवी हुई ते आई। छोटी बहिन, वडी बहिन रा पग पकड लीया, हू तो थारै सागै रहिसूं, जद आ ले चाली, इणनैं कह्यौ– तू तो बाई वाग में बैस जा हू थारी सार-सभाळ करसू। इम इणनैं धीरप उपजाई।

साहजादा नैं पाछौ जातौ देख्यौ जद आ वडी बहिन बोली– थारी स्त्री तो अठै छै, तू क्यू जावै ? जद इण बोली सुण पाछौ वाग नैं चाकरां कनैं जोवायौ पिण देवी छोटी बहिन नैं अदृष्टि कीधी तिणसू देखी नहीं।

जद साहजादौ बोल्यौ– कोई प्रगट हुऔ ।

जद वडी बहिन विचार्यौ अबै इणनैं परणाय देणी, म्हारै लफरौ कुण राखै? जद आ प्रगट होयनै बहिन नैं समझायनै कह्यौ– इणनैं परणीज जावौ।

जद छोटी बहिन बोली– मोनैं परणावै पिण हू याद करूं जद आय जायजै।

जद आ बोली– ठीक।

वळै छोटी बहिन पूछ्यौ– थारौ घणौ रेहवास कठै है ?

जद आ बोली– फलाणी दिश में साठ कोस री ऊजाड है जठै एक मदर है, जिण कनैं वावडी छै जठै म्हारौ रहिवास छै। जद छोटी बहिन बोली– म्हारौ मन लागै जितरै हू सासरै रहिसू पछै था कनैं आय जासू।

इण रीते वात पकी कर मोटै मडाण सू परणाय मोकळौ धन दे आपरै ठिकाणे गई। छोटी बहिन नैं साहजादौ लेनै महिला आयौ, ससार रा सुख भोगवै। कितोयक काळ वरतीत हुऔ, तीनू भाया एकौ करनै मनसोबौ कीयौ, बातसाह रौ राग इण छोटा भाई ऊपर घणौ, सो काई उपाय करनै राग उतारणौ।

जद वडौ भाई बोल्यौ– बातसाह नैं वारी-वारी जीमावौ, इणरै जंगळ री स्त्री सो काई जीमाय जाणै, जिणसू राग उतर जासी।

जद जायनै बातसाह नैं अर्य कीधी– म्हारै आप वारे-वारे अरोगवा पधारौ। जद बातसाह अर्य मान लीधी। तीनूं ई बेटा रै वारे-वारे जीम्यौ। बातसाह राजी हुऔ। वहुआ वडी अक्लवान, वडी भक्ति कीधी।

चौथा भाई री वारौ आयौ, अबै औ दुचतौ बैठौ। जद स्त्री बोली– दुचता क्यू ? जद इण सर्ब वात माडनै कही। जद आ बोली– बातसाह नैं कहौ जीमण रै वास्तै वाग मैं पधारै।

पछै आ वाग मैं जाय वडी बहिन नैं बोलाई याद कीधी। जद ते देवी आयनै कह्यौ– मोनैं क्यू बोलाई ?

जद इण सर्ब वात माडनै कही। जद देवी बोली– ठीक छै।

वडी बहिन वाग नैं हरीयौ कीधौ, रमणीक कीधौ। सुगध वासना फैलाई। मलियाचल सरिखा वायरा वाज रैया है। विविध प्रकार ना भोजन पकवान त्यार वडी बहिन कीधा, सारा सैहर नैं जीमायो। बातसाह नैं बोलायनै जीमायो। बातसाह लोक आदि गुणग्राम करै, इसौ भोजन तो कदेई जीम्या नहीं।

हिवै तीनू ई भाया विचार्यौ, एतौ उपाय आपारौ लागै नहीं। जद दूजौ भाई बोल्यौ– हू कहू ज्यू करौ, च्यारू नैं सासू रै पगै लगावौ। तीन तो पगै लाग जाणै छै अनैं आ जगळ री छै, सो पगा लाग जांणै नहीं जिणसू इणरौ आफे ही आघ ऊत्तर जासी। इम कही वारे-वारे तीनू जण्या पगा लागी, इणरी वहू री वारी आई जद औ दुचतौ बैठौ। इणनैं स्त्री आगली रीते पूछा कीधी, जद इण माडनै सर्व हकीगत कही।

जद इण वडी बहिन नैं याद कीधी। भारी गैंहणा-वस्त्र सासू रै वास्तै ले पोते शृगार सझनै राते सासू रै पगा लागवा नीकळी, सो अगाड़ी से चदन हुय गयौ। शरीर री प्रभा करनै गैंहणा रा उद्योत करनै आगारी चादणौ होय गयौ। वातसाह री कचेडी जुडी जठै चादणौ हुवौ। जद वातसाह ऊचौ होय देखनै पूछ्यौ– आ कुण है ?

जद मूहढा आगला वोल्या– आपरै जगळ री वहू छै, पगा लागवा जाय छै।

वातसाह राजी हुवौ। आ जायनै सासू रै पगां लागी। भेंटणौ मूहढा आगै मेल्यौ, सासू देखनै राजी हुई, आ पाछी महिलां आई।

हिवै धणी-धण्याणी किणही वात ऊपर माहोमां बोल पड्या, जद आ रीसायनै वडी बहिन कनैं जाय बैठी। सारी वात कही, हू तो फेर सासरै जाऊ नहीं।

जद आ बोली— बाई भलाई बैठी रहै।

साहजादी लारै दुचतौ बादशाह नैं आयनै कह्यौ— हूं तो उणरै लारै जासू।

जद बातसाह घणा असवार मोकळौ माल देनैं वदा कीधा।

औ चाल्यौ, जठै एक सैहर मैं दूजौ सेठ, जिणरी हवेली मैं रहै। सेठ नैं कह्यौ— साठ कोस री उजाड मैं एक देहरौ वावड़ी है ?

जद सेठ कह्यौ— है। जिणरी ठीक पाडण नैं हलकारा कासीद दौडाया। एक कासीद आयनै कह्यौ— हू देख आयौ पिण जायगां विषम।

जद इण कासीद नैं लेनैं कुवर चाल्यौ। आयनैं वावड़ी रा खड मैं लुक रह्यौ। स्त्री कपडा उतार स्नान करवा नै वावडी मैं पैसनै स्नान कीयौ, बारै आयनै देखै तो कपडा नहीं।

जद आ बोली— म्हारा कपडा कुण ले गयौ ?

औ बोल्यौ— म्हैं लीया।

जद साथै आवा रौ वचन ले पाछा कपडा सूप्या। वडी बहिन नैं बोलायनै कह्यौ— मोमैं तो आ वीती।

जद देवी बोली— स्त्री तो सासरै ईज शोभै, तूं जा !

बहिनोई बोल्यौ— देव-दर्शण हुवा, सो कांई देसौ ?

जद वीणां दीधी, अनैं यूं कह्यौ— आप वीणा बजावसौ जद देव्या आयनै नाटक करसी।

स्त्री बोली— हू थारै सागै आऊ सो म्हारौ रूप देखी कोई मोनैं लेवा नैं अर्थे आपनैं मारसी अनैं मोनैं लेसी, जिणसू हू अगारी महिला मैं जाय बैठू।

जद औ बोल्यौ— ठीक छै।

हिवै आ तो पाधरी विद्या सू महिलां मैं गई। अबै औ चाल्यौ, सो दिन वध गयौ। रस्ता मैं थाक गयौ, भूख तृखा लागी। एक जोगी रा आसण मैं उजाळौ देखनै आयौ। जद जोगी बोल्यौ— अरे मूहर्ख ! म्हारा ध्यान मैं विघ्न पाड़्यौ, अठा सू परौ जा।

जद औ बोल्यौ— थोडी अग्नि ले जाऊ, जद अग्नि ले थोडी दूर जायनै रसोई करनै जीम्यौ। पांणी पीनै वीणा बजाई। जद देव्या आयनै नाटक कीयौ। जोगी देखनै अचर्य हुऔ। औ तो महागुणवांन है। वीणा मैं काइक करामात है। जोगी आयनै वीणा मागी।

जद औ बोल्यौ– तूं मोनैं काई देसी ?

जद जोगी बोल्यौ– तोनैं घोटौ देसू ?

जद औ बोल्यौ– घोटा रौ काई गुण ?

जद औ बोल्यौ– औ घोटौ जिण लारै मेलै तिणनैं अचेत करदै अनैं पाछौ घोटौ हाथ मैं आय जावै, फेर किणही रौ जोर लागै नहीं।

जद इण घोटौ लीयौ, वीणा देनैं घोटा नैं कह्यौ– जा जोगी नैं अचेत कर आवा अनैं वीणा ले आव।

जद औ घोटौ जोगी नैं अचेत कर वीणा लेने पाछौ हाथ मैं आय गयौ। जद औ वीणा, घोटौ दोनू लेने चाल्यौ। आगै जावता फेर थाकौ जद पाछली रीते दूजौ जोगी आयने वीणा मागी।

जद इण कह्यौ– मोनैं काई देसी ?

जद जोगी कह्यौ– मनसापूर्ण विद्या देसू।

जद इण विद्या तो लीधी अनैं वीणा दीधी। जद घोटा नैं पाछली रीते मेल्यौ, सो जोगी नैं अचेत करनै वीणा ले आयौ। इण रीते तीजा जोगी री उडन कटोलडी विद्या लीधी।

सेठ री दुकान आय लेणा-देणा चुकाय असवार लै आपरै नगर आयौ। आगै पिता काळ कर गयौ। वडौ भाई तखत बैठौ, औ महिला आय स्त्री सू मनसोबौ कर दूजे दिन वडा भाई नैं कह्यौ– तखत दै, पाट हू बैठसू।

इण मानी नहीं जद घोटा नैं त्यार कीयौ, सो वडौ भाई डरीयौ, इणनैं तखत सूप दीयौ। अबै औ बातसाह हुऔ। तीन भाया नैं न्यारौ-न्यारौ राज दे दीयौ। बातसाह री पदवी भोग रह्यौ है ए पाछल भव करणी रा प्रभाव सूं पुन्य बध्या तिणसू इण पुन्यवान ऊपर कोई रौ जोर लागै नहीं।

(२५४)

चुप तो स्वाद छै

एक निर्धन थळी रौ साहजी, मेवाड बेटी परणाई। कितोयक काळ सू बेटी रै सासरै गयौ, आगै बेटी लाफसी कीधी, माँहे आला खोपरा री मोटी चिटक्या न्हाखी नै राइतौ चिटक्या रौ कीयौ। लाफसी परूसी, राइतौ परूस्यौ। बाई रा देवर जेठ कनै बैठा थळी रा साहजी नैं जीमावै। लाफसी खावै नै राईतै रा सबडका लेती बोल्यौ– बेटा ! रावडीयौ दळ दूध मैं रांध्यौ पिण ए ढीठ किह ऋतु की ?

— बापजी ! चुप हो चुप।

— बेटा ! चुप तो बडी स्वाद छै।

पछै जीम चळू कर बाजार में आयौ तिहा दोय सीरी सीर बाट्यौ ते आपस मांहि यू ही थोथौ झगडौ करवा लागा। जद लोक बोल्या— औ थळी रौ साहजी ऊडा पाणी रौ पीवण वाळौ, इण कना सू न्याव करावौ।

जद दोनू जणा आप आपरी हकीगत कही, जद थळी रौ साहजी बोल्यौ— म्हैं तो जेहडी चुप दीठी तेहडौ तो कांई न दीठौ।

जद लोक बोल्या— भलौ न्याव कीयौ, दोई जणा चुप रहौ, बोलौ मती। यू ही थोथौ झगडौ क्यू करौ ? जद झगड़ौ मिट गयौ। इसौ भोळौ साहजी हुंतौ पिण पुन्य सूं पाधरी पडी।

(२५५)

अढाई छैल

एक भारी सैहर जिणमैं वाणीयां रौ बेटौ तिणरौ नाम अढाई छैल, वसै। तिणरा मात-पिता चल गया, एकलौ रह्यौ। घर हाट हवेली नहीं, कपडां री दलाली करै, छ पईसा नित्य पैदा करै, जिणमैं टकौ तो पोतै खाय, टका री रेवडी ले छोरा नैं वांट दै, टकै रौ नित्य कपडौ अनैं खरच मैं इण रीते दिन गमावै पिण किणही वात री खातर नहीं, प्रवाह नहीं, खुसी सूं रहै। मोटौ हुवौ। पछै दलाली करता पैदास वधी जद अबै दलाली मैं छह रूपइया पैदा करै। एक रुपइया रौ तो घोडौ भाडै लेवै १, एक रुपइया रा कपडा भाडै लेवै २, एक रुपइया रा गैंहणा भाडै लेवै ३, एक रुपइया रौ नित्य खाय ४, एक रुपइया री मिठाई छोरां नैं वांट दै ५, एक रुपइयौ खजीनै न्हाखै, इण रीते रहै।

आथण रौ आथण सिनान सपाडा कर कडा, कठी, मोती, अवर ही गैंहणा-कपड़ा पहिर घोडा ऊपर चढ गुदडी मैं आवै। वडा-वडा सेठ साहुकार ऊठ ऊठनै मुजरौ करै। लारै छोरा फिरै ज्यांनैं लोका पूछ्यौ— औ कुण है ?

जद छोरा बोल्या— अढाई छैल है। जद लोका जाण्यौ कोई जबर है।

एक दिन लखी विणजारौ उण सैहर मैं आयौ, सेठ साहुकारा नैं पूछ्यौ— कोई इसौ जबर है म्हारै वाळध रौ दाण-मापौ छोडावै जिणनैं निजराणौ भेंट करा।

जद लोक बोल्या— अबार तो इण सैहर में अढाई छैल जबर है।

जद लखी विणजारौ बोल्यौ— हवेली बताऔ।

जद लोक बोल्या— अबार गुदडी मैं आसी इतरै आप अठैई विराज जाओ। वाट जोवतां अढाई छैल री असवारी आई। लखी विणजारै ऊठ मुजरौ कीयौ, हाथ जोडनै बोल्यौ— सवा लाख रुपइया रौ काच निजर भेटणी कीधी, जद इण ले लीयौ।

जब अढाई छैल बोल्यौ— ठीक है। जद औ कागद लिख्यौ— अढाई छैल रौ राम-राम वाचजौ। म्हारौ लखी विणजारौ थारै देश आवै, सो दाण-मापौ लेण पावै नहीं। सवा लाख रौ काच पाछौ विणजारा नैं सूप्यौ अनैं पछिम विलायत रा राजा री राणी नैं सूप दीजौ।

विणजारौ काच लेनैं चाल्यौ। पछिम विलायत आयौ। राजा नैं कागद सूंप्यौ, राणी नैं काच सूप्यौ। जद राजा-राणी विणजारा नैं पूछ्यौ— अढाई छैल किसोक छै?

जद विणजारौ बोल्यौ— राजा कुवर विचै ई रूपवान, पुन्यवांन घणौ।

जब राजा-राणी विचार्‍यौ— कुवरी मोटी हुई, सो अढाई छैल नैं परणावणी। इम विचार विणजारा नैं कह्यौ— थे अढाई छैल नैं अठै ल्यावौ तो थांनैं मूंह माग्या दाम देवूं। विणजारा रौ दाण-मापौ छोड्यौ। विणजारै सीख मांगी, महाराज ! अबै हू म्हारै देश जावूं। जद राजा च्यार तो पाणीपथा घोडा, दोय हाथी, दोय म्याना, दोय पालख्या अढाई छैल रै वास्तै दीधी, ए निजराणौ कीजौ, उपाय करनै अठै मेल दीजौ।

लखी विणजारौ पाछौ आयौ। अढाई छैल नैं विलायत रै राजा दीया ते वस्तु दीधी। जद अढाई छैल लखी विणजारा नैं कह्यौ— आप कठै जावौ ?

जब औ बोल्यौ— हू पूर्व री विलायत जावू। जद सर्व वस्तु पछिम विलायत रै राजा अढाई छैल नैं दीधी ही जिकी चीजा लखी विणजारा नैं कह्यौ— पूर्व विलायत रै राजा नैं भेंटणौ सूपजौ।

लखी विणजारौ पूर्व विलायत मैं आय राजा नैं भेंटणौ सूप्यौ, औ भेंटणौ आपनैं अढाई छैल दीधौ। जद राजा समाचार पूछ्या— अढाई छैल किसोक छै ?

जब विणजारौ बोल्यौ— घणौ रूपवान छै।

जद राजा, राणी नैं कह्यौ। राणी बोली— आपारै कुवरी मोटी हुई, सो अढाई छैल नैं परणावणी। पाछली रीते हाथी, घोडा, पालख्या, म्याना आदि अढाई छैल नैं विणजारा रै साथै दीया। इमहिज उत्तर, इमहिज दक्षिण, च्यारू ई विलायत री किन्या अढाई छैल नैं परणावण री धारी।

लखी विणजारै कह्यौ— च्यारू ई किन्या नैं परणीजौ।

जव अढाई छैल विणजारा नैं आपरा सर्व समाचार कह्या। विणजारौ बोल्यौ— ऋद्ध तो म्हारै मोकळी छै।

लाखू ई पोठीया वेच दीया, हाथी-घोडा मोल लीया। जान वणाय नै चाल्यौ। च्यारू विलायत रा राजा री किन्या परण्यौ। मोकळौ दत्त दायचौ ले आपरै सैहर आयौ। बातसाह नैं निजराणौ कीयौ। जब बातसाह राजी हुवौ। इणरी कला चतुराई देख बातसाह रीझ्यौ, रहिवा नै जायगा वताय दीधी। च्यार स्त्रिया सहित ससार ना सुख भोगवै। सूर्य ऊगै अस्त हुवै तिणरी खबर पड़ै नहीं, इसा सुखा मैं झिल रह्यौ।

कितायेक काळ वीता पछै उण सैहर मैं साधु मुनिराज पधारया। अढाई छैल वदवा गयौ। साधा री वाणी सुण वैराग पाय च्यारू ई स्त्रिया सहित दिख्या ले करणी कर देवलोके गया।

(२५६)

केवन्ना री कथा

जबूद्वीप भरतक्षेत्रे सालि नांम गाम, तिहां वृद्ध स्त्री महादरिद्र। तेहनैं पुत्र धनपाल पैला को कार्य करी आजीविका करतौ रहै। एक दिवसे लोक ना बालक घरि-घरि खीर जीमता देखी धनपाल नैं खीर भोजन नीं ईछा थई। माता पास आवी खीर मागी। जब माता रै खीर नीपजावा रा सराजाम नहीं। तब दु ख धरती रोवा मडी ते हिवै समीप घर नीं च्यार अस्त्री आवी रोती अणुकपा ऊपनी। दूध, चावळ, घीरत, खाड ए च्यार वस्तु च्यार स्त्री ल्यावी दीधी। वृद्धा हर्ष पामी। तत्काल खीर नीपजावी, पुत्र नैं परोसी। पुत्र भोजन करवा बैठौ, माता किहा कार्य गई।

ते हिवै मास खमण नै पारणैं वेहरवा मुनिसर तिहा आव्यौ। ते हिवै ते बालक खीर खाड घृत वेहरवा थाळ लेई विचारै तीसरौ भाग विहरावु, दोय भाग राखू अथवा आधौ वेहराउ, आधौ हूं जीमू। इम विचारी करी वीच-वीच विलब करी ते सर्व थाळी नीं खीर परूसी ते जीमी रात्रि समये ते सरस भोजन थकी अजीर्ण विकार थयौ, शूल दोष मरण पामी।

राजगीर नामा नगरी, श्री श्रेणिक नाम राजा, चेलणा नाम देवी। अभय कुमार नाम मित्रीसर, धनावाह सेठ, भद्रा नाम स्त्री तेहनीं कुखे पुत्रपणैं ऊपनौ। महोछव करी तेहनौं नाम केवन्नौ दीधौ। अनुक्रमे वर्ष आठ नौं थयौ। ते हिवै सर्व कला शास्त्र पंडित थयौ। योवनवय आया, सागरदत्त सेठ नीं पुत्री जयश्री सेती व्याह कर्यौ।

हिवै ते केवन्नौ विषय रस रातौ ससार ना विषय रस सेवै। तब माता पितायै वैल-पुरुष नैं सग राख्यौ। तिहा थकी वेश्या सग गयौ। तेहना पेम भीनौ वेश्या नैं घरै रहै। जे धन चाहिए ते पिता-माता पिण पुत्र ना मन प्रसन्न राखवा भेजै, इम

बारा वर्ष लगि रह्यौ। माता-पिता तेह मरण पाम्या तो पिण जयश्री स्त्री ते खबर न कहावी। जे चावै ते द्रव्य पहुचावै। इम करता केतला दिने द्रव्य पहुचावता पछै द्रव्य क्षीण हुऔ, तिण आपणा आभूषण उतारी थाळ मैं धरी दासी हाथ पहुचाव्या।

तब वेश्या की मातायै विचार्यौ ए निर्धन थयौ तिणै ते आभूषण मध्ये हजार दीनार धरी थाळ पाछौ भेज्यौ। हिवै ते वृद्धा वेश्या आपणी पुत्री सूं कहै— ए धनहीन थयौ, इहा सू विदा कीजै।

तब पुत्री कहै— एहनौं द्रव्य बहुत पायौ तिणनैं विरह किम दीजीयै ?

तब वेश्या नीं माता पुत्री नौं स्नेह जाणी केवन्ना नैं कहाव्यौ— ए ठोर रज जमी रहै छै तुम हेटै ऊतरौ तो बुहार झाड स्याप कीजै।

ए हिवै केवन्नौ नीचे आवी दरवाजे बैठौ विचारै किवारै बुलावै किवारै जाऊ ? ते हिवै दासी आवी कहै— किम बैठौ है ? निर्धन जांणी तोनैं विदा दीधी, बैठौ क्या देखै, आपणै घरै जायौ।

तब केवन्नौ मनमांहि चितवै, वेश्या नौं नेह जूवा नौं धन, संध्या नौं वर्ण कबही थिर नहीं। एतला दिन लगै इण ठगणीयै ठग्यौ। इम पछतावतौ ऊठ्यौ, राह मैं लोगा नैं बूझतौ आव्यौ। आपणैं घर आय, घर नौं स्वरूप पड्यौ फूटौ देखी सोच करतौ, अंदर आव्यौ। आवतौ स्त्री पिछाण्यौ, आदर देई स्नेह नजरे देख्यौ। माता-पिता ना मरण नीं, धन नाश नीं वात सुणी, चिंतातुर थई लज्जा पामी बैठौ।

ते हिवै वेश्या नीं पुत्री स्नेह राग वसे केवन्ना पासि आवी स्त्री थई रही। हिवै जयश्री भरतार को दिल प्रसन्न करवा वेश्या ना घरि थी पाछौ आव्यौ थाळ आभूषण दीधा, हजार नाणा सेती पूर्ण करी आगै धर्यौ, अहो स्वामी— ए धन सेती व्यापार उद्यम करी सुखे रहो।

ए हिवै वचन स्त्री नौं हीयै धारी, मास एक तिहा रह्यौ। ए हिवै जयश्री नैं गर्भ रह्यौ तब सर्व धन स्त्री नैं देई आप एकेलौ परदेश चाल्यौ। दोऊ स्त्री सैहर बाहिरै परदेश चालता साथि मांहि सेज बछावणा धरि भरतार नैं पहुचावी घर आवी।

रात्रि समय केवन्नो सुख निद्रा सूतो हो ते हिवै ते नगरी माहि एक सेठ नीं स्त्री नौं पुत्र हीन समुद्र विचे आवतौ जिहाज डूबी, मरण पाम्यौ, ते समाचार वाची सेठ-स्त्री विचार्यौ ए धन पुत्र विना राजा रै घरै पहुचस्यै, इहा कोई उपाय करिवौ। तव पुत्र नीं च्यार वहुआ से कह्यौ— ए घर धन राखवा काजे हू और पुत्र ल्यावू तुम्हें तेह सेती सनेह धरवौ जिम भरतार थापै।

तव वहुआ कह्यौ— सासूजी ए अकार्य अम्ह सू किम हुवै ?

तब सासू कहै– कारण पडिया अकार्य करिवा नौं अटकाव नहीं।

इम कही च्यारे वहू साथि करी सर्ब नगर सोझी तिहा केवन्नौ सूतौ है तिहा आवी इकेलौ देखी तेहनी सेज नैं उपाडी च्यार स्त्रीयै घरे आण्यौ। निद्रा गई जाग्यौ। तब ते वृद्धा कहै– अहो पुत्र ! तू कुळ देवतायै मुझ कु दीयौ, ए धन स्त्री सुखे भोगवी, इम कही केवन्ना नौं चित्त प्रसन्न करी राख्यौ।

प्रभात थयौ सर्ब घर-घर पुत्र कुशले आवा नीं बधाई भेजी। हिवै ते केवन्नौ सर्ब चिंता मेटी तिहा रहै। ते हिवै च्यार स्त्री नैं ४ पुत्र थया। बारै वर्ष पूर्ण थया तब ते सेठ-स्त्री वहुआ सू कहै– हिवै एहनैं जिहासू ल्याया तिहा ईज धरीजीयै। आपणा धन राखवा नौं उपाय पुत्र थया।

तब वहुआ कहै– ए वात योग नहीं किम छेह दीजीयै।

तब सासू कहै– आपणौ भलौ वाछै तो एहनैं नीकाळौ। तब वहुआ सासू नैं भय केवन्ना नौं चद्रहास-मदिरा पाई, दूध जाणी तिण पीधी, तब छक्यौ, निद्रावस थयौ च्यारे स्त्री ए च्यार मोदक, च्यार रतन मिलाई उसी मैं धर्‌या। रात्रि समय जिस सेज सूतौ उपाडी ल्यावी थी तिस सेज माहि सू आई उपड्यौ, जिहां सूं ल्याई हुती तिहा ईज धरी, स्त्री च्यार आपणैं घरे आवी।

हिवै ते समय भावी जोग जे साथ मांहि केयवन्ना नैं २ प्रथम स्त्री ए पहुचाव्यौ हुतौ ते साथ पिण बारा वर्ष पूरे थए तिण दिन तिहा हिज आव्यौ। जे खबर जयश्री तथा वेश्या दोऊ स्त्री सुणी प्रभाते आवी जिहा धर्‌यौ हुतौ तिहा सूतौ हुतौ। तिहा सूतौ देख्यौ, जगायौ। कहै– अहो स्वामी ! तुम्हारौ शरीर राहा चल्या नौं काई स्वरूप न दीसै सु आकासे उडी आव्या दीसौ छौ।

इम सुणी केवन्नौ सूनैं मनि हुकार कही उठ्यौ। दोऊ स्त्री सेज वीछावणा मोदक लेई साथि थई, घर आव्यौ। मुख धोयवा बैठ्यौ।

तेहवै जयश्री नौं पुत्र वरस इग्यारा नौं थयौ छैले साल पढिवा गयौ हुतौ ते आव्यौ। भूखौ जाणी वेश्या स्त्रीयै कवन्ना नीं साथि आव्या मोदक ते मांहि सू एक मोदक दीयौ ते लेई पुत्र भणवा गयौ। विच मैं मोदक भाज्यौ ते माहि सू रत्न नीसर्‌यौ ते सेती पाटी घसतौ चल्यौ। ते हिवै ते रत्न हलवाईगर देख्यौ जलकात रत्न जाणी बालक कू मिठाई नौं लोभ देखावी रत्न लीयौ। हिवै ते रत्न नै वदळै मिष्टान लेई बालक पढवा गयौ। बाकी तीन रत्न केवन्ना नैं मोदक भखण करता नीसर्‌या ते देखी जयश्री कहै– स्वामी निर्भयकारिणी मोदक मांहि रत्न धरि द्रव्य ल्याव्या। प्रदेश सू आवता छोटी वस्तु को केई लखै नहीं, ए बुद्ध भली करी। तब केवन्नौ तेहनौं वचन सुणी हुकार कही रह्यौ, मनमाहि अवस्था विचारी।

ते हिवै राजा श्रेणिक नीं हाथी सीचाणौ नामै सिरोवर पाणी पीवा गयौ तिहा जीव तातूए हाथी लपेट्यौ सिरोवर मांहि ले जावा मांड्यौ ते खबर राजा सुणी सैहर मांहि पडहौ दिराव्यौ— जे कोई जलकात रत्न ल्यावे तिसकूं पुत्री अरू अर्द्धराज देऊ।

तिसै ते हलवाई इम साभळी जलक्रात रत्न लेई राजा कू दीयौ ते रत्न सरोवर जल मांहि धर्‌यौ। पाणी फाटौ तातूंयौ जीव भागी पाणी मांहि धर्‌यौ। हाथी आपर्णे थानक पाणी बारे नीकळ्यौ। राजा प्रसन्न थयौ। हलवाई सू बूझै तेरै रत्न किहां थी आव्यौ, साच कहे !

तब हलवाई कहै— केवन्ना सेठ का बेटा पासे लीनौ।

इम सुणी राजा कहै— जेहनीं रत्न जेहनैं पुत्री अर्द्धराज देस्यू। इम कही कछुक द्रव्य हलवाई कु देकर विदा कर्‌यौ। केवन्ना कु अर्द्धराज देई पुत्री परणाई। हिवै तीन स्त्री नीं स्वामी थयौ रहै।

एहवै एक दिवस मित्रीसर अभयकुमार सू आपणी हकीगत कहै— इस नगर मांहि बारै वर्ष लगै रह्यौ। च्यार स्त्री सू सुख-विलास कीया, पुत्र च्यार थया ते हिवै मुजनै रात्रि समयै निद्रावस करी नीकाळ्यौ ते मुझकु सालै छै। तब मित्रीसर कहै— फिकर म कर, सिपैदा करस्यू। इम कही अभयकुमार बुद्धि उपजावी।

एक देहरौ कराव्यौ। तेहनैं २ दरवाजा मांहि जक्ष नीं प्रतमा ते केवन्ना सरीषी विणावी थापी। तव सैहर मांहि पडहौ फिराव्यौ— जे कोई पुत्रवती स्त्री पुत्र नैं साथै ले ए यक्ष नीं पूजा करिसै तेहना पुत्र नैं कष्ट पीडा नहीं, और स्त्री पुत्र नैं महा पीडा छै।

एम सुणी सर्व स्त्री पुत्रा कू साथे लेई तिहा आवी जक्ष पूजै। अभयकुमार अरु केवन्नौ देहरा ऊपर रह्या कोतक देखै। ते हिवै वृद्धा सेठाणी च्यार वहुआ साथै करी च्यार पुत्र नैं आगल लेई देहल माही आवी। यक्ष नीं मूर्त्त देख च्यार स्त्री नैं प्रेम जाग्यौ। पुत्र बाबा कही ते मूर्त्त नैं गलि विलग्या।

ए स्वरूप देखी अभयकुमार विचार्‌यौ— ए स्त्री पुत्र केवन्ना ना है। इम निश्चै करी वृद्धा सेठाणी कु बुलाय कह्यौ— साच कहीयै ए पुत्र केहना ? तव ते वृद्धा भय पामी जिम हकीगत हुती ते सारी कही तव स्त्री, पुत्र, धन सर्व केवन्ना कु देवाया।

हिवै सात स्त्री सेती ससार ना सुख विलसता केवन्ना कू घणा वर्ष गया। तेहि तिस नगरी भगवतश्री महावीर स्वामी समोसर्‌या, परषदा वांदवा गई तिहा केवन्नौ पिण गयौ, वदना करी वैठौ। धर्म-उपदेश सुणी परषदा पाछी गई। तव केवन्नौ विनय करी प्रश्न करैं— अहो भगवान ! हू सुखी विचै दुखी थयौ ते किण कर्म कै उदै ?

तब भगवत कहै— पाछल भवे साधु नैं खीर, खाड घृत विलब करी विहराव्या ते पुन्य थकी सुख पाम्या, विलब करी तीन भाग कलप्या ते भाग कर्म थकी सकट सह्या।

इम सुणी प्रतिबोध पामी सात स्त्री नैं साथे साधुपणौ लेई शुद्ध पाली देवलोके गयौ। अनुक्रमे मोक्ष पहुचसी।

(२५७)

चालै सरड़-सरड़!

एक साहुकार जिणरी स्त्री रै पाच वर्ष सूं पुत्र हुऔ। जद स्त्री मन मैं विचार कीयौ पुत्र परणीजसी जद सगा सोही नूत्यार घणा आवसी सो प्रदेशा सू गीत मगावसू। जद धणी प्रदेश जावा लागौ। स्त्री धणी नैं कह्यौ— थे प्रदेश जावौ पिण एक गीत भारी लावजौ।

जद इण कह्यौ— ठीक है।

अबै औ प्रदेश चाल्यौ, प्रदेश मैं रह्यौ। मोकळौ धन-माल कमाय लीयौ। आपरा गाम रै गोर मैं आयौ नै गीत याद आयौ, म्हा कना सू स्त्री गीत मगायौ, सो म्हैं तो आण्यौ कोय नहीं तो अबै स्त्री नैं काई गीत जायनै कहू ?

इम मन मैं विचार करतां खेत रै विषै ऊंदरौ खाडौ खोदनै रेत बारणै काढै, अबै सेठ बुद्धि सूं गीत उपायौ खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर ! आपरै घरै आयौ।

स्त्री पूछ्यौ— गीत ल्याया ?

— हा ल्याया।

— तो मोनैं सुणावौ

जद इण कह्यौ— खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर!

स्त्री सुणनैं राजी हुई। पाछली रात्रि रा घटी पीसै जद आ गीत गावै— खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर !

दूजी वार फेर प्रदेश गयौ इण रीते गीत मंगायौ। फेर गाम रा गोर मैं आयनै विचारयौ, सो गीत तो ल्यायौ नहीं। इम विचारता वाग रै विषै मनकी नैं जोवती देखी— चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर ! फेर स्त्री नैं आय सुणायौ। स्त्री इमहिज पाछली रात्रि रा गायौ।

अबै तीजी वार फेर प्रदेश गयौ। गाम रै गोर मैं फेर विचारणा कीधी, गीत

ल्यावणी। इण समै नोळीयौ जाती देख्यौ– चालै सरड सरड, चालै सरड सरड, चालै सरड सरड ! फेर स्त्री नैं गीत सुणायौ, पाछी रात्रि रा स्त्री गायौ।

चौथी बार फेर प्रदेश गयौ। गांम रै गोर मैं आयौ नै विचारयौ, सो गीत ल्यावणौ भूल गयौ। इण समै वादरा नैं ऊंचौ डाकतौ देख्यौ तो गीत जोड्यौ– डाकै अलग-फलग, डाकै अलग-फलग, डाकै अलग-फलंग ! स्त्री नैं सुणायौ।

एकदा समै चोरा विचारयौ, इण सेठ रै चोरी करवा चालौ। जद उठै आयनै सांतौ देवा लागा। जद साहुकार री स्त्री री नींद उड़ गई, सो वेगी घटी माडी। पेहलौ गीत उगेरयौ– खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर !

चोरा विचारणा कीधी आपै तो सातौ देवां पिण इणनैं खबर पड़ी। जद चोर ठभ्या। चोगवा लागा। जितरै दूजौ गीत उगेरयौ– चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर !

जब चोरा विचारयौ– इणनैं तो आपा जोवां ते खबर पडी, सो पाछा चालौ। जद इण तीजौ गीत उगेरयौ– चालै सरड़-सरड, चालै सरड-सरड, चालै सरड़-सरड !

चोरा जांण्यौ आपां चाला जिणरी खबर पडगी सो डाकौ परा। जद इण चोथौ गीत उगेरयौ– डाकै अलग-फलग, डाकै अलंग-फलग, डाकै अलग-फलग !

इणरै पुन सू पाधरी पडी। धन-माल काई गयौ नहीं। चोर रीता पाछा आपरै घरै आया।

(२५८)

तीडै ब्रांह्मण री कथा

एक ब्रांह्मण, तिणरौ नाम तीडौ। ते जोतषी वाजे। भण्यौ तो घणौ नहीं पिण पुन्य बाकी, सो मार्ग मैं जाता गधा देख्या, सैहर मैं आयौ। कुभारा रै गधा गम गया, जोया पिण लाधा नहीं। जद जोतषी कनैं आयनै कह्यौ– थारै जोतष सू म्हारा गधा बताऔ।

जद जोतषी वोल्यौ– म्हारा जोतष मैं तो पूर्व दिश मार्ग गधा जाय छै।

जद कुंमार ऊठ ऊपर चढ गधा नैं घेरया। गधा नैं लेनै सैहर मैं आया जोतषी नैं ४-५ रुपीयां रौ धन दीयौ।

पछै जोतषी एक ब्राह्मणी रै घरे रसोई कराई। मांहे आ रोट्या पोवै, वारै औ दातण करै, सो रोटी रा पडका गिणै। औ जीमवा वैठो, जद ब्राह्मणी च्यार रोट्या भाणा मैं परूसी, तीन रोटी चोर लीधी। जद इण जोतष काढ्यौ, राधण नैं

कह्यौ– म्हारा जोतष मैं तो सात रोटी पोई लीखी छे, अनैं तैं मोनैं च्यार परूसी, तीन चोर लीधी सो छोडू नहीं।

जद राधण बकवा लागी। लोक भेळा हुआ। जद जोतषी बोल्यौ– इणरौ घर देखौ। जद ब्राह्मण घर देखवा लागा, सो तीन रोटी गूदडां मैं छिपाई ते लाधी जद जोतषी री प्रससा घणी फैली।

राजा री रांणी री हार निद्रा दासी चोर लीयौ, अनेक उपाय कीया पिण हार लाधौ नहीं, जद लोक बोल्या– जोतषी नैं पूछौ। जद राते राणी जोतषी नैं महिला मैं बोलाव्यौ, कहै– हार बताऔ।

जद जोतषी बोल्यौ– प्रभाते चोर बतावसू।

जद रांणी बोली– अठैई सूय रहौ।

जद औ सूतौ पिण चिता सूं नींद आवै नहीं। जद औ हेला पाडै, उतावळा-उतावळा शब्द करै आव निद्रा, आव निद्रा ! इम करै। जद ते निद्रा दासी शब्द सुणीयौ। मन मैं जाण्यौ जोतषी मोनैं जाण लीधी, डरपी, धूजवा लागी, प्रभाते म्हारौ नाम बतावसी, तो मोनैं राजा कुमौत मरावसी। इम चितव निद्रा दासी जोतषी नैं छांनैं हार सूंप गई। जोतषी नैं कह्यौ– महाराज ! राणी कनैं म्हारौ नांम बतावजौ मती। सौ रुपइया सूंक रा दीया।

हिवै प्रभात हुवौ। रांणी जोतषी नैं कह्यौ– हार ल्यावौ कै चोर बताऔ ?

जद जोतषी हार सूंप दीधौ, राणी राजी हुई।

जोतषी नैं कह्यौ– महाराज ! ए हार कुण चोर्‌यौ ?

जद औ बोल्यौ– महारांणीजी ! पूछौ मती, आपरी वस्तु आपरै हाथे आई।

राणी कह्यौ– ठीक।

ए वात राजा सुणी, मन मैं विचार्‌यौ सो इण जोतषी री कीमत करणी। जद राजा कचेडी मैं बैठौ तीडा नैं मूठी मैं घालनै जोतषी नैं बोलायनै कह्यौ– म्हारी मूठी मैं काई है ? थारा जोतष सू कहौ ?

जद इण विचार्‌यौ, अबै मौत आई। इम चितव नैं बोल्यौ–

(दूहौ)

मारग जातां गधा दीठा, पडकै रोटी पाई ।
निद्रा कहितां हारज पायौ, अबकै तीडा मौत आई ।।

इणरौ नांम तीडौ हो। राजा घणौ राजी हुऔ, गाम दीधौ। गाम लेनैं चल्यौ गयौ। मन मैं जाण्यौ रखे करेई झूठौ पडूलां तो आबरू जायला, इम पुन्य जबर थी ईहलोक मैं सुखी थयौ।

(२५९)

पाप-पुन्य रौ जोड़ौ

एक कोडीधज साहुकार। आछी तरै काम चलावै। एक दिन सतभोमीया म्हैल ऊपर बैठौ अतर की शीशी हाथ मासूं पडी, सो फूटी नहीं। सो पुन्य रौ छेहडौ आयौ, इसी मन मैं सेठ विचारी।

कितायक दिनां सू समुद्र मैं जिहाजा डूब गई, गुमासता धन लेनैं न्हास गया। माथे रिण रह्यौ, खावा नैं मिले नहीं, जद प्रदेश चाल्या। सेठ-सेठांणी बेटौ, बेटा री वहू, ए च्यारू ई जणा भूखां मरता तीजे दिन एक सैहर गया। कबूतरां नैं ज्वार न्हाखी, सो ए च्यारू ई जणा सेर जवार चुग नै भेळी कीधी। बाजार मैं ठीआ माडनै जवार भाटा सू कूटनै आटौ-पांणी हांडी मैं घालनै राबडी करवा चूला ऊपर चढाई। आधी सीझी जितरै भाटौ हांडी ऊपर पड्यौ, सो राबड़ी धूड मैं मिळगी। च्यारा रै ई धसका पड्या, मन मैं जांण्यौ अबै कांई करां ?

जद सेठ विचार्यौ, पाप रौ छेहडौ आयौ, इणसूं ई वधतौ पाप वळे काई? इम धारनै लोका नैं पूछ्यौ– इण सैहर रौ नांम काई ? जद नांम बतायौ। जद सेठ मन मैं जाण्यौ, अठै म्हारौ गुमास्तौ रहितौ हो। सौ रुपइया री हुडी लिखनै गुमास्ता नैं सूपी। गुमास्तै सौ रुपइया गिण दीधा। जद घृत, गेहू, खांड, बूरौ ले चूरमौ करनै जीम्या। च्यारा रै कपडा कराया। कपड़ा पहिरनै गुमास्ता रै घरै गया। गुमास्तौ आय पगा पड्यौ। गुमास्तै पूछ्या थका सेठ सर्व हकीगत सुणाई।

जद गुमास्तौ बोल्यौ– एतौ धन अनैं हू आपरौ छू।

इम कही कितायक दिन उठै राख साथै ले जाय पाछी दुकाना जमाय घरै आयौ। दुकाना मैं विणज-व्यापार करतां नफौ घणौ थयौ। पाछा लाखा रुपीया हुय गया। इम पुन्य-पाप री जोडी। ते पुन्य तो आज्ञा माहिली करणी सू अनैं पाप आज्ञा बारली करणी सू बंधै।

(२६०)

मोमल-महंदरै री कथा

एक भारी सैहर को बातसाह, तिणरा मूहढा आगै महदर पुवार रजपूत को पुत्र, मानीजै घणौ। सगळा इणरौ हुकम अगीकार करै, कोई लोपै नहीं। औ पिण वडौ अकल, बुद्धि, कला-चतुराई वाळौ, घणा काम रौ करइयौ। अवस्था छोटी पिण अकल घणी।

एक दिवस बातसाह अटवी मैं मोटी वाग हो तिहा सहल करवा फौजा लेनैं गयौ। असी कोस ऊपरै, सो वाग मैं डेरा दीया। तिण वाग थी वीस कोस एक मोटौ परबत, तिण ऊपरै महिलाय भारी देवी रौ इष्ट, तिहा देवी रौ मंदर करायौ। विद्याधर की पुत्री तिणरौ नाम मोमल दे तिका ऊठै परबत ऊपरै रहै।

माता-पिता सगाई करवा लागा जद आ बोली— म्हारी इच्छा सू भरतार वरसू अनैं इण परबत ऊपरै रहिसूं, देवी म्हारै इष्ट है।

इम आ मोमलदे कुंवरी महिलां मैं दीवौ करनै सूती, सो ते वाग रा महिला मैं बातसाह अनैं महदर अनैं महदर को साळौ सूता, सो मोमलदे रै महिला मैं दीवौ वीस कोस रौ दृष्टि पड्यौ। जद बातसाह महंदर नैं पूछ्यौ— उण परबत ऊपरै दीवड किणरी बळै है ?

जद महदरौ बोल्यौ— खुदाबध ! मोनैं तो खबर नहीं।

प्रभात हुवौ नै महंदर अनैं महदर को साळौ दोनू जणा घोड़ा खिलावा गया। आगै एक मोटौ तळाव आयौ, जठै दोनू जणा घोडा नैं ऊभा राख विश्राम लीधौ जितरै मोमलदे री वडारण्या तळाव पांणी भरवा आई, सो महदर पुवार नैं पुन्यवान, महारूप रौ निध्यांन देखनै दास्यां साळा नैं पूछ्यौ— ए पुरुष कुण है ?

जद साळौ बोल्यौ— महदर पुवार बादसाह रा मूहढा आगै मुख्य है, घोडा खिलावा रै वास्तै अठै आया है।

इम सुण दास्या बोली— ठीक।

पाणी भरनै पाछी गई, सो जायनै मोमलदे कुवरी नैं कह्यौ— बाईजी सा! आज म्हे पाणी भरवा गई ही, एक पुरुष महा पुन्यवान, रूप री निधांन, घोडौ फेरवा आयौ हो, सो म्हे देखनै त्यारै साथै एक मानवी हो तिणनैं पूछ्यौ— ए कुण ? जद तिण कह्यौ— एतौ बातसाह रा मानीजै, नाम महंदर पुवार है। इम सगळी हकीगत सुणाई।

कुवरी सुणनै राजी हुई। इण विचारयौ, आगै म्हारै माता-पिता निमतीया नैं पूछ्यौ जद निमतीयौ कह्यौ हुतौ, इण कुवरी रौ वर महदर पुवार हुसी। जद हीज म्हैं पण लीधौ हो, सो मन मैं विचारता-विचारतां आज समाचार सुण्या। म्हैं पण लीयौ हो तेतौ आय मिल्यौ पिण जोग मिल्यां हुवै। इम विचार वडारण्या नैं कह्यौ— थे तळाव री पाळ जाय बेसौ, उवै घोड़ा खिलावा आवै जद थे बोलाय ल्यावजौ। सर्व समाचार सुणाय हाथ जोडनै कहिजौ सो म्हारी बाईजी साहिब आपनैं बुलावै है, सो कृपा करनै पधारौ। आपरी घणी चावना है, मन मैं मोटी आसा है, सो आप पधारौ आसा सफळ करौ। इम सीखायनै दास्या नैं मेली।

जद दास्या तळाव री पाळ आय बैठी। थोडी वार हुई अनैं महंदर पुवार अनैं इणरौ साळौ घोडा खिलावा नैं आया, जद दास्या ऊभी हुई। विनय नरमाई सहित जिम कुवरी सीखाई हुती तिम या अरज कीधी।

जद महदर बोल्यौ– हू तो परणीजूं नहीं।

जद साळौ बोल्यौ– टीका री वेळा आप लिलाड पाछौ क्यू करो, मोमलदे आपनैं परणीजै जद चाहीजै ई कांई अनैं ए बारबार अरज करै छै, आप बातसाह सू छांने पधारौ अनैं मोमलदे नैं परणौ। इण इतरौ कह्यौ तो पिण इणरौ मन हुवौ देख्यौ नहीं। जद साळौ वळे बोल्यौ– आप पधारने देखौ तो सरी, एक बार पधारौ जो आपरै मन मानैं तो परणजो।

जद इण मन माडा बात मानने हुकारौ भर्‍यौ। दास्या साथै जावा नैं त्यार हुवौ। आगै जाता परबत ऊपर चढता पहिली नाहरां की चौकी लागै, सो वडारण्या बोली– महाराज ! अठै पहिली चौकी नाहरां की है, सो भख न्हाखौ। जद इण भख न्हांख्यौ। आगै जातां वडारण्या बोली– महाराज ! अठै दूजी चौकी सर्प की लागै है, सो यानैं भख दो। जद इण दूध मिश्री रा बाटका भर-भर सर्प रा मूहढा आगै मेल्या। आगै जातां दास्या बोली– महाराज ! अठै तीजी चौकी कुत्ता री लागै है, सो भख न्हाखौ। जद इण रोट्या करायने न्हाखी।

पछै आगै चाल्या, सो महिला मैं आगणौ काच रौ, मोती-माणक हीरा-पन्ना जड्या थका। हींडोळ खाट ऊपर किन्या बैठी। दास्यां अगाडी जायनै कह्यौ– बाईजी सा ! महदर पुवारजी पधार्‍या छै। इम सुणनै आ वेग सूं खाट हींडोळ सू ऊठ साहमी आय पगा पडी। निमतीया रा कहिण सू पण लीयौ हुंतौ तेहना सर्व समाचार माडनै सुणाया। हींडोळ खाट ऊपर दोनू जणा बैठा। कुंवरी हाथ जोडनै बोली– घणा दिना री आसा हुती, सो आज सफळ हुई। आज धिन दिहाडो, सो आप महिला पधार्‍या, म्हारी आसा सफळ कीजै, पाणीग्रहण कीजै।

जद औ पिण रूप देखनै मोहीज गयौ। कुंवरी बोली– पाणी ग्रहण करौ, जद महिलां मैं गघरव विवाह कीधौ, परणनै ऊतर्‍या। हींडोळ खाट बैठा माहोमांहि हरख री वाता करवा लागा।

हिवै महदर बोल्यौ– हिवै तो थारै-म्हारै मिलाप बातसाह रा हुकम सू हुसी कै हू रहूं तो सैहर मैं चालो।

जद बोली– सैहर मैं तो हू आवू नहीं अंतराय तूटसी जद मिलाप हुसी, एक रात्रि रही।

इम कही नै घोडा ऊपर बैस साळौ बहिनोई अठा थी चाल्या, सो बातसाह बाग में हो अर्नें अै पिण दोनूं जणा बातसाह कर्नें आय बैठा। तीजै दिन बातसाह बाग सू कूच कीधा सो सैहर मैं आया।

एक दिन महदरे मन मैं विचार कीधौ म्हारै माता तो आधी पिण म्हारै दोय स्त्री तेहनैं दु:ख घणी देवै अनैं जो मोमलदे नैं ले आवू तो उणनैं ई दु ख देवैला तो उणनैं अठै तो न ल्यावणी, ऊठैई सुख सू बैठी है पिण मन मैं तो मोमलदे वसी रहै, एक पलक पिण भूलै नहीं तिणसू ओ रीझ रह्यौ। उण मोमलदे री रूप घणौ, पुण्य चढता, अकलवान समझवान घणी सो तिणसू महदरो राजी अनैं या दोय स्त्रिया सू घणौ स्नेह नहीं, रुचभाव नहीं, मोमलदे मैं ध्यान रह्यौ।

एक दिन रैबारया रै ठिकांणै महंदरौ गयौ, कह्यौ— सौ कोस जायनै पाछौ आवै इसौ थारै जाखेड़ौ है ? जब एक रैबारी बोल्यौ— म्हारै इसौ जाखेड़ौ है। जद महंदर बोल्यौ— सझाइ करनै त्यार राखजौ।

दिन वधीयौ जब रैबारी सहित महदर चढ्यौ। आधी रात्रि रा मोमलदे रै महिला आया, रात्रि रहीनै प्रभात रा पाछा चढ्या, सो आपरै सैहर आया। इम नित्य संसार ना सुख भोगवै। दोनूं स्त्रियां सैहर मैं है त्यांनैं वतळावै नहीं। जब या विचारयौ सासू दु ख घणौ देवै, धणी वतळावै नहीं ए दोय दु:ख लागा।

एक दिन सासू करड़ा काठा कहिवा लागी, जब ए दोई जण्या रोवै। जद सासू बोली— ए थे रोवौ क्यूं, म्हारौ तो दु ख पिण धणी रौ तो सुख है।

जब ए बोली— बारै वर्ष हुआ, म्हारी आडी सू तो आपरौ बेटौ कठै जाय छै, म्हांनैं तो खबर नहीं।

महदर री मा आधी, सो रैबारया रै डेरै आयनै पूछ्यौ— म्हारौ बेटौ महदर किण रैबारी रै घरै जावै ?

जब लाग वाळौ कह्यौ— फलाणा रैबारी रै घरै जावै छै। जब महदर री मा उण रैबारी रै घरै गई। इणनैं त्रास देईनै साच बोलायौ, इण जाखडै चढनै म्हे महिला जावा। जब महदर री मा च्यार ताकला मंगाय च्यारू ई जाखेडा रा पग मैं घाल दीया, जब जाखेडौ पड्यौ पग मंडै नहीं।

महदर री मा घरै आयनै बोली— अबै थानैं सुख कर देसू।

अबै महदर आथण रा रैबारी रै घरै आयौ। जाखेडै नैं पड्यौ देख्यौ। पग संभाळै तो खीला देख्या, जब खीला कढाय मलम लगाय रैबारी नैं समाचार पूछ्या, जब इण सारा समाचार कह्या।

उठै मोमलदे वाट जोवै जितरै मोमलदे री वाहिली मरदी सिर पाव करनै आई। वाहिली बोली– बाई थारौ भरतार रूपवंत घणौ सुण्यौ, सो हूं देखवा आई छू। जब आ बोली– आधी रात्रि रा आसी जितरै तू बैठी रहै। दोनू ई जण्यां वाता करै पिण महदर आयौ नहीं। जब मोमलदे बोली– बाई, हाल ताई आया नहीं जितरै आपै ढोलीया ऊपर दोनू ई जण्या सोय रहौ। जाखेडै नैं जैकावसी जद आपांनैं ठीक पड जासी।

दोनू ई ढोल्या ऊपर सूती, सो नींद आय गई। अबै जाखेडै ऊपर चढ रात्रि पौहर पाछली रही जद महंदर, मोमलदे रा महिला मैं आयौ। आगै देखै तो पुरुष सघाते मोमलदे नैं सूती देखी जब रीस मैं आय कटारी काढनै मारवा लागौ। फेर विचार्‌यौ, स्त्री री हित्य न लेणी। इम विचारनै कटारी रै कागद लिख कटारी मैं घालनै कटारी भींत में खभोय पाछौ जाखेड़ा ऊपर चढनै आपरै सैहर आयौ।

लारै मोमलदे जागी। भींत रै कटारी देखी जब कटारी मांहि सू कागद काढनै वाच्यौ, जिणमैं ए समाचार लिख्या, "तू पराया पुरुष सघाते सूती, सो इण महिलां आवा रा इण भव मैं तीन तलाक है।" ए समाचार वांच मन मैं धसकौ पड्यौ। वाहिली नैं सीख दीधी।

आ उण सैहर आई। बारै वाग मैं आय ऊतरी। महदर बातसाह नैं कह्यौ– अबै आपरै मन मैं आवै जिण-मूम मेलौ।

जब बातसाह महदर नैं मूम मेल्यौ। लारै मोमलदे सासू रै पगां लागवा आई। अबै तीनू ई वहुआ भेळी हुई। अढाई-अढाई मासा तीनू ई वहुआं नैं कस्तूरी दीधी। दोनू वहुआ रै नै सासू रै तो सवा-सवा मासौ रही अनैं मोमलदे वहू रै अढाई मासा रही।

जद सासू जाण्यौ आ जबर घणी। दोनूं वहुआ नैं सासू कह्यौ– इण आगै आपणौ जोर लागै नहीं, आ जीवती रहैला जितरै आपांनैं तो सुख नहीं तो अबै मोमलदे वहू नैं मराय न्हाखणी। इसौ विचार महदरा री दुपटौ हींगळू सूं रग नैं दासी नैं देई मोमलदे नैं मेल्यौ। दासी जायनै मोमलदे नैं सूप्यौ तिणनैं कह्यौ– महदर पुवार तो काम आया, औ लौ दुपट्टौ।

जद मोमलदे बोली– अग्नि सपाडौ करसूं। सेवगा नैं कही– गांव वारै चेह रचावौ। अबै म्हारै भरतार लारै सती हुसू। जद सेवगा चेह त्यार कीधी। मोमलदे चिता मांहे पैठी अग्नि सपाडौ कीधौ।

एतलै महंदरा नैं सुकन हुवा नहीं, सो औ पाछौ आयौ। गाम वारै चिता वळती देखनै महदरै पूछ्यौ– ए चिता केह्नी बळै छै ?

जद सेवग बोल्या— आपनैं काम आया सुणनै मोमलदे अग्नि सपाडौ कीधौ।

इम सुण महदरै विचार्यौ हू तौ पापी उणनैं इण रीते छोडी आतौ, असल सती ही म्हैं हकनाक मन खांच्यौ। म्हैं तो इसा दु ख दीधा पिण उवा तो म्हारै वास्तै अग्नि प्रवेश कीधौ। उण इसी प्रीत राखी तो अबे मोनैं पिण अग्नि प्रवेश करणौ, इम विचार घोड़ा सहित चिता मैं कूद पड्यौ। दोनू भेळा भस्म होय गया।

हिवै लारै माता अनैं दोनू वहुआ वात सुणनैं रोवै-पीटै, विलापात करै पिण काई गरज पलै नहीं, पोतै हाथे कमाया कांम घणी दु खणी हुई। दुखे-दुखे जमारौ पूरौ कीयौ।

इम आपरौ तो सुख वंछै अनैं आगला रौ बुरौ वछै तो बुरौ चितवे जिणरौ हुवौ। पुन्य बिना सुख मिलै नहीं।

(२६१)

लाली रै लेखै

एक रजपूत, सो धणी-धण्याणी दोई जणा। जिणरै लाली बेटी जिण ऊपर मा-बाप रौ मोह घणौ, सो मोटै ठिकांणै परणाई। मोकळा गैंहणा पहिरवा नै। पियर रौ ई गैंहणौ मोकळौ, सासरीया रौ ई मोकळौ गैंहणौ।

अबे एकदा प्रस्तावे लाली पियर मैं, असाता ऊठी। मोकळा वेद लगाया पिण साऊ हुई नहीं, आऊखौ पूरौ कर गई। जद माता-पिता रोवै, विलापात करवा लागा। दिन बारै नीकळ्या नै बारीयौ कीधौ तोहि मात-पिता सोच घणौ करै, सो एक ठग सैहर मैं फिरतौ हो तिण आ वात जाणी।

एक दिन लाली रौ बाप तो पर गांम गयौ। लारै स्त्री कनै ठग डाकोत रौ रूप कर पतडौ लेनै आयौ।

जद लाली री माता बोली— थे कठा सूं आया ?

जद ठग बोल्यौ— थारी बेटी लाली मोनैं मेल्यौ छै, मोनैं यू कह्यौ— म्हारी चिता करैला। और झूठा समाचार मोकळा डाकोत कह्या अनैं वळे कह्यौ— लाली आपरौ गैंहणौ मंगायौ छै।

जद माता राजी हुई, भली हुई सो बाई रा समाचार आया। जद सर्व गैंहणौ डाकोत नैं देनै कह्यौ— म्हारी लाली नैं सूप दीजै, फेर मगावै सो ले जाईजै। नित्य म्हारै कनै आयनै लाली रा समाचार कहीजै।

अबै डाकोत आपरै घरै आयौ। गैंहणा नैं जमी मैं गाड, इण रीते दूजै दिन आयनै कह्यौ– लाली बाई कपडा मगावै छै, इण रीते वासण मगावै, इम डबी-कूपळा सर्ब मगावै छै। जद इणनैं सर्ब दीधा।

अबै आ बोली– एक दिन लाली रा दर्शण तो करावा।

जद ठग बोल्यौ– लाली बाई कह्यौ म्हारौ बाप घरै आसी जद हू मात-पिता सू मिलसू। या बात कहे नैं ठग आपरै घरै आयौ।

रजपूत मूम कमायनै घरै आयौ जब स्त्री नैं राजी देखनै पूछ्यौ– थारै आज इसौ हर्ष है, सो इण रौ मुदौ काई ?

जद आ बोली– आपारै लाली रा समाचार राजी-खुशी रा आया छै।

जद औ बोल्यौ– कुण कह्या ?

आ बोली– डाकोतड़े कह्या।

जद रजपूत रै धसकौ पड्यौ। जाण्यौ डाकोत माल ले गयौ दीसै छै। स्त्री नैं पूछ्यौ लाली रै गैंहणा कठै छै ल्यावौ सासरै पूगाय आवा।

जब आ बोली– लाली लेखै लागौ।

जब औ बोल्यौ– कपडा।

आ बोली– लाली लेखै लागौ।

जब औ बोल्यौ– वासण ?

जब आ बोली– ऐ बी लाली लेखै। डबी-कूंपळा, सीरख-पथरणा ऐ बी लाली लेखै लागा।

जद रजपूत बोल्यौ– डाकोत रौ रूप करनै ठग आयौ दीसै छै। अबै रजपूत चिता करवा लागौ।

जद आ बोली– चिता करौ मती, डाकोत रै रूप में ठग आवतौ दीसै छै।

इम विचार रजपूत ठग आया पहिली लुक गयौ। थोडी-सी वार नैं ते ठग आयनै बोल्यौ– ए लाली री मा लाली रा समाचार सुण।

रजपूत ठग नैं जांण ओरडा मांहि सू नीकळ तरवार हाथ मैं लेनै आयौ। रजपूत नैं देखनै ठग भागौ। रजपूत विचार्यौ पाळौ तो पूगू नहीं, वर्स घणा। इम चितव मतग घोडी ऊपर चढ हाथ मैं तरवार ले ठग रै लारै भागौ।

आगै ठग, लारै राजपूत। ठग देख्यौ सो अबै तो घोडी चढ्यौ आय पूगसी। जद वडला ऊपर चढ गयौ। रजपूत घोडी नैं नीचै ऊभी राखनै औ बी वडला ऊपर चढ्यौ। ठग वडला री डाळी पकड धीरै-धीरै नीचै उतर घोडी ऊपर चढनै भागौ, सो आपरै गाम आयौ।

अबै औ रजपूत पग घींसतौ पाछौ आथण रा आपरै घरै आयौ। जद रजपूताणी बोली– घोडी कठै ?

जद रजपूत बोल्यौ– लाली लेखै।

रजपूताणी बोली– तरवार कठै ?

जद औ बोल्यौ– लाली लेखै।

इसा भोळा जीव, मोह रै वस समझ पड़ै नहीं।

(२६२)

अेक दिन रौ राज

दोय साहुकार रा कुवर राजा रा कुंवर सूं वाहेलौ कीयौ। भेळा रमै, खेलै। माहोमा अत्यत हेत। साहुकार रै कुवर राजा रा कुंवर नैं कह्यौ– कुवरजी ! अबार हेत राखौ हो पिण राज आसी जद भूल जासौ।

जद कुवर बोल्यौ– हू थांनैं कदेई भूलूं नहीं।

जद सेठ रा बेटा बोल्या– कुंवरजी सा, अबार आप कहौ छौ, पछै याद बी आवणा कठण है।

जद कुवर बोल्यौ– मागौ।

जद ए बोल्या– म्हा दोयां नैं एकीका दिन रौ राज। माग्यौ जद इण कागद लिख यां दोयां नैं सूप दीयौ।

कितोयक काळ व्यतीत हुऔ जद राजा आऊखौ पूरौ कीयौ, जद कुवर राज बैठौ। अछ्का राज करै।

एकदा प्रस्तावे दुकान मैं बही-पानड़ा संभाळता रुक्कौ हाथ आयौ। रुक्कौ हाथ मैं ले राजा कनैं गयौ। पोळीयै ऊभौ राख्यौ। पूछ्यौ– थे कुण हो ?

जद इण कह्यौ– कुंवरजी रो बाल मित्री छूं।

पोळीयै राजा नैं मालम कीधी। राजा कह्यौ– आवा दो।

औ राजा कनैं आय रुक्कौ वतायौ। राजा बोल्यौ– ठीक। ले आज रौ राज तोनैं भळायौ, राजा जनाना मैं जाय बैठौ।

साहुकार रौ कुंवर सिहासण पर आय बैठौ। सैहर मैं आण दुहाई आपरी फिराई। अबै इण नाई नैं बोलायनै कह्यौ– आगै तूं राजाजी रै हजामत करतौ ज्यू कर। जब नाई करवा लागौ, सवा पैहर खिजमत करता लागौ। स्नान, कपडा गैंहणा वस्त्र पहिर जीम्यौ, पछै सूता-सूतां चौथै पैहर जाग्यौ। साहुकारा नैं बोलाया। सर्ब

वस्तु री दूणी हासल कीयौ। किणहि कना सूं लाख रुपइया लीया। इम सर्ब रैत कना सू जथाजोग्य प्रमाणे रुपइया ले राज रा भडार मैं न्हाख्या। आपरै माथै मंडाया। अबै दिन वध्यौ नै सर्ब साहुकार आदि नैं शीख दीधी।

अबै औ जीमनै भागा घोटाय पीयनै भगतण्या कना सू नाच करायौ। पछै सूतौ, सो दिन ऊग्यौ पिण नींद उड़ी नहीं जब चाकरा धका देईनै बारै काढ्यौ।

बाजार मैं आयौ जद लोकां पकड़ रुपइया मांगै। कोई तो कहै म्हारा लाख रुपइया ल्याव, कोई कहै म्हारा पचास हजार ल्याव। घर मैं धन हो, सर्ब खोस लीयौ। हवेली, हाट, नोहरा जायगा सर्ब खोस लीधा। घणौ दुखी हुवौ। पूरी रोटी मिलणी दोहरी हुई। दु खे दु खे जन्म पूरौ कीधौ।

अबै दूजै मित्री बही-पानडा जोवतां रुक्कौ लाधौ। मन मैं राजी हुवौ। औ रुक्कौ लेनै चाल्यौ। आगै पोळीयौ ऊभौ राख पूछ्यौ— कुण हो ?

इण कह्यौ— हूं कुवरजी री बाल मित्री छूं।

जब पोळीयै जायनै कह्यौ— महाराज ! आपरौ बाल मित्री आवै छै।

जब राजा बोल्यौ— आवा दो।

औ आयनै राजा नैं मुजरौ करनै रुक्कौ मूहढा आगै मेल्यौ। राजा रुक्कौ वाचनै राजी हुवौ। विचार्‌यौ आगै आयौ सो तो भडार भर गयौ, अबै औ कांई करसी ? औ ले भाई आज रौ राज कर। राजा तो जनानै मैं जाय बैठौ।

अबै इण सैहर मैं आण-दुवाई वरताय साहुकारां नैं बोलाया। जब साहुकारा रै पहिली धसका पड़्या सो आगै आयौ सो तो म्हारा धन-माल ले भंडार मैं न्हांख्यौ, अबै औ कांई करसी पिण डरता धूजता धूजता आयनै ऊभा रह्या।

जब राजा बोल्यौ— थै डरौ क्यूं हो ?

जद साहुकार बोल्या— आगलै दूणी हासल लगायौ जिणसू म्हे तो धूजा छा।

जद राजा बोल्यौ— थै डरौ मती, आगै हासल हो जिणसू आधौ हासल कीया। गधै गाळ घलायनै सरहै रोप दीधी। गुन्हौ माफ कीयौ। साहुकारा नैं किणनैं पाच हजार, किणनैं दस हजार यू दीधा। जद लोक घणा राजी हुवा। घरै दस-वीस हजार रुपइया रौ धन पहुचाय दीधौ। रथ, म्याना, पालखी अवर अनेक वस्तु घरै चाहीजती, सो पुगाई। थोडो सो दिन रह्यौ जद राजा नैं राज भळाय दीयौ।

अबै आपरै घरै आवता लोक हाटा बैठा जिकै जुहार सा, जुहार सा ! करै। लोक गुणग्राम, धिन-धिन प्रससा कर रह्या। इम करता घरै आयौ सर्व सजन राजी हुआ।

(२६३)

खाती देखूं जीमतौ...

एक खाती साहुकार रै काम करै। उण खाती नैं ताजा माल जीमावै। सेर रै रोट ऊपर पाव घी, पाव गुळ। जद एक डूब खाती नैं ताजा माल जीमती देखनै विचार्यौ– खातीपणौ चोखौ, सो ए ताजा माल खावा नैं मिलै। डूबपणौ तो आछौ नहीं। घणां रा बाप-दादा रा नाम लेऊ जद लूखौ-सूखौ, ठडौ-ठेर्यौ मिलै पिण आज रा तो टुकडा माग ल्यावू। इम चितव आगै टुकडा मागवा गयौ।

दोफारा रै समै पाछौ फिरता देखै तो खाती जीमनै ऊठ्यौ, लकडा फाडवा लागौ। माथा रौ परसेवौ पगा ताई आवै। खाती नैं कूहाडा सू लकडा फाडतौ देखनै बोल्यौ–

(दूहौ)

खाती देखूं जीमतौ, सहीज खाती होऊं ।
लकडा देखूं फाड़तौ, डूब को डूब रहू ।।

(२६४)

दो-दो वातां ना हुवै

एक जाटणी, भूखा मरै, जिणरै लालीयौ बेटौ, सो दस मण जवार साटै लालीया नैं वेच दीयौ। जाटणी खेती कीधी, सो मोकळी जवार नीपजी।

अबै आ मगरा ऊपर चढनै हेलौ पाडे– अरे लालीया बेटा ! वेगौ आव रै, लालीया ! लालीया ! जवार मोकळी नीपजी। जद लोक बोल्या–

(दूहौ)

ऊंचा मगरा री जाटणी, नेह्डलौ निवार ।
दो-दो वाता ना हुवै, लालीयौ नै जवार ।।

जाटणी दुखणी हुई। बेटा नैं रोवै पिण कांई गरज सरै नहीं।

(२६५)

मूलदेव री कथा

जूआ नै विस्न लागौ पुरुष तेहनैं धर्म नास थाये। इहा मूलदेव नीं कथा लिखीयै छै–

इहा उजणीय नामा नगरीयै विचार धवल नामा राजा। तिहां रूप कला गुण-खाण देवदत्त नामा ब्राह्मण, सो पे धरती रहै।

ए हिवै पाडलीपुर नगर राजा नौं पुत्र मूलदेव नांम जूआ नैं व्यसने धन हानि करै। पिता जाण्यौ ए पुत्र गुणवान पिण जूआरी। तिहां सूं नीकळ्यौ उजयिणी नगरे गयौ। ओषध योगे बामचामन रूप करी देवदत्ता नांमे वेश्या नैं घर समीपे रह्यौ। मधुर स्वरे गावै। तेहनौ ज्ञान सुणी प्रसन्न थई देवदत्ता मूलदेव कुवज्जा दासी सूं तेडावै। मूलदेव अति आग्न हूवै, तिहां गयौ। वेणा वजावी राग आलापै। ते हिवै देवदत्ता मोहत थई कहै— आपणौ रूप प्रगट करि एहवी कला नौं जाण करूप न होय। ए हिवै मूलदेव सहज रूप प्रगट कर्‍यौ ते हिवै देवदत्ता वीणा वजावे, ते सुणी मूलदेव कहै— ए वीणा नैं बीच केश अटक्यौ है सु एहनौं सुर भग थायै। देवदत्तायै तिमहीज केस देख्यौ अचिरिज पांम्यौ, विचारै विद्याधर अथवा देवता नौं गधर्व इम जाणी स्नेह धरै।

मूलदेव वेश्या नी माता पुत्री सू कहै— ए निरधन मूलदेव को वेगो तजै अचल धनवत कु भज। तब देवदत्ता कहै— हू गुण रागणी, धन रागिणी नहीं। इम कही दासी भेजी परीक्षा करिवा अचल सो ऊख मगावै। दूसरी दासी भेजी, मूलदेव सो ऊख मगावै। अचल ऊख गाडी धरीजे जेते देखी वेश्या कहै— स्यूं हू हथिणी थई जे एहवी ऊख भेजी। मूलदेव ऊख नी गडरि करि बीलि, इलाइचि, निवात प्रमुख मिलाइ उत्तम वासणइं धरि भेजे। ते देखी द्वेष धरतौ वेश्या की माता कू एक सौ आठ दीनार देई कहै— जिस वेर मूलदेव आवै तब मूजकौ कहिज्यौ।

इम सुणी वेश्या नीं माता पुत्री सू कहै— अचलइ एक सौ आठ दीनार देई कहाव्यौ— हू कार्य जरूर नैं गयौ नहीं आवू।

इम सुणी देवदत्ता मूलदेव कूं तेड़ावै जे हिवै मूलदेव आवी सेजइवै। ते हिवै वेश्या नीं माता अचल सू ए सरूप कहावै। ते हिवै अचल आव्यौ, देवदत्ता आवती देखी मूलदेव कु सेज हैठइ छिपावै। अचल दुष्ट सेज ऊपरि बैठो। तिहां ईज सनांन उगटणी करै। तिहा सू चोटी पकडी मूलदेव कु निकाळै, कहै— जीवतौ वच्यौ फेर इहा आवि सि मा। इम मूलदेव लज्जा पाई।

उजयणी सू चल्यौ। वेन्ना तटइ जाता निर्घुण शर्मा नाम व्रांह्मण सखाइ मिल्यौ। राह तल ना भोजन समयइ व्रांह्मण जिमें मूलदेव कू कछु भी न दियै। इम तीन दिवसे अटवी उलघी। तिहा भूखे पीड्यौ। मूलदेव व्राह्मण कू वूझै— कोई नजीक गाम है ?

व्राह्मण कहै— दाहीणी तरफे निजीक गाम है।

—हू तो तिहा नहीं रहू आगै जास्यू। इम कही ब्रांह्मण चल्यौ।

मूलदेव ब्राह्मण के साथे अटवी लघी ए गुण विचारी ब्राह्मण को कहै— मेरो दोलति थाई तब तुंहै मुझसौं मिलज्यौ। इम विंदा थई।

मूलदेव इकेलौ बोटइ भिक्षा कू भमै ते हिवै किहाई उलद बाकळा मिल्या ते लेइ निवाणइ आवै ते हिवै मास खमण नैं पारणै विहरवा आवतौ साधु मिल्यौ। ते देखी मूलदेव वसेख भाव सू उडद साधु नैं दीया। तिह क्षेत्र देवता प्रसन्न थई कहै— वर मांग।

मूलदेव कहै— देवदत्ता वेश्या, हजार हाथी राज्य ए दीजीयै।

देवता सूं ए वर लेइ आगै चाल्यौ, वेना तट पुर नै समीपै तापसा नीं जमात रही तिहा रह्यौ। रात्रि निद्रा आवी, मुख प्रवेश करतौ चद्रमा देख्यौ। एक तापस नैं शिष्य भी एहीज सुपन देख्यौ। प्रभात समय गुरु कूं बूझ्यौ।

गुरु कहै— घी-गुळ सू रोटी मिलेगी।

तापस कू तेहिज मिल्या। मूलदेव प्रभात समय नगर माहि जई स्वप्न-पाठक कु प्रणाम करी सुपनै नौं फळ बूझ्यौ। तब ते कहै— आज थकी सातमैं दिवसे राजा होसै।

ए हिवै ते नगर नौं राजा मरण पांम्यौ। तेहनैं पुत्र नहीं। तब सर्ब लोक मिली घोड़ा कु मंत्र प्रयोगे भेज्यौ। ते फिरतौ सातमैं दिवसे मूलदेव कुं वेन्ना तट को राजा करै। तिहां हजार हाथी नौं राज्य पाई सुखै रहै।

हिवै मूलदेव उज्जणी ना राजा सू मीलाप करै। अनेक लख दीनार द्रव्य तिहा भेज इम प्रीत करै। देवदत्ता वेश्या मगावी, आई पट्टराणी करी मूलदेव राखी।

हिवै एक दिवस समुद्र नैं राह चलतौ अचल वेना तट आव्यौ, हासल चोरीयै बाध्यौ, श्री राजा श्रीपइ सेवक आण्यौ, राजायै पिछाण्यौ।

राजा कहै— तूं हमकू पिछाणै ?

अचल कहै— तुम्ह कू कुण नि पिछांणै।

तब अचल कु देवदत्ता कुं देखाई अचला जो देवदत्ता कहै— एह राजपुत्र जेह सो तूं धेष धरतौ। इम सुणी अचल अपराध खमावतौ राजा नैं पाय लागौ। मूलदेव राजा पइ बंधन दूरि करावि विदा कर्‌यौ। उजयनीये गयौ।

हिवै मूलदेव राजा थयौ सुणी ब्राह्मण जे साथ अटवी उलंघी ते आव्यौ। तेहनैं गाम देई राजी कर्‌यौ। इम मूलदेव राजा अंत समय धर्म आदरी देवलोके गयौ, अनुक्रमै मोक्ष जासी। इम जूआ थकी धन हांण जाणी त्यागीजे।

वररुचि नीं कथा

मद कहीये मदिरा, तेहनौं पान करे ते पुरुष नीं जस घटै, अपजस बधै। इहा वररुचि नीं कथा लिखीयइ—

पाडलीपुर नांमै नगर, नंद नांमै राजा। तेहनैं मित्रीसर सकडाल नाम। तेहना दोय पुत्र थुलिभद्र १, श्रीयक २। हिवै इक दिवस राज सभाय वररुचि नामा पंडित्त आव्यौ। राज नीं स्तुती एक सौ आठ काव्य नवा करी राजा कूं प्रसन्न कर्यौ, सर्ब सभा राजी थई।

सकडाल मित्रीसर जैन धर्म नीं प्रसंसा अन्य मति नीं न करहै, मित्रीसर नीं प्रससा कर्यां विना राजा दांन दे नहीं। इम वररुचि दान लहै तब सकडाल मित्रीसर नीं स्त्री लक्ष्मी देवी सू आशीर्वाद देई रांणी करि कहै— मित्रीसर मेरी प्रससा करै तो हू राजा नौं दान पावौ तुम्हे समझाय कहो तो मत्री मेरी प्रसंसा करै।

एहवी वाण सुणी लक्ष्मी देवी भोजन समय मत्री सू कहै— प्रदेशी ब्रांह्मण आवै, राजा सू दांन पावै एहमैं तुम्हारै स्यु धन जायै। इम स्त्री ना वचन सू राज सभाये ब्राह्मण नीं प्रससा करै। तब राजा एक सौ आठ दीनार ब्राह्मण कु दीना।

इम बहुत दिन थया, तब मिंत्री विचारै इम देतां राजा नौं भंडार घटसी, एहवौ खरच घटायौ भलौ, इम विचारी राजा सूं कहै— एह ब्राह्मण पुराण-काव्य कहै एह ना कर्यौ नहीं, मेरी पुत्री सात ही कु आवै है।

ए हिवै सात कन्या कनात अतर रही, ब्राह्मण ना कीया काव्य सुणी विद्या नैं परभावै राजा नैं कही ते हिवै राजा कोप चढ्यौ, ब्राह्मण को दरबार मैं आवणौ बद कर्यौ।

हिवै ब्राह्मण गगा नदी विचै संध्या समय एक सौ आठ दीनार नी थैली धरी आवै। प्रभात समय सिनान करवा जाय, गंगा नीं स्तवना करि ले आवै। लोकां सू कहै— मुझ कू गगा देवी दांन दीयै। इम लोक मांहि जस लहै।

ए हिवै सकडाल मित्री तेहनौं कपाट परगट करिवा रात्रि समये सेवक नैं मेजी दीनार नीं थैली मगावै। प्रभात समये राजा प्रमुख सर्ब लोक तिहा गया। ते हिवै ब्राह्मण गगा नीं स्तवना करै दीनार न पावै, इम मान हीन थई जावै।

सकडाल मंत्री दीनार थैली राजा प्रमुख लोक कु दिखाई ब्राह्मण कु दीयै। हिवै लजाय धरतौ एकंत नगर ना बालका कु पढावै।

हिवै सकडाल मित्री के सिरीया पुत्र को व्याह थाइ। तिहा राजा की भगति

को शस्त्र छत्र चामर हाथी-घोडा सराजाम वणै। ते खबरी मिनी दासी सू वररुचि जाणी। नगर लोक का बालक कु इम पढावै–

नद राय नवि जाणण ही, जे सकडाल करेसि ।
नंद राय कू मारनै, सिरीयौ राज ठवेसि ।।

ए दूहो बालकां नैं मुख थयो। राजायै सुण सेवक भेजि मित्री नैं खबर मगावी। राज्य ना सराजाम देखी आव्या। सेवक कहै– लोक वाणी साच है।

इम सुणी राजा कोप चढ्यौ, मित्री का सर्ब परिवार की घात विचारै। ए सरूप जांणी मित्री सिरीया सू कहै– प्रभात समय राजाइ मुजरइं हू विष भक्षण करि जास्यू तिहा तु म्हारो मस्तक छेद करिजै। इम कर्‌या सर्ब कुटब कुं कुसल थास्यौ। इम घणै आग्न हूवै सिरीया कु समझावी। ते कार्य तिमहीज कराव्यू।

ए हिवै राजा देखी कहै– ए स्यू कीधौ ? सिरीयौ कहै– महाराज नौं गुनैंगार पिता तेह सू हमारो कार्य नहीं। ते हिवै राजा महिरवांन थई सिरीया कू मित्री कर्‌यौ। थूलिभद्र वैरागै दिख्या लीयै।

हिवै सिरीयौ पिता नीं घात वररुचि ना वचन सू जाणी ते वेर लेवा उपकोशा वेश्या सो कहै– एहवौ कर जिम वररुचि ताहरै वस थायै मदरा पान करै।

वेश्या मित्री वचन प्रमाण करी वररुचि सूं पेम धरी मदरा पान करावै। ते खबर पाइ मत्री मेढल ना फळ नीं पुटइं कमल वणाई राजसभायै वररुचि कूं बुलाव्यौ ते कमल दीयौ। तेहनी बोई प्रगट देखी। सर्वलोके अपमान कर्‌यौ। ब्राह्मण मिली मदरापान नौं प्रायछित गर्म सीसौ पाव्यौ। मरण पामी नरके गयौ।

इम मदरां पीधां अपजश वधै, मरण थायै, माठी गति जाय, एह जाणी मदरा पान न करिवौ।

(२६७)

उजीया नीं कथा

वेश्या समीपे गया तेहना कुळ नौं नास थाय, इहा उजीया नीं कथा लिखीयइ–

वाणीयपुर नामा नगर जतुसतु नाम राजा। तेहनै श्री नाम पटराणी। तिहा विजयमित्री सार्थवा वसै, तेहनी स्त्री सुभद्रा, तेहनौं पुत्र पाछिले भव हस्तिनापुर भीम

नांमै अहेडी, उतपला नांमै स्त्री नीं पुत्र गोत्रस नाम, अनेक जीव ना नारू कान जीभ छेदती पाप कर्म करी पाच सौ वर्ष आउ पूरण भोगवी दूसरी नरके गयौ। तिहा तीन सागर आउ पूरण भोगवी इहा जन्म पाम्यौ। ततकाळ माता सुभद्रायै अपवित्र भूमिइ तजी लीऔ। तेहनीं नांम अजीत धर्‍यौ, तिहा सुखे रहै।

हिवै केतलाक दिवसे विजय मित्र समुद्र विचै जिहाज आगै जाता तूटी। विजय मित्र मरण पाम्यौ। तेहनै दुखे स्त्री सुभद्रा मरण पामी। राजा उजीया नैं घर सू निकाळ्यौ, घर और कु दीयौ।

हिवै अजीत आपणी इछाय रहै। सात विस्न सेवती विशेषै कामधूजा वेस्या सू भोग सुख मगन थई रह्यौ। एक दिवस राजा राणी श्री नाम तेहनैं रोग ऊपनौ। अति वीजन थई जाणी वेश्या कूं राज भवनैं गयौ। कामधूजा सो सुख विलसता राजा आव्यौ, उजित को देखी बाध्यौ घणी ताडणा देई नगर मैं फेरी सूळी दीनौ, मरण पांमी नरक पैहिली गयौ।

इम वेश्या नीं संगत सू कुळ नीं नाश थाय। इम जाणी उत्तम नरा एहनौ त्याग कीजौ।

(२६८)

श्रेणक राजा नीं कथा

हिंसा जीव घात सू दया धर्म नीं नास थाय। इहा श्रेणक राजा नीं कथा लिखीयइ–

राजग्रह नगर, श्रेणक राजा समक्ति पाया पहिली सिकार गयौ। तिहा मृग गर्भवंती एक बांणैं वींधी तेहनीं गर्भ भी वींध्यौ। आकुल थयौ मरण पामी। ते देखी श्रेणक राजा दया विरोधीक वचन कहै– माहरौ कैहवौ बळ है, एक प्रहारै गर्भ मृगली दोनू जीव रहित कीधा। इम कहिता नरक नीं आयु निकाचित बाध्यौ ते कर्म अनेक करणी कीया न तूटै।

पछै अनाथीजी मुनि आगल समकत पाई पिण निकाचत कर्म ना वध सेती पैहली नरकै ८४००० वर्स नीं आऔ पूरी करी, आवती चौवीसी मैं पहिला पद्मनाभ तीर्थकर थास्यै पिण हाल नरक पड्यौ छै। इम जाणी हिसा करी सरावणी नहीं।

(२६९)
वृसपत प्रोहित नीं कथा

पर स्त्री नीं सगत सू सर्ब धन नौं नास अनैं अधर्म नरके गति जाय, इहा वृसपत प्रोहित नीं कथा लिखीयइ–

कसूबीय नगरी, सतानीक राजा, मृगावती राणी। तेहनौं पुत्र उदायन नांमै युगराजा, तेहनी स्त्री पदमावती। राजा नौं प्रोहित सोमदत्त, तेहनीं स्त्री वसुमती, तेहनौ पुत्र वृसयतदत्त।

हिवै सतानीक राजा परलोके गयो। उदायन राजा थयौ, तेहनैं वृस्यतदत्त नांमै प्रोहित थयौ। राजा नौं बाल मित्र, परम प्रतीत धारी, राजायै मैहल जाय तेहनैं कोई आडौ न थाय।

एक दिवस उदायन राजायइं राणी पदमावती सू प्रोहित कु भोग करतौ देख्यौ। सेवगा पास बधाव्यौं धन घर लूटी सूळी देई मराव्यौ, नरके गयौ।

इम पर स्त्री सगत धन नाश नै नरके जाय। इम जाणी पर-नार त्यागीजै।

(२७०)
क्रोध सूं हांण

ऊजेणी नगरीये समुद्र दत्त सेठ वसै छै। तेहनैं धारणी कलत्र छै। तेहनैं घरि यज्ञदत्त कर्म करै छै। कितरेक कालि समुद्र दत्त सेठ रोगे करि विणठौ, मरण पाम्यौ। बेटे बाप ना मरण काम कीधा। कर्म्म नै योगे धारणी यज्ञदत्त सू लिब्धि हुई जो भणी योवन वयै इंद्रिय काम जीपता दोहिलौ छै। ते लोक विरुद्ध जाणीनै शिवकुमार मा नै वारै। ते वात धारणीये यज्ञदत्त नैं जणांवी जे ए शिवकुमार बेटौ रूडौ नहीं छै जिम कुमद नै सूर्य, जिम कूल नैं नदी प्रवाह, जिम वन नैं दावानल तिम आपनैं शिवकुमार विणाससै ते माटै ए छांनौ मारिवौ।

तिवारै यज्ञदत्त कहै– ए वात युगति नहीं जे भणी ताहरै ए बेटौ छै, म्हारै स्वामी छै। एहनै प्रसादे सुखीया रह छै, ए स्वामीद्रोह पाप किम कीजै ? एहवौ पाप चींतवीजै नहीं।

तिवारै धारणी कहै– जिकौ आपां नैं सुख नौं अंतराय करै तेहनैं मारया नौं पाप कोई नहीं।

इम साभळी विषया धमणै स्त्री नु वचन मानी नै यज्ञदत्तै शिवकुमार नु मारवूं मान्यूं। पछै मायाये करी शिवकुमार नैं कह्यौ– पुत्र केहनौं वेसास मत करै।

एक वार मायाये करी पुत्र नैं कह्यौ– पुत्र ! गोवाळीया गोकुल नीं रिक्षा रूडी न करै छै ते भणी तुम्हे बेउ जणा जावौ। हथियार लेइनै शिवकुमार यज्ञदत्त बेऊ चाल्या, ते आगलि पाछिल बेऊ जाईवा लागा। परपर कोई कोई नीं माहोमांहि वेसास करै नहीं। नीचा ऊचा चढता-उतरता थका छाहडीयै यज्ञदत्त खड्ग काढ्यौ। ते जाण्यौ नासि नैं गोकुल जाई गोवाळीया नैं सीखामणि देईनै तिहा गाया ना वाड़ा मांहि रात्रे सिज्जा पाथरी नै सूता पछै शिवकुमार इहल वेसे ऊठीनैं ते आपणा पाथरणा ऊपरिला कला नु खोड मूकी ऊपरि लूगडू ओढावी नैं खोड ढाकी मूक्यौ। आप अळगौ जाईनै गाया मांहि छानौ ऊभौ रह्यौ। तितरै यज्ञदत्ते छानै-छानै आवीनै सिज्जा ऊपरि खड्ग नीं प्रहार कीधौ। तिसै शिवकुमारे छानै-छानै आवीने यज्ञदत्त मार्‌यौ, पछै चोर मार्‌यौ चोर मार्‌यौ इम कोलाहल करी ऊठ्यौ, गोवाळीया धाइ आव्या तीया सघाते बाहर दोड़ी नै ओपैरो जाईनै पाछौ वळी आयौ।

यज्ञदत्त चोरे मार्‌यौ एहवौ मिस करी अनैं आपणैं घरि आयौ।

माये पूछ्यौ– बेटा यज्ञदत्त किहा ?

तिवारै शिवकुमार कहे– पूठै आवै छै। शिवकुमार चितवै अहो कर्म विपाक देखौ माता पुत्र नैं मरावै। चितवै इम जाणी नै रात्रे जागतौ रह्यौ ते माटे दिने निद्रा आवी तिवारै माये खाडे कीडा कीडी चढती दीठी। तिवारै खाडौ काढी जोयौ ते लोही सू खरड्यौ दीठौ। तिवारै जाण्यू जे यज्ञदत्त नैं शिवकुमारे मार्‌यो इम विचारी नै धारणीयै तेहिज खड्ग सू शिवकुमार नैं मार्‌यौ, तिवारै शिवकुमार नीं धाय मातायै धान खाडती दीठो। ते ऊठीनै धारणी ना माथा माहि मूसळ नीं दीधी, तिवारै धारणी मर गई। इम तिके सगळा ई निर्दयपणै करी माहोमांहि द्रोह करी मरण पाम्या।

(२७१)

मूर्ख री सेवा

पुरुष मूहर्ख नीं सेवा न कीजै, नीच वहुल हीन पुरुष नीं सेवा न कीजै। इहा मोदकी तापस नीं कथा लिखीयइ छै–

वद्रअचल नामा गाम समीपै मूर्ख तापस जटाधारी वन उद्यानीय मढी वणाई रह्यौ। अज्ञान तपस्या नै गुणै गाम ना लोक राजी थया, विशेष सेवा करै। इम रहता केतलाएक दिवस पछै एक सुर कामधेनु रूपे आव्यो। ते वन ना सवज घास अति सरस भखण करै। तापस देखी कहे– ए म्हारे वन आवी जिम उक को सरस

मोदक भोजन करावौ। इम कही पूछ सो तापस कू लगाई आकासै उडी। नंदन वने लेई मोदक सरस जीमावे। मूर्ख तापस मोदक नै लोभै सदा कामधेनु नी पूर्वे विलागायौ तिहां जाइ।

एक दिवस गाम ना लोक बूझै तुम्हें सदा किहा जावौ? तब मूर्ख तापस गाम ना लोकां नैं मोदक भोजन सरूप कहै। तब गाम ना लोक कहै— इम मोदक देखावौ, तुम्हारा प्रसाद सू हमनै बी मोदक भोजन मिले तो तुम्हारी सेवा नीं एहीज फळ। इम सुणी मूर्ख तापस प्रश्न थयौ कहै— कामधेनु पूर्वे हूं विलगू मेरे शरीर इत्रु है। एकेक अनुक्रमै विलगी तिहा आवीज्यौ। मोदक भोजन करावित्यौ। इम सुणी गाम ना लोक तापस समीपै रह्या।

एहवै अर्द्धरात्रि समय कामधेनु आवी त्रिण घास भक्षण करी रही। ते हिवै कामधेनु तेहनी पूंछै तापस विलग्यौ, तेहनैं पावै सर्वलोक अनुक्रमै विलग्या। एहवै कामधेनु आकासे उड़ी चली। विच मैं गाम ना लोक तापस कू बूझै— ते मोदक मोंटा केवा है ?, तब ते मूर्ख तापस हात लाबा करी कहै— एहवा मोदक मोटा है। इम कहिता हाथा सू कामधेनु नीं पूछ छूटी, ऊचा सूं गर्यो, धरती पड्या, मुख हाथ दत पाव तूटा। गाम ना लोक भी तेहनैं सग गिर्या, दुःखी थया और लोके हासी थई। इम मूर्ख नीं सेवा न कीजे।

(२७२)

ले तांण, ले तांण !

साहुकार री बेटी भोळी, हीया री अकल नहीं, घर मैं धन घणौ, सो मोटै ठिकांणै परणायौ। सासु-सुसरा, साळा-साळ्यां सारा ई भोळा। नाई सागै लेनैं सासरे आंणौ लेवा गयौ।

जमाई री आगत-सागत करै ज्यू नाई री न करै। जद नाई रीस मैं आयनै जमाई नैं कह्यौ— थारी सासरा मैं अवज्ञा घणी, ठांम-ठाम निदा हुय रही है।

जद जमाई बोल्यौ— किण वात री ?

जद नाई कह्यौ— खावै घणौ ज्यू, सासरा मैं भूखौ रैहणौ, एठवाडी न्हाख देणौ, घणी भूख लागै जद म्हा कनैं आय जाईज्यौ।

जद जमाई भूखौ रहै। इम दोय-च्यार दिन हुआ, पूरौ जीमै नहीं। जद सासु-सुसरा आदि विचार्यौ जमाई विशेष जीमै नहीं, सो शरीर मैं काई कारण दीसै छै।

एक दिन स्त्री नैं नींद आई जब औ ऊठनै नाई कनैं आयौ— भाईजी, भूखा मरू। जद औ सासु-सुसरा सूता हा जिण घर मैं कोठौ हो जिण ऊपर ले गयौ।

केळू अळगा कीया। इणनैं अगोछौ वास रै बांधनै नीचौ कोठा मैं उतार्यौ। अबै कह्यौ– धाप्या पछै एक दही री जावणी अगोछा रै बाध दीजै सो हूई खावसू। थू धापनै कहिजै– ले ताण, ले ताण, ले ताण। जद हू थनैं ऊचौ खाच लेसू।

जव इण दही री जावणी अगोछा रै बाधी, सो इण ऊंची खाच लीधी। पाव अधसेर दही खाधौ बाकी रौ इणरै माथा ऊपर न्हाख दीयौ। सो अबै डाढी-मूछा डील कपडा भरीज गया।

अबै जमाई बोल्यौ– ले ताण, ले ताण, ले ताण।

इम सुणनै केळू साउ करनै नाई तो जायनै सूय रह्यौ। अनैं सासु-सुसरा जाग्या।

सासू बोली– कोठा मैं लेहताण धस गई ।

जद सुसरौ भागनै बारै आयौ, सासू पिण बारै आई। बेटा री वहू पिण भेळा हुआ। कहै– रे कांई हुवौ ?

जद बाप बोल्यौ– कोठा में लेहताण धस गई।

जद औ बोल्यौ– डरौ मती, हू मांहि जायनै बारै काढ देसू। जरै औ मांहि जाय, जमाई नैं पकड मूहढा आगै पटकनै कह्यौ– थारा कर्म फूटग्या। जमाई नैं तो लेहताण लाग गई, अबै हू तो म्हारै घरै जावू, मरसी तो राड थारी बेटी हुसी।

जद इणनैं पकड राख्यौ अनैं कह्यौ– जमाई नैं साऊ कर।

जद नाई बोल्यौ– रुपइया सौ लेऊं। जमाई लाजा मरतौ अचेत पड्यौ जद रुपइया सौ नाई नैं देनैं कह्यौ– भाई लेहताण काढदै।

जद नाई बोल्यौ– म्हा सागै आवौला जिण रा डील मैं लेहतांण धस जावैला।

जद डरतौ एक पिण आयौ नहीं। औ उठायनै तळाव री पैली तीर ले जायनै कह्यौ– भावै सो खायबौ कर। पाछौ सेठ नैं सूंप दीयौ। सेठ-सेठांणी आदि सर्व राजी हुआ। नाई री आगत-सागत करै। इसी नाई कुबुद्धि करनै झूठी लेहताण लगाई। ज्यूं ससार मैं लेहतांण लाग रही है।

(२७३)

बाई ! माथौ क्यूं धूंणै ?

एक व्राह्मण, जिणरै पांच वेटा, च्यार वेट्यां। सर्व नैं परणाय दीया। ल्होडी भाई वाप सू अर्य कीधी– हू तो कासीजी भणवा जावूं।

बाप भोळौ जाणनै विचार्यौ, सो भणीजै तो ठीक है। इम जाणनै आज्ञा दीधी।

बारे वर्स ताई कासीजी मैं भण्यौ। एक गूणती मैं मावै जितरा शास्त्र भण्यौ। एक आखडी भरनै पोठ्या ऊपर लाद्यौ। एक कांनी आप पकड्यौ। अबै चल्यौ आवै।

आपरै सैहर नेडौ एक गाम आयौ जठै तळाव रौ ढाढौ पांणी पीवै ज्यू पीवा लागौ। एक हाथ सू ते आंखडौ पकड्या रह्यौ।

जरे एक बुद्धिमांन बाई कतोहल मैं कह्यौ– अरे वीरा ! यूं कांई पांणी पीवै?

जब औ बोल्यौ– गूणती रो एक आंखडौ शास्त्र भण्यौ, सो अबै एक आंखडौ पकड़्यां रहूं, बाई दोई आखडा भण्यौ नहीं जिणसूं दु खे आयौ।

जद इण भोळौ जाणनै कह्यौ– ए शास्त्र आधूंआध करलै। जद इण आधौ-आध कीया। पोठीया ऊपरी गूणती न्हाखी सो पडी नहीं।

जद औ हाथ जोड़नै बोल्यौ– बाई, आछी अकल दीधी, हू इतरा शास्त्र भण्यौ पिण यू नहीं कह्यौ, सो आधौ-आध कीया पडै नहीं।

जद बाई विचार्यौ, औ इतरौ ई मूहर्ख है कै और भी मूहर्खपणौ इणमैं है। इम चिंतव नैं मायौ धूण्यौ।

जद औ बोल्यौ– बाई माथौ क्यूं धूंणै ?

जद बाई बोली– थारै घरै एक वात खोटी हुई।

जद औ बोल्यौ– बाई काई हुई ?

जद आ बोली– थू दु:ख न करै तो कहू।

जद औ बोल्यौ– दु ख न करू, व्है जिसी वात कहै।

जद बाई बोली– थारी स्त्री राड हुय गई, सो म्हारा मन मैं आई जिणसू माथौ धूण्यौ।

इम सुणनै औ छाती माथौ कूटवा लागौ, बागा पाडै। बापडी ब्राह्मण री बेटी रौ जमारौ किस तरै नीकळसी। जद आ बाई पकौ भोळौ जाणनै कह्यौ– वेगौ घरै जा अठै कोई कुविला खोस लेवैला। जब औ ऊंतावळौ पोठीया नैं दौडाय सैहर रा वाग मैं आय ऊतर्यौ।

तापड विछायनै बैठौ रोवै। किणहि जायनै इण रा बाप नैं कह्यौ– जद मा-बाप, भाई-भोजाया, बहिनां आयनै कह्यौ– रे भाई थू क्यू रोवै ?

जद औ हूबकां खावै, पिण जाब दे नहीं। मा-बाप कह्यौ– रे भाई काई विगड़ीयौ ?

जब औ बोल्यौ– थांनैं कांई चिता, ज्यां दुखे ज्या पीड।

जद भाई-भोजाई बोल्या– थारे काई दुखै ?

जब औ बोल्यौ– मोनैं तो दु:ख भारी लागौ।

जब वडी बहिन रीते हाथे हुंती ते बोली– अरे भाई ! इसौ दु:ख थनैं काई लागौ ?

जब औ बोल्यौ– बाई थू नहीं जाणे ?

जद आ बोली– भाई, म्हांनैं ठीक नहीं।

जद औ बोल्यौ– म्हारी स्त्री रांड हुय गई, बापडी ब्राह्मण री बेटी, सो जमारौ वीगड गयौ, सो औ जबर दु:ख लागौ।

जद आ बोली– थां बैठा कदेई राड हुवै नहीं।

जब औ बोल्यौ– म्हा बैठा तू राड क्यूं हुई ?

जद आ बोली– रे मूहर्ख हूं तो थारौ बहनोई मूऔ जिणसू हुई, धणी बैठा स्त्री राड न हुवै। आ देखले थारी स्त्री गैंहणा कपडा पहिरयां ऊभी है। इम सुणनै औ बोल्यौ– है बाई, इत्ता शास्त्र भण्यौ जठै यूं कठैई नहीं लिख्यौ सो धणी मूआ स्त्री रांड हुवै। इसौ मूहर्ख।

(२७४)

धड़ा जोड़ मैं यूं का यूं

एक पचोळी, सो धडा-जोड मैं पकौ सावधान, सो स्त्री, बेटा-वहू नैं लेई सासरा थी पोता रै गांम आवता गैला मैं नदी आई, सो घणी ऊंडी, थोडी ऊडी, कठै तिणरी कीमत रै अर्थे एक वास लेई नदी मैं पैठौ। वास थी पाणी ऊडा रौ तुमार कीयौ, सो कठैक तो पाणी मुरच्या ताई आयौ, कठैक गोडा ताई आयौ दीठौ। कठैक साथळ तांई, कठैक दूठी तांई, कठैक छाती ताई, कठैक गळा तांई। आगै वास राखनै उन्मान सूं जाण्यौ, सो ऊभता ताई। पछै पाछौ नदी वारै आयौ।

पछै कागद मैं मुरच्या ताई, गोडा, साथळ, दूठी, छाती, गळा, ऊभता ताई पाणी आयौ ते लिख्यौ। पछै सगळौ धडौ दीयौ। सो कठैई थोडौ घणौ सारौ लेखौ धडौ मेलनै करै तो गोडा सूधौ धडौ आयौ जाणी नै वैहल नैं चलाई। आगै जाता पाणी ऊंडौ आयौ। गाडी वैहल वेहवा लागा जद इण धडौ जोडनै देखनै बोल्यौ–

धडा जोड मैं यूं का यू, गाडी वैहल तणीजे क्यू ?
धडा जोड मैं यू का यूं, टाबर छोरू वहै क्यू ?

यू करतां पाणी मैं वहि गया, सो मरण पांम्या। भणीयौ पिण गुणीयौ नहीं। पाणी मैं धडा-जोड रौ काई काम, इसा मूहर्ख।

(२७५)

सिंघ-वाछड़ौ

एक गाय नीं वाछडौ उजाड मैं जाय पड्यौ। अबै औ वाछडौ डरपै। चारौ घणौ, पाणी घणौ पिण वाछडा नैं भय घणौ। सिंघ उण वन मैं आय देखी नै वाछडै विचार्यौ मारसी तो खरौ पिण पगां जाय पड्डूं, मारौ भावै राखौ। इसी विचारनै पगा पड्यौ लटकालटक करै।

जब नाहर नैं मोह आयौ, इणनैं मारू तो नहीं। वाछडौ बोल्यौ– भाईजी, आपे वाहेलौ करौ। जद नाहर वाहेलौ करनै कह्यौ– भय खा मती।

जब वाछडौ बोल्यौ– आपरौ तो भय नहीं, आप तो म्हारी ऋक्षा करवा वाळा हो पिण दूजा वन रा जीवा सूं डरू छू।

जद नाहर बोल्यौ– एक बळध नै मार्‌यौ जिण रौ टोकरीयौ तूं गळा मैं घाललै तोमैं कोई भीड पडे तो टोकरीयौ वजाइजै हू था कनै ईज छू।

जद वाछडै कह्यौ– ठीक।

इम कहीनै नाहर वन मैं भख लेवा गयौ। वाछड़ै देख्यौ नाहर टोकरीयौ सुणीयां आवै कै आवै नहीं, पूरी प्रतीत आई नहीं, विना भीड पड्यां टोकरीयौ वजायौ। जद टोकरीयौ सुणनै नाहर आयनै कह्यौ– क्यूं भाई, टोकरीयौ क्यूं वजायौ?

जद वाछड़ौ बोल्यौ– भाईजी ! आपरी कीमत करवा नै टोकरीयौ हलायौ।

जद नाहर बोल्यौ– डर मती, अबै वजावै तो भीड पड्यां वजाईजै।

कितायक दिनां पछै इण रीते फेर वजायौ, फेर नाहर आयनै एहिज समाचार कह्या। इम हिज तीजी वेळा फेर वजायौ। जद नाहर विचार्‌यौ, औ तो झूठ्या ई वजावै। परतीत उड़ गई।

अबै दूजा वन रौ नाहर आयौ। वाछड़ौ देखनै डरप्यौ। टोकरीयौ घणौ ई वजायौ पिण नाहर झूठ्यौ जाण्यौ, आयौ नहीं। जद दूजा वन रौ नाहर वाछड़ा नैं मारनै खाय गयौ। लारै नाहर आयौ, वाहेला भाई नैं जोयौ, लाधौ नहीं। जद जांण्यौ नाहर खाधौ।

(२७६)

ऊभी कटारी

एक निर्धन साहुकार परणीजनै घरै आयौ सो माचा री दावण खोली। दोय जणा सूता सो जमीं जाय लागा। रात्रि रा चोर सांतौ देवा माहि आयौ।

जद स्त्री बोली— चोर आयौ।

जद औ बोल्यौ— बोल मत, तरवार बावसी तो ईस-ऊपळा रै लागसी, आपै तो नीचा हा। जद स्त्री बोली— ऊभी कटारी चलावसी तो ? जद औ बोल्यौ— सीखाव थारा बाप नैं, वडी आई कहण वाळी।

(२७७)

छ नै छ बारोत

एक सेठ लखपति, तिणरै एकाएक बेटो सो तिणनैं लाडकौ घणौ राखै। भणायौ-गुणायौ नहीं। एक साहुकार की पुत्री तिणरी सगाई करवा गुमास्ता मेल्या। गुमास्ता आयनै सेठ नैं कहै— कुवरजी सूं सगाई करणी है, सो कुंवरजी किसायक है?

जद सेठ बोल्यौ— कुवर तो रसोई जीमवा गयौ।

सेठ घरै आयनै कुंवर नैं कहै— थारी सगाई करवा नैं आया है सो तोनैं लेखौ पूछै तो हू कहू जिण रीते जाब दीजै। छ नै छ किता ? बारह। तोनैं बारै को नाम न आवै तो बारोत याद करनै बारोत कहि दिजै सो म्हैं कहिसा जीभ अटक गई जिणसू बारोत कह्या पिण भण्यौ चोखौ है। इम कहि सेठ दुकान आयौ।

पछाडी सू कुंवर पिण आयौ। गुमास्ता इणनैं फरडौ-फूटरौ देखनै राजी हुआ। सेठ कुवर नैं कमाडौ सांहमौ जोयनै कहै— न्हाना, छ नैं छ किता ?

जद औ बारै, बारोत कहिणौ तो भूल गयौ नै बोल्यौ— छ नैं छ किमाड।

जद गुमास्ता जाण्यौ कुंवरजी फरडा-फूटरा है पिण भण्या तो घणा नहीं। विना सगाई कीधा पाछा सेठ नैं आयनै समाचार कह्या। सो कुवरजी मैं तो कांई तत दीसै नहीं। लाडकौ राख्या यू हुवै।

(२७८)

बड़कां बोली

एक डोकरी बडका बोली घणी। लोग खेत वावा आदि कारज जावै जद अशुभ भाषा बोलै। जद लोक सगळा काया होय गया। इणनैं कह्यौ— म्हैं म्हारै काम

जावां, तू अशुभ भाषा काढै, सो म्हारै काम हुवै नहीं तिणसू तू अणबोली रहै।

जब आ बोली– म्हारा घर रौ खरच थे पूरवौ तो बोलूं नहीं।

जद लोक बोल्या– घर-घर दीठ पाच-पाच सेर धांन परहौ देसां, तू बोल मती। इम कहिनै इणनैं कोठी मैं घाली। ए खेत वावा नैं नीसरया।

डोकरी सू बोल्या बिना रहणी आवै नहीं, सो कोठी मैं नीची होयनै कोठी रै सैंणा सांहमी जोवा लागी। लोका नैं जाता देख आ बोली– सुणौ रे बीरां ! थांरै धांन पईसा भर पिण न नीपजेगा तोही हू तो घर-घर दीठ पाच-पांच सेर धांन उरौ लेसूं।

लोक इणरी वचन सुणनैं पाछा घरै आया। बोल्या– अबै तोनैं पईसा भर न देवा, मन मानै ज्यूं बोल। इसी डोकरी मूहर्ख।

(२७९)

मोकळ-मूहा

एक सैहर मैं पठांण राज करै। जिणरी हजामत करिवा नाई आयौ, सो हजामत करता चोटी राखी।

जद पठांण बोल्यौ– रे ! चोटी क्यू राखी ?

जद नाई बोल्यौ– खुदाबंध ! मगरा रा गाम है, कदैई चोरां री वाहर जावौ नै चोर माथौ तोड़ न्हाखै तो चोटी पकडवा नैं काम आवै जिण वास्तै राखी छै।

ए वात सुणनै पठाण नैं रीस आई। जब इण नाई नैं रोक दीयौ। आ वात नाई री स्त्री सुण पठांण कनैं आयनै बोली– खुदाबंध ! आप म्हारा धणी नैं क्यूं रोक्यौ?

जब पठाण बोल्यौ– मोकळ-मूहौ म्हांनैं ऊंधौ बोल्यौ। कहै चोर माथै तोड न्हांखै तो पकड़वा काम आवै तिणसू चोटी रखावौ। इम बोल्यौ जिणसू रोक्यौ।

जद आ बोली– खुदाबध ! चोटी राखवा रौ काम कांई, घणा खमा आपनैं इसौ काम क्यांनैं पडै अनैं कदा वाहर मैं माथौ तोड न्हाखै तो चोटी रौ कांई काम, पकड़वा नै कान छतां ई है नीं, सो कान पकडनै घर ले आवैला।

इणनैं मोकळ-मूही जाणनै रोक दीधी। आ वात नाई री मा वहू-बेटा री वात सुण आ बी पठाण कनैं आयनै बोली– खुदाबध ! म्हारा बेटा-वहू नैं क्यू रोक्या ?

जद पठाण बोल्यौ– म्हांनैं मूंहढा सूं ऐर-गेर वचन बोल्यौ, चोटी कांन पकडवा रौ कह्यौ।

जब आ बोली– खुदाबध ! घणा खमा, आपमैं इसौ काम क्यांनैं पडै अनैं कदा मूंगरा मैं गाम देनैं वाहर मैं माथौ तोड न्हाखै तो कान नै चोटी रौ काम कांई

छै ? आपरी माथी रूई रा पैल में घाल छाबडी मैं मेल गाजा-बाजा सू घरे पूगतौ हूं करसू।

जद इणनैं ई रोकी। पछै नगरी रा लोक आयनै अर्य कीधी– खुदाबंध ! या रा घर रा तो सगळा ई मोकळ-मूहा छै। जद पठाण या तीनू नैं ई सीख दीधी।

(२८०)

बोली सूं जांण्यौ

एक अतीत, जिणरै तुरतपुरी चेलौ, जिणनैं गुरां कह्यौ– भिख्या माग ल्याव।

जद इण कह्यौ– भिख्या मागू जद काई कहै नै मांगू ?

जद गुरु बोल्या– यू कहिनै मागजै सत्य राम।

चेलौ धारनै भिख्या मागवा गयौ, सो गेला मैं सत्य राम कहिणौ तो भूल गयौ, आगै बायां बैठी काततीं ही, सो ज्यांरै मूहढा आगै जायनै बोल्यौ– धट रांड।

जद बाया बोली– रे दळिद्री ! यूं क्यू बोलै, थूं तो कोई तुरतपुरी दीसै छै।

जद औ बोल्यौ– बाया थांमैं काई ज्ञान है, सो मोनैं तुरतपुरी जांण्यौ।

जब अै बोली– थारी बोली सूं ई जाण लीयौ।

(२८१)

भण्या पिण गुण्या नहीं

एक जोतसी, एक वैद, एक न्याय-शास्त्र को जाण, एक तरक-शास्त्र को जांण। ए च्यारू ई गाडी-बळध ले रुपइया ले व्यापार करवा वस्तु लेवा सैहर मैं जावता। गेला मैं एक उजाड आई। जठै एक तळाव आयौ। च्यारू ई जणा मनसोवौ कीधौ रसोई करी जीमनै सैहर मैं जासां। जोतस-शास्त्र का जाण नैं बळध चरावा मेल्यौ, वैदक-शास्त्र का जाण नैं तरकारी लेवा मेल्यौ। तरक-शास्त्र का जाण नैं घी लेवा मेल्यौ। न्याय-शास्त्र का जाण नैं रसोई करवा वैसाण्यौ।

अबै खीचड़ी न्याय वाळौ करवा लागौ, सो खदबद-खदबद सीझै। जब न्याय वाळौ वोल्यौ– म्हासू ई झूठौ वाद करै। अबै न्याय-शास्त्र देख्यौ जिणमैं इम मड्यौ– सन्मुख झूठा वाद करै जद झूठा रै मूंहढै धूळ दीजै, जद घोबौ भरनै खीचडी मैं धूळ न्हाखी जद खदवद-खदवद करती रेह गई।

अबै वैदक-शास्त्र को जाण तरकारी लेवा गयौ, सो मन मैं विचारणा कीधी मूळा तो वाय करता, बैंगण वाय करता, काई तरकारी कफ नीं करता, काई तरकारी पित्त नीं करता। नरोगी तो नींब है। इम चितव नैं नींब लायौ।

तरक-शास्त्र वाळौ पात्र मैं घृत लेनैं आवतौ हो, सो मन मैं तरक ऊपजी 'घृतं आधार पत्र कै पत्र आधार घृत'। इम पात्र नैं कूदावता हेठै पड्यौ, सो घी ढुळ गयौ।

अबै जोतष वाळौ विचार्यौ—हू जोतष सू जोयनै बळद ले आवसू। इम विचार बळधां नैं छोडनै सूय रह्यौ, सो नींद आय गई। बळधां नैं चोर ले गया।

च्यारू ई भेळा हुआ। आप आपरा समाचार सगळा ई कह्या। जब च्यारू ई विचार्यौ—भूखां मरां हा, सो चालो सैहर मैं। जद कह्यौ— बळधा विना गाडा रौ कांई उपाव करां ? जद कह्यौ— घींसनै ले चालौ। थोडी दूर घींस्यौ, सो थाक गया। जद च्यारू ई मूहखां विचार कीयौ घींस्या चलै नहीं तो बाळ न्हांखौ। जद गाडा नैं बाळनै चालता रह्या। इसा मूहर्ख, भण्या पिण गुण्या नहीं।

(२८२)

दूध री थर

एक साहुकार मोटै ठिकांणै परणीजनै स्त्री घरै ल्यायौ। कितायक काळ सू निर्धन होय गयौ। पेट दोरौ भरीजै। एकदा काळ पड गयौ, सो भूखा मरै। जद स्त्री बोली— म्हारै पियर जावो, सो भैंस ल्यावौ, जिणसूं औ काळ वर्स परौ काढसा। जद औ भैंस ल्यावा सासरै जावा नैं त्यारी हुवौ।

जद स्त्री बोली— भैंस ल्यावौ म्हारा पियर री तो दूध ऊपरली थर तो हूं खासूं।

जद औ बोल्यौ— तू तो म्हारै लारै आई, सो थर तो हूं खासू।

यू करता मांहोमा लड़ पड़्या। बथोबथी आया। लोक भेळा हुआ। एक उत्पात्ति बुद्धि वाळौ आयौ, तिण पूछ्यौ— ऐ दोनू क्यू लडै छै ?

जद इण सोटी लेनैं ठामडा फोड्या। धणी-धण्याणी कजीयौ छोडनै कहिवा लागा— अरे ! म्हारा ठांमड़ा क्यू फोड़्या ?

जद औ बोल्यौ— थारी भैंस म्हारौ खेत खाय गई।

जद ए बोल्या— भैंस तो आई कोय नहीं, खेत कठासू खाधौ ?

जद औ बोल्यौ— तो थै थर रै वास्तै कजीया क्यू करौ ?

इम कहिनै झगड़ौ मिटायौ।

गधै रौ काळजौ

एक वन मैं नाहर रहै, सो भख ढूंढतौ फिरै, सो स्याळीयौ हाथै आयौ। सिंघ स्याळ नैं मारवा लागौ।

जद स्याळ बोल्यौ— महाराज ! मोसूं तो धापोला नहीं, सो हूं जायनै आपरै वास्तै मोटौ भख ल्यावूं। आप गुफा मैं विराजौ, इम वचन देईनै औ चाल्यौ।

आगै जाता स्याळ नैं एक गधौ मिल्यौ, तिणनैं कह्यौ— म्हारै राजा रौ प्रधान चल गयौ, सो तोनैं प्रधान पदवी देसी, तू म्हारै साथै चाल।

जद गधौ इणरै साथै हुवौ। गुफा नेडा आया जब नाहर धड़कतौ गुफा मांहि थी नीकळ्यौ। जद गधौ देखनै डरचौ, सो न्हास गयौ।

जद स्याळीयै नाहर नैं कह्यौ— महाराज ! हूं तो नीठ नीठ करनै ल्यायौ अनैं आप उतावळ कीधी तिणसूं गधौ भाज गयौ।

जद नाहर बोल्यौ— अबै पाछौ ल्याव।

जद स्याळियौ बोल्यौ— अबकै ल्यावूं तो सरी पिण आप उतावळ कीजौ मती।

जद स्याळ पाछौ गधा कनैं आयौ। गधा नैं कह्यौ— अरे भाई ! तूं भोळौ थकौ न्हास गयौ। तोनैं प्रधांन पदवी देसी तिणसूं साहमौ मुजरौ करवा नैं म्हारौ राजा आवतौ हो पिण तू तो मूर्ख भाग गयौ। हिवै चाल, पाछौ राजा प्रधान विना शोभै नहीं, तूं म्हारौ कह्यौ मान।

जद गधौ पाछौ स्याळ रै साथै हुवौ, नाहर री गुफा नेडौ आयौ जद स्याळीयै गधा नैं कह्यौ— राजाजी तोसूं मुजरौ करवा नैं साहमा आसी, तूं डरजै मती। इम विश्वास देईनै ले चाल्यौ। औ तो हीयाफूट सो स्याळीया रौ कह्यौ मांन लीधौ।

आगै चाल्या। नाहर उठ कनैं आयनै हायळ पटकी, सो मार न्हाख्यौ। अबै नाहर स्याळीया नैं कह्यौ— हूं सिनांन कीया विना भक्षण करू नहीं, सो तूं तो अठै रुखवाळी कर अनैं हूं जायनै सिनान कर आवूं।

जद स्याळीयौ बोल्यौ— आप भला ई पधारौ, हूं बैठौ छूं।

इम कही नाहर तो स्नान करवा गयौ लारै स्याळीयै हीया री अनैं आंख्या री कवळी-कवळी मास काढनै खाय गयौ। हिवै नाहर सिनान करनै आयौ। गधा रौ काळजा री अनैं आख्या री मास काढचौ देखनै रीस मैं आयनै बोल्यौ— अरे दुष्ट मूरख ! काळजौ-आख्यां खायनै ऐंठवाडौ कीधौ, सो म्हारै तो काम रौ ए रह्यौ नहीं।

जद स्याळ हाथ जोडनै बोल्यौ— महाराज ! हीयौ-डीया दोनूं ई नहीं था।

जो डीया हुवै तो आपनैं देख्यां पछै अठै क्यांनैं आवै अनैं हीयौ फूटौ सो अठै दूजी वार आयौ। जद नाहर मान लीधी। गधा रौ भक्षण कीयौ।

(२८४)

मूर्ख सूं पालौ

मूर्ख अरु तिरजंच सरिखा कह्या जड़ सभाव थकी। इहा मूर्ख कुळपुत्र नीं कथा लिखीयइं—

रत्नपुर गांमै मूर्ख कुळपुत्र वसै। बालक वय पिता मरण पाम्यौ। माता कष्ट सही तेहनैं पाळ्यौ। जोबंन वय आव्यौ। माता एक दिवसे बीजै गांमै धनवत की सेवा कुं भेज्यौ। माता सिखाव्यौ जिहा लोक मिलै तिहा जुहार प्रणांम कीज्यौ।

ए वचन हीयै धरी परगांमै चल्यौ। राह मैं आहेडी मिल्यौ तेहनैं ऊंचै शव्दे जुहार कीधौ। हिवै मृग बंधन पडता भागा ते देखी आहेड़ी मूर्ख कुं ताडना दीयै।

मूर्ख कहै— माताय मुझ कुं सीखाव्यौ।

आहेडी कहै— एहवा लोक मिलै तिहा नीचौ थई चलीयै।

ए हिवै आगै गयौ तिहा धोबी कपडा धोवै ते देखी नीचौ थई चल्यौ ते धोबी ए देख्यौ औ वस्त्र नौं चोर। इम जांणी ताड़ना दीयै।

तव मूर्ख कहै— मुझ कुं आहेड़ी सिखायौ।

तव धोबी कहै— एहवा लोक मिलै तव कहियै निर्मल थाऔ।

ते वचन प्रमांण करी आगै गयौ तव हाळी धान वावा गयौ विचै मिल्यौ। मूर्ख कहै— निर्मल थाऔ।

अपसुगन जाणी तिणैं ताजणा करी। कहै— रे मूर्ख निर्मल हुवै जब वादळ वीज न हुवै, मेह न वरसै। तव धान न नीपजै, यू कहिणौ बहुत थावौ।

इम सीख धारी आगै चाल्यौ। तव मृतक जळावा लोक मिल्या। तव कहै— बहुत थावौ।

ए अमंगळीक जांणी लोकां ताडणा कह्यौ। तब औ बोल्यौ— मोनैं बीज धान वावा जाता हाळी सीख दीधी तीसूं इम कह्यौ।

तब लोक कहै— एहवा लोक मिलै तिहा इम कहिणौ— इम कदेही मति थावौ।

ए सीख धरी आगै चल्यौ। आगै गांम मांहि गयौ तिहा विहाव करी वर वीनणी मिल्या, लोक देखी कहै— इम कदेही मत हुवौ, तिहा भी ताजणा लही।

आगै चल्यौ। तिम जिहा माता भेज्यौ तेहनैं घरै आव्यौ, तिण पिछाण्यौ। पिता नैं मिलापै प्रेम सू राख्यौ।

हिवै केतलेक दिवसे धान मूगी थयौ। तिण तेहनैं घरै अन्न नीं हाण थई। स्त्री राव राधी, परवार कु राबडी जीमावै।

तव स्त्री, पुरुष सू कहै— राब ठरै है, तुम जई सभा मांहि बैठा बुलाय ल्यावौ।

ते मूर्ख जाय पुकार कहै— स्वामी ! राब ठरै है सताब आवौ।

इम सुणी लज्या पामतौ उठ्यौ। घरै आवी मूर्ख कु कहै— घर को कार्य छानी कहियै। इम सीख देई भोजन जीम्यौ।

एके दिवसे घरै अग्नि लागी। तब स्त्री मूर्ख सू कहै— सिरदार कु तेडी ल्यावौ जिम अग्नि बुझावै। मूर्ख गयौ, सभा विचै जई मून करी रह्यौ। एकत समय देखी कहै— स्वामी घर जळै है।

तब गृहस्वामी कहै— सताव सू आवता ई क्यू न कह्यौ, अतरै घर जळ गयौ होसी।

मूर्ख कहै— तुम्हे सिखाव्यौ घर नौं कार्य छांनै कहणौ।

सिरदार सीख दीयै कहै— धुवाडौ देखै तिहा धूळ की पोटली लेई सावधान रहणौ।

इम केतलेक दिने ग्रह स्वामी सिनान करी चोटी सुखाय रह्यौ। उघाड सिर प्रजा करै। तव धूप खेवण लागौ। तव मूर्ख धूंवाडौ देखी धूळ पोटळी लेई सावधान थयौ।

तव सिरदार कहै— रे मूर्ख, धूळ क्यू ?

तव मूर्ख कहै— आप कह्यौ थो धूवाडौ देखै तिहा धूळ पोटळी लेई रहज्यौ।

त्या पिण ताजणा पाम्यौ। एक दिवसे दासी नैं गोवर नीं छाव देई अनैं मूर्ख कु पाणी नौं घड़ौ देई साथै मेल्यौ। कह्यौ— ए दासी करै तुम्हे पिण तिम कीजै। इम सिखाव्यौ।

गाम वाहिरै दोऊ गया। दासी गोबर नीं छाव गोडै उतार हेठै न्हाखी। इम ही मूर्ख माथा थी घडौ गोडै धरी हेठौ न्हाख्यौ, सो घडौ फूटौ। तव दासी मूर्ख रै चपेटै ताड्यौ। तव मूहर्ख पिण दासी कु चपेटै ताडना करी। दासी सिरदार थी आवी पुकारी। तव सिरदार मूर्ख गुनगार जाणी नीकाळ्यौ। आपरै घरै गयौ। महादु:खी थयौ। इम मूर्ख तिर्यंच सरीखा कह्यौ।

(२८५)

चरपराटौ तो मिट जासी

एक डूंब दोफारां के तावडे ऊन्हाळा मांहि अळवाणे पगै किणही गाम जातौ हुतौ। मार्ग मैं एक घोड़ै चढ्यौ सिरदार मिल्यौ। जद डूंब गुण-कीर्तन कीया। सिरदार राजी हुवौ। विचार्‍यौ, म्हारै तो चढवा नैं घोडौ छै अनैं औ बापडौ अळवांणे पगै तावडा मैं फिरै छै। इम विचार आपरौ पहिरवा रौ पगरखी रौ जोड़ौ दीधौ। हू गाम मैं जायनै नवौ पहिर लेसू इम चितव आगळ चालतौ हुवौ।

हिवै डूब विचार्‍यौ, ठाकुर दातार। इणमैं दांन रौ गुण घणौ। विना माग्यौ दीयौ जोड़ौ, मागतौ तो दे घालतौ घोड़ौ। अबै घोड़ौ मागू जरै ऊंतावळौ जाय पूगौ, कह्यौ– मा-बाप, घोडौ ऊभौ राखजै।

जरै घोड़ौ ऊभौ राख्यौ। डूंब बोल्यौ– मा-बाप आपरा तो भाग्य मोटा है पिण गरीब ऊपर कृपा कर चढवा नैं थाकौ सो घोड़ौ द्यौ।

जद इण सरदार नैं रीस आई। म्हैं तो गरीब राक जांणनै जोड़ौ दीयौ है, सो अबै घोडौ मागनै मोनैं अळवाणै पगै चलावै है। इम विचारनै बोल्यौ– आव रे घोड़ौ देवूं। जद ४-५ कोरडा वजाया। जद औ हंसवा लाग्यौ।

जद सिरदार बोल्यौ– हंसै क्यू ?

जद औ बोल्यौ– कोरड़ा री लागी, सो चरपराटौ तो मिट जासी पिण घोडौ नहीं मागतौ तो मन री दरफराटौ मिटतौ कोय नहीं। ए घोडौ दे घालतौ रे, ए घोडौ दे घालतौ रे। इसी विचारणा नैं मन री दरफराटौ कहीजै।

(२८६)

खरै-खोटै री परख

एक सराप री बेटौ मूहर्ख। पर ग्राम सासरै जावा नैं त्यारी हुवौ। जद बाप कह्यौ– दिन वध्यां पछै चालजै मती, कनै जोखौ घणौ। एक साहुकार रा बेटा रै साथ हुवौ ते पिण मूहर्ख अनैं लक्षणा रै लेखै नीच पिण घणौ। जद ए दोनू ई जणा चाल्या। एक दोय मजल नीकळ आगै गांम पाव कोस रै आसरै रह्यौ, तिहा सूर्य अस्त हुवौ।

जद सराप री बेटौ बोल्यौ– म्हारै तो बाप कह्यौ, सो दिन वध्या पछै चालणौ नहीं, सो हू तो अबै न चालू। जोखौ लेनैं रूख ऊपर जाय बैठौ अनैं सेठ रौ बेटौ हेठै बैठौ।

रात्रि पड़ी नै चोर आया, सो सेठ रा बेटा नैं खोस लीयौ। रुपीया सौ पलै बध्या हा ते ले लीया।

औ बोल्यौ— ठाकुरा ! खरा-खोटा री मोनैं खबर है नहीं, ऊ रूख ऊपर ऊची बैठौ है सराप रौ बेटौ तिण कना सूं परखाय लीजौ।

जद रूख ऊपर चढ गैंहणा-कपडा माल सराप रा बेटा रा सर्ब खोस लीया। इसा मूहर्ख री सगति कीधी तो दु खी हुवौ।

(२८७)

तूंकारौ नै जीकारौ

एक साहुकार रै बेटा री वहू कुळ गांमडीया री आई, सो सासरा मैं सारा नैं तूकारा देवै अनैं पियर री बोली बोलै।

जद सासू बोली— सासरा मैं सर्ब नैं जीकारौ देणौ।

जद आ बोली— ठीक छै।

तीजा पौहर में भैंस री पाडौ आयौ जद वहू बोली— सासूजी ! भैंसजी रा पाडाजी नै खूंटाजी रा बंधणाजी सू बाधूजी।

जद सासू बोली— हे वहू ! इतरा जीकारा री कांई काम ?

जद वहू बोली— सासूजी ! इसौ रागद्वेष तो आपरा घट मैं है, म्हारै तो जेठजी रौ बेटोजी नै भैंसजी रौ पाडौजी, दोनूं बराबर छै।

(२८८)

काच मांही मूंहढौ

एक जाट डोकरी पोती लेनै खेत जाए। गेला मैं ऊंधी काच पड्यौ। जद पोती वोल्यौ— वापजी, कांई पड्यौ ?

जद इण उठाय लीयौ। काच माँहे देखै तो आपरौ मूहढौ दीठौ।

जद डोकरी वोल्यौ— म्हैं तो न धणीया री जांणनै उठायौ पिण ठाकुर तो माँहि विराज्या है, सो गुन्हौ माफ कीजौ, मोनैं खवर नहीं तिणसूं म्हैं उठायौ। इम कही पाछौ मेलनै धोख दीधी। इम आपरौ आपौ ओळख्यौ नहीं। इसौ मूहर्ख।

(२८९)

धोळा मैं धूळ

एक करसणी डोकरौ खेत मैं गयौ। छोरौ बोल्यौ— बापजी, भूख लागी। जब रोटी री बटकौ दीयौ। बाजरी रौ बटकौ लेनै छोरौ कुआ कनै आयौ। कुआ माँहे देखै तो पांणी मैं पोतारो ईज मूहढौ दीसै। छोरौ डरप्यौ। रोटी री बटकौ कूआ मैं न्हांखनै दादा कनैं आयौ।

छोरौ कहै— दादाजी म्हारौ रोटी रौ बटकौ एक छोरै खोस लीयौ।

तब छोरा नैं डोकरौ कहै— अरे कठै गयौ ? छोरौ कहै— कूआ माँहे गयौ।

डोकरै विचार्यौ— खेत मैं तो रहिणौ, चोर हिल्या आछा नहीं। जब जेई लेनैं डोकरौ कूआ कनैं आयौ। पाणी माँहे देखै तो डोकरा रौ रूप दीसै। जांण्यौ छोरौ साचौ रे साचौ। दाढी मूछ वधी थकी, जडगबाज सरीखौ रूप देखनै बोल्यौ— ओतौ बूढलौ है रे बूढलौ, छोरौ नहीं। इम कही धूळ रौ घोबौ भर ऊपर न्हांखनै बोल्यौ— धूळ थारा धवळा मैं। बालक छोरा री रोटी खोसनै कितोयक काळ जीवसी। इम पोतारो आपौ ओळख्यौ नहीं, सो आपरा धवळा मैं ईज आप धूळ न्हाखी। इसौ मूर्ख।

(२९०)

झफौ

एक मूर्ख जाट, सो गायां-भैंस्या चरावै। उजाड मैं रहै। दाढी मूंछ माथा रा केस वध्या पिण खिजमत करावै नहीं। जब लोका इणरौ झफौ नांम दीधौ। स्त्री नैं झफा री वहू, यूं कहिनै बोलावै। झफौ दिने उजाड मैं रहै, राते घरै आवै।

एक दिन झफा री वहू नाई नैं कह्यौ— तू खिजमत करै क्यो नहीं।

जब नाई बोल्यौ— बाईजी, करावै कोय नहीं, जबरी सूं करू तो मारै।

जब आ बोली— उजाड़ मैं जाय जद खिजमत कर आव।

नाई उजाड मैं आयौ। झफौ नींद मैं पड़्यौ। नाई आयनै झफा रा हाथ-पग सैंठा बाध्या रखे जागै तो मारै ते माटै दाढी-मूछ माथा रा सर्व केस पाछणा सू उतार लीया। केस लेनै नाई घरै आयौ।

झफौ जाग्यौ। माथै मूंहढा रै हाथ फेर्यौ, केस दीठा नहीं। जाण्यौ, झफौ कठै गयौ कै गम गयौ कै हूं ई छू। इसौ भर्म ऊपज्यौ। जरै गाया भैंस्या रा नाम लेनै बोलाई— आव काळी, आव गोरी, आव पीळी। इम हेला पाड्या जद गाया-भैंस्या कनै आय गई।

जद झफै विचार्यो, गाया-भैंस्यां पिण मोनैं ओळख लीयौ तिणसू झफौ तो हू ईज छू पिण म्हारे दाढी-मूछा रा नै माथै रा केस नहीं तिण कारण झफौ हूं नहीं, सो गाया-भैंस्या भर्म मैं भूली दीसै छै, सो झफौ जाणै पिण हू तो झफौ नहीं। दोफारा गाया-भैंस्या लेई घरै आयौ।

जद लोक बोल्या– रे झफा ! गाया-भैंस्यां लेईनै वेगौ क्यू आयौ ?

जद झफै विचार्यो, लोक भोळीया भर्म मैं भूल गया। जाण्यौ गायां लारै तो झफौ ई छै। इम विचारनै बाजार मैं आयौ। बाजार रा लोका इमहि कह्यौ, जद आपरा वास मैं आयौ। जद बायां कातणौ करती थी ते बोली– झफा ! आज वेगौ क्यू आयौ? इम हिज मा-बाप कह्यौ, बहिन कह्यौ।

जद झपै विचार्यो, सर्व भर्म मैं भूल गया, कोई ओळखै नहीं पिण पकी ठीक तो स्त्री नैं हुसी। स्त्री ओळखै तो हू झफौ छू। इम धारनै स्त्री कनैं आयौ, घर बारै ऊभौ रही उतावळौ हेलौ पाड्यौ– झफा री वहू झफौ कठै है ?

जद स्त्री बोली– थै ईज तो छौ।

जरै झफौ बोल्यौ– भलौ ओळख्यौ हे म्हारी माता !

जद आ बोली– थारी स्त्री छूं तिणनैं माता कहियै कांई ?

जद झफौ बोल्यौ– अवकै बोली है तो दादी कहूला। इसा मूहर्ख।

(२९१)

खारौ वखांण, मीठौ वखांण

एक साहुकार नै स्त्री, दोनूं ई जणा। ज्या मैं स्त्री तो धर्म मैं समझै, धणी भोळौ, सो समझै नहीं। एकदा समै साधु मुनिराज पधार्या। स्त्री वखाण सुणवा आवै, नित्य वखाण सुणै। जद धणी बोल्यौ– हू पिण वखाण सुणवा आवूं।

जद स्त्री बोली– थांनैं समझ पडै नहीं।

जद औ बोल्यौ– हू तो जासू ईज।

जद स्त्री बोली– जावौ, चेतौ राखजौ।

जद औ गयौ। साधु मुनिराज नवकार सरू कीधौ नै औ नींद लेवा ढूकौ, सो नींद आई। साधां दया कही अनैं लोका जाजम झडकाई नै औ जाग्यौ। इण तो काई सुण्यौ नहीं। जाजम झडकाई देखनै औ घरै आयौ नै स्त्री पूछ्यौ– आज वखांण मैं काई भाव चाल्या ?

जद औ बोल्यौ– आज जाजम झटकावणियौ वखाण हुयौ।

जद स्त्री जांण लीयौ, इण तो नींद मैं काई सुणीयौ नहीं। दया री वेळा जाग्यौ दीसै।

दूजै दिन फेर गयौ। साधां नवकार सरू कीयौ नै औ ओटौ लेनैं नींद लेवा लागौ। दया कहीनै कुत्ती आय ऊंचौ पग कर मूहढा मैं मूत गयौ, सो मूहढौ खारौ हुय गयौ। अबै थूकतौ-थूकतौ आपरै घरै आयनै कह्यौ— आज तो साधा खारा-खारा वखाण सुणाया, सो हाल ताई मूंहढौ खारौ ईज है।

जद स्त्री जाण्यौ, आज मूंहढा मैं कुत्तौ मूत्यौ दीसै छै।

तीजै दिन फेर गयौ। फेर साधा नवकार कह्यौ नै औ नींद लेवा लागौ, सो बाकौ फाटौ अनैं स्त्री पिण वखाण सुणवा आई, सो दसेक पतासा ले आई। साधां दया कही, जद ई उवै पतासा इणरा मूंहढा मैं घाल दीया। स्त्री तो आपरै घरै आई। औ जाग्यौ नै घरै आयौ।

जद स्त्री पूछ्यौ— आज कांई भाव सुण्या ?

जद औ बोल्यौ— आज तो घणौ ईज मीठौ-मीठौ वखांण सुण्यौ, अजेस पिण मूहढौ मीठै रौ मीठौ छै।

पछै स्त्री सर्ब बात कही। इसा कांई वखांण सुणौ छौ। घणा ई वखाण सुण्या, घरै ई बैठा रहौ।

(२९२)

लकड़ौ कुण धरग्यौ?

एक वांभी हो, सो सासरै आणौ लेवा गयौ। जद इणरै कनै ४ रुपइया री तरवार ही, सो इण विचार्‌यौ तरवार रौ बोझ कुण ले जावै, अठै गाड जावू, सो पाछौ आयनै ले लेसू। इम विचार तरवार गाडनै सासरै चाल्यौ।

लारै अळगी ऊभी एक वाळीयौ देखतौ हो, सो इण विचार्‌यौ म्हारै कनैं कुहाडौ है, सो तो मेल देवू अनैं आ ४ रुपइया री तरवार दीसै, सो ले लेवू। इम विचार कुहाडौ मेलनै तरवार ले गयौ।

पछै वाभी आणौ लेनै पाछौ आयौ। जिहा तरवार गाडी, तिहा जायनै खोदवा लागौ तो कुहाडौ नीकळ्यौ। तब वाभी बोल्यौ— तरवार सीधी-सूधी मेल गयौ थो, वांकी-चूकी कुण करग्यौ ? जद वांभण बोली— जेठ मास का पड्या तावडा, सो काचौ लोह तो परगळ गयौ।

जद वांभी बोल्यौ— परघळग्यौ सो परघळग्यौ पिण लारै लकडौ कुण धरग्यौ। इसा मूहर्ख।

(२९३)

दूजां नैं दोष

एक सिरदार रै भाई बेटा नैं आंणौ लेवा नैं मेल्या। आंणौ लेनै पाछा आवता होळी रा गेहरीया ममा-चचा री गाळ्या बोलै। जद कोई दूजा लोक मूरुर्ख बोल्या— अरे इसी-तिसी रा इम गाळ बोलनै कह्यौ— ठुकरांणी तो बाजार मैं नीकळै नै थै गाळ खोटी बोलौ।

इम बीजा नैं वरजै पिण पोते गाळ बोलै तिणरी खबर पिण नहीं। इसा मूरुर्ख, बोलनै कहै अरे मूरुर्ख।

(२९४)

दाय पड़ै तो राखौ

एक लोभी कांमदार कनै जाट आयनै बोल्यौ— मूंहताजी ! मोनैं आप हाळी राखसौ ?

जब मूहतोजी बोल्या— तोनैं काई साखी आवै ?

जब जाट बोल्यौ (दूहौ)—

साखी सबदी कछु न जाणू, जाणूं मोटी साखौ ।
अढी सेर का रोटा खावूं, दाय पडै तो राखौ ।।

जब मूहतैजी विचार्‌यौ, भोळा भाव रौ चाकर रोट्या साटै काई मूहगौ ? म्हारै अनेक काम आसी। इम जाणनै राख्यौ। इणनैं अकल दीधी, सो पड़ी वस्तु उठावणी नहीं।

कितायक दिना सू मूंहतोजी सीयाळा मैं घोड़ी चढ कूती करवा चाल्या। जाट नैं साथै लीयौ। लारै तो जाट, अगाडी मूहतीजी चल्या जावै।

अवै तावडौ आयौ, सी उड्यौ, सो रुपइया री दुसालौ आपरै ओढवा रौ नीचै न्हांख्यौ। मन मैं जाण्यौ, सो जाट ले लेसी। अवै जाट दुसालौ लेनै विचार्‌यौ, मोनैं मूहतैजी कह्यौ— पडी वस्तु किणहि री लेणी नहीं, सो दुसालौ लेवू नहीं। इम विचारनै छोड दीयौ। घोडी लारै चल्यौ जावै। आगै मूंहतै कूतौ करी घोडी नैं नीलौ धान चरायौ। सझ्या री वखत हुई जद मूहता नैं ठड लागवा लागी, सो जाट कना सू दुसालौ माग्यौ।

जब जाट बोल्यौ— आप फुरमायौ पडी वस्तु किणहि री न लेणी, जिणसू म्हैं न लीधी।

जब मूहतौ बोल्यौ— जा रे हीयाफूट ! हींडोळा, पराई वस्तु न लेणी कही पिण घर की री कद ना कह्यौ। घर की तो ले लेणी, छोडणी नहीं।

जद जाट कह्यौ— ठीक मूहताजी सा, अबै घर की वस्तु उठाय लेसूं।

अबै पाछा घरै आवता घोड़ी लीद करवा लागी। जद जाट विचार्‌यौ, मूहतैजी कह्यौ छौ, सो घर की वस्तु नहीं छोडणी। इम विचारनै झोळौ माड्यौ। घोडी लीद करै, सो झोळा मैं घालै। इम करता आखी पोट लीद सू भरनै बांधी। अबै माथा ऊपर मेल बोझयां मरतौ रात्रि पौहरेक गई जद बोझां मरतौ आयौ।

जद मूहतौ बोल्यौ— मोड़ौ क्यूं आयौ ?

जद जाट कह्यौ— लीद ल्यायौ। बोझ घणौ, जिणसूं जेज लागी।

जद मूंहतौ बोल्यौ— लीद क्यूं ल्यायौ ?

जब जाट बोल्यौ— आप कह्यौ हो नीं घर को माल छोडणौ नहीं, सो हूं लीद री पोट बांधनै ल्यायौ।

जद मूंहतौ बोल्यौ— अरे हीयाफूट ! लीद नैं रोसी कै के करसी ?

अबै राजाजी सिघासण ऊपर बैठौ। मूंहढा आगै मूंहतोजी बैठा और अमराव-अमीर मोकळा बैठा है।

मूंहतीजी, जाट नैं कह्यौ— मूंहताजी नैं रोटी जीमवा नै बुलाय ल्याव।

जद जाट न्हाठौ थकौ आयनै सभा रै विषै बोल्यौ— मूंहताजी, मूहताजी! थांरी बेर थांनैं रोटला खावा बुलावै।

जब राजा आदि सभा रा लोक हसवा लागा। मूंहता नैं सर्म आई। सभा सू उठ जाट नैं आयनै कह्यौ— अरे दळद्री यू भाटौ न पटकणौ। धीरै हाथ जोडनै ऊभौ रहणौ। म्हैं साहमौ जोवा जिण वेळा एकांत बोलायनै धीरै कांन मैं कहिणौ। इम समझायौ।

कितायक दिन नीकळ्यां छतां मूहतोजी राज-सभा मैं बैठा, सो हवेली मैं लाय लागी। मूहतीजी जाट नैं कह्यौ— हवेली मैं लाय लागी है, सो मूहताजी नैं बोलाय ल्याव।

जद औ धीरै-धीरै चालतौ राजसभा मैं आयौ। हाथ जोड़नै ऊभौ। घणी वेळा हुई। जद किणहि कह्यौ— मूहताजी आपरौ चाकर ऊभौ है। जद मूंहतैजी सांहमौ जोयौ। जब जाट हाथ जोडनै बोल्यौ— मूहताजी सा, आप एकात पधारौ, म्हारै अर्य करणी है।

जद मूहतोजी एकांत आया— केह रे, है कांई ?

जद जाट बोल्यौ— आपरी हवेली मैं लाय लागी।

जद मूहताजी बोल्या— जा रे हीयाफूट ! इत्ती वेळा क्यू लगाई, आवत पाण उतावले क्यूं कह्यो नीं, माल बळग्यौ हुवैला।

जद जाट बोल्यौ— आप मोनैं कह्यौ हो नीं धीरे एकात अर्य करणी।

जद मूंहतौ बोल्यौ— लाय मैं धीरप न राखणी।

मूहतौजी चाकर सू लातर गयौ। पछै प्रधान इणनैं मूर्ख जाण लातर नै छोड दीयौ।

(२९५)

फेर कुण रोवै ?

एक साहुकार, सो परणीज नै प्रदेश गयौ। बारै वर्स ताई कागद समाचार दीया नहीं। मा-बाप, भाई-स्त्री आदि चिता करै पिण समाचार आया नहीं।

जरै किणहि द्वेषी उणरै नांमै दूजौ साहुकार आऊखौ पूरौ कीयौ, सो उणनैं लिख दीयौ। सो यां रोवा-पीटौ माड्यौ। चूडौ फोड़ लाबी पैहर खूणै बैठी। दोय वर्स तांई खूणै बैठी रही, घणौ दुख भुगत्यौ। अबै पियर ले गया, खूंणौ छोडायौ।

पनरमै वर्स लाखा रुपइया ले घोडा, रथ, म्याना लेइ पाधरौ सासरै आयनै समाचार मेल्या। जरै सुसरौ, सासु, साळा, साळीया सर्व राजी हुआ। चूड़ौ-चूदडी आदि वेस ले गैंहणा कपड़ा ले बाई कनैं आया। कह्यौ— बाई ! थारा भाग्य मोटा, सो थारौ भरतार कमायनै कुशले खेम घरै आया। औ चूडौ-चूदड़ी गैंहणा पहिर।

जब आ बोली— हू तो न पहिरू।

मा-बाप बोल्या— ए अभागणी, क्यू न पैहरै ?

जब आ बोली— म्हारौ रोयौ-पीट्यौ यू ही परौ जाय। फेर मरै तो खूणै बैसणौ पडै, रोवणौ पडै। तिणसू आगलौ रोयौ-पीट्यौ यू ही जावै।

इणनैं घणी समझाई पिण मानी नहीं। ए समाचार साहुकार सुण्या। आपरै घरै आयनै दूजी परणीज्यौ।

(२९६)

आप रहै सैंठौ, तो लोक रहै बैठौ

एक साहुकार बाप नैं बेटी सुमड घोडी लेई परगाम चाल्या, सो घोडी ऊपर बेटी चढ्यौ। बाप पगा चालै। आगै साहमा लोक मिल्या। त्या पूछ्यौ— ऊपर चढ्यौ ते कुण है ?

जद बाप बोल्यौ— म्हारौ बेटौ छै।

बेटा नैं पूछ्यौ— पाळी चालै सो कुण है ?

जद औ बोल्यौ— म्हारौ बाप छै।

जद लोक मिल्या ते बोल्या— जा रे हीयाफूट ! बाप डोकरौ तो पाळै चालै अनैं तूं मोट्यार माल घोडी चढ्यौ थकौ चालै। अबारूं ई इसौ अवनीत अजोग है सो बुढापै कांई चाकरी करसी ?

ए वचन बेटा नैं करडा लागा। जद बाप नैं ऊपर चाढ्यौ, पोतै पाळौ चालै। सो फेर लोक मिल्या, पूछ्यौ— घोडी ऊपर चढ्यौ ते कुण है ?

जद पुत्र बोल्यौ— म्हारौ पिता है।

जद लोक बोल्या— अरे जम डौसला, हीयाफूट ! डैण पोतै तो घोडी ऊपर चढ्यौ है अनैं बालक नैं पाळौ चलावै। था जिसौ ई कोई मूर्ख हुसी ? छोरौ लोही भरीजनै मरग्यौ है तो वस थारौ ई जासी।

जद दोई जणा विचार्‍यौ लोक तो आपां नैं निंदै घणा, सो दोनूं ई जणा ऊपर चढ्या। आगै जावतां फेर लोक मिल्या, ज्यां कह्यौ— थे कुण हो ?

जद ए बोल्या— महाजन हां।

जद लोकां कह्यौ— अरे घोडी भाडै की है कै घर की?

जद ए बोल्या— घोड़ी तो घर की छै।

जद लोक बोल्या— अरे पापी दुष्टी हित्यारा निरदेही सुभड़ घोड़ी ऊपर दोई जम बैठा। जाति तो महाजन पिण लक्षण कसाई रा।

जद बाप-बेटौ दोई पाळा चालै। घोडी खचाऊ लीधी। फेर आगै जावता लोक मिल्या। पूछ्यौ— थे कुण हो ? घोड़ी किणरी है ?

जद ए बोल्या— म्हांरी।

लोक बोल्या— जा रे हीयाफूट ! हींडोळा, घर घोडी नै पाळा चालौ ? था जिसा भोळा कुण होसी ?

ए वचन सुण्या सो दोहरा लागा। जद मारग छोडनै ऊजड पडीया, सो चोर मिलीया। सुभड घोडी अनैं धन-माल खोस लीयौ। लोकां री झूठी सीख मानैं तो ए फळ लागै।

आप हुवै भोळौ, तो लोक हुवै दोळौ ।
आप रहै सैंठौ, तो लोक रहै बैठौ ।।

(२९७)

पाप रौ धूप

एक जाट नै जाटणी, जिणा रै बेटौ हुवौ। सो एक महिना रौ थया ओडा मैं घाल नै लेकर खेत गई। रूख रै हेठै मेलनै काम करवा लागी अनैं जाट खेत दोळी बाड करै, हाथ मैं जेई।

बालक रोवा लागौ। जद जाटणी जाट नैं कह्यौ– बालक नैं रोवतौ राख।

जद औ बालक कनैं आयौ। मन मैं जाण्यौ, सो बालक नैं रमाऊ तो रोवतौ रहि जासी। इम चितव जेई सू बालक नैं हलावै, सो जेई पेट मैं पैस गई सो मर गयौ।

जाटणी आयनै देखै तो बालक मूऔ। जद जाटणी बोली– रे पापी ! म्हारा बालक नैं मार्‍यौ।

जद जाट बोल्यौ– पापण ! मोनैं किसी ठीक, सो तू पाप रौ धूप जणै छै।

पुत्र मूऔ लोका जांण्यौ, जद फिट-फिट करवा लागा। जगत मैं भाड हुवौ।

(२९८)

माथै धोती

एक जाट रै बेटौ मूर्ख। भैंस दोय-च्यार दिना मैं व्यावती जाणीनै तिणसूं घरै राखी, सो बेटौ भैंस नैं पाणी पावा ले जावै, पाछी ल्यावै।

इम करता इक दिन भैंस नैं पाणी पावा ले जावतां विचार्‍यौ– भैंस रै पाडी हुवै तो आछी। पाडी पिण माथै धोळौ टीकौ हुवै तो मनचाह्या मनोरथ फळै। इसी धारनै तळाव रा पाणी मैं ले गयौ। भैंस री पूछडी पकडनै आगै लीया जावै जद धोती खोलनै माथै वाधी।

जितरै भैंस व्याई। पाडी हुई। माथै धवळौ टीकौ देखनै राजी हुवौ। मोह अध थकौ पाडी नैं वाथ मैं घालनै ले चाल्यौ। लारै भैंस आवै। लोक मार्ग मैं मिलै, सो पूछै– काई है रे काई ?

जद औ कहै– म्हारी भैंस व्याई है।

जद लोक वोल्या– अरे छै काई रे ?

जद औ कहै– पाडी रे पाडी।

जद लोक कहै– रे माथे काई रे ?

जद औ कहै– टीकौ रे टीकौ।

लोक मिले जिणनैं योहिज जाब देवै। इम बाजार मैं आयौ। लोकां पूछ्यौ– जद योहिज जबाब दियौ। बाया वास मैं कातती थी, जठै आयौ। त्या पूछ्यौ जद औही जाब दीयौ। मा-बाप नैं पिण योहिज जाब दीयौ।

स्त्री आयनै मूहढा ऊपर दीधी। मूहर्ख, हीयाफूट, लजा रहित थारै माथै काई है ? जरै भागनै घर मैं धस्यौ।

(२९९)

चावणौ तो म्हनैं पड़ै

एक साहुकार महा आळसू। पीस-पोय रोटी कर चूरमौ करनै स्त्री मूंहढा मैं कवौ देवै जद औ टैंहका करतौ गिटै।

स्त्री बोली– पीसू पोऊं मूंहढा मैं कवौ देवू, अबै टैंहका क्यू करौ ?

जद आळसू बोल्यौ– रांड ! चावणौ तो म्हनैं ही पडै छै।

(३००)

तीज नै तेरस भेळी

एक ठोठ ब्राह्मण भण्यौ नहीं, सो कुळ गामड़ीया मैं रहै। पनरै वांस भेळा कर राख्या। सैहर मैं जायनै पूछ्यौ– आज कांई तिथि है ?

जद लोका कह्यौ– एकम है।

औ आपरै गाम आयनै एक वांसडी अळगी मेल्यी। लोक पूछै– आज काई तिथ ? जद वांस देखनै कहै– आज एकम है। इम बीज, तीज प्रमुख बतावै। एक दिन तीज कै दिन सैहर मैं ब्राह्मण नैं पूछनै तीन वास अळगा मेल्या। पछै औ तौ गाम बारै गयौ, लारै तेहनीं स्त्री बाहरौ देतां थका सगळा वास भेळा कर दीया।

एतलै उ ब्राह्मण गाम बारा सूं घर मैं आयौ एतलै किणहि मनुष्य आयनै पूछ्यौ– आज तिथ कांई है ?

जद वास सगळा भेळा पडीया देखनै बोल्यौ– आज तीज नै तेरस भेळी हुई।

जब उण पूछण वाळै जाण्यौ वडौ मूहर्ख है। तीज नै तेरस भेळी हुवै नहीं। तीज नैं बीज व्है अथवा तीज नैं चौथ भेळी हुवै पिण तीज नै तेरस भेळी व्है नहीं।

ए मूहर्ख ब्राह्मण री कथा।

□□□

हिन्दी

अनुवाद

गुलाब कुंवर की कथा

एक राज्य का राजा नि.सतान था। जब रानी गर्भवती हुई तो राजा का निधन हो गया। रानी ने पुत्री को जन्म दिया। रानी की गोद तो हरी हुई परतु पुत्र के बिना राज्य सूना था। तब रानी ने अपनी पुत्री को ही पुत्र के रूप में रखा। उसने महोत्सव मनाकर बधाइया बार्टी और पुत्री का नाम गुलाब कुवर रखा।

गुलाब कुवर बचपन से ही पुरुष का वेश रखने लगी। जब वह सात-आठ वर्ष की हुई तो पढ-लिखकर निपुण हो गई। पुरुष का पहनावा और पगडी धारण किए हुए गुलाब कुंवर घुड़सवारी में भी पारगत हो गई।

एक दिन वह उलटी लगाम वाले घोडे पर सवार हो गई। ज्यों-ज्यों लगाम खींचती, त्यों-त्यों घोडा रुकने की बजाय तेज दौडता। इस प्रकार वह घोडा बियावान जगल में पहुच गया। सूर्यास्त होने पर जब घोड़े की लगाम ढीली छोड़ी तो वह रुक गया।

तब घोडे से नीचे उतरकर गुलाव कुंवर ने जगल के फल खाए। पथरना विछाकर वहीं एक पेड के नीचे पौढ़ गई। तभी उस पेड़ के पखेरु आपस में वतियाने लगे कि यदि हमारी बींट (विष्टा) गिरने पर कोई उसे एकत्र करे और उसे घिसकर किसी की आखों में डाले तो अधे आदमी को भी दिखाई देने लगेगा। पखेरुओं की यह बात सुनकर गुलाव कुवर उनकी बींटों को पल्लू में वाधकर आगे चल पडी।

आगे जाने पर एक दूसरा शहर आया। वहां का राजा अधा था। तव उसने वैद्य का रूप धारण किया। उसे देखकर किसी ने राजा के पास जाकर कहा— महाराज ! शहर में एक पुण्यवान वैद्य आया है।

तव राजा ने गुलाव कुवर को वुलवा कर उससे कहा— अरे वैद्य ! यदि तू मेरा अधापन मिटा दे तो आधा राज्य तुझे सौंपू, साथ ही मेरी कन्या का विवाह भी तेरे साथ कर दूगा।

तव उसने कहा— ठीक है महाराज !

पखेरुओं की वींटें घिसकर उसने राजा की दोनों आखों में उसका अजन डाला। पलक झपकते ही राजा की दोनों आखें खुल गई। इससे प्रसन्न होकर राजा ने वैद्य के साथ अपनी कन्या का विवाह करके उसे आधा राज्य सौंप दिया।

उमेश-मल मधाजेन/५७

अब गुलाब कुवर और राजा की कन्या महल में पहुची। राजकुमारी उसके सामने हाव-भाव करने लगी तो पुरुष वेश धारण किए हुए गुलाब कुंवर ने कहा– अभी तो मैंने सौगध ले रखी है। एक वर्ष बाद ही अपना मिलन हो सकता है।

अब वे दोनों सुखपूर्वक वहा रहने लगीं। वह घुडसवारी में समय व्यतीत करने लगी। उसे देखकर लोग बातें करने लगे कि राजा का जमाई तो स्त्री लगता है। राजा ने जब यह बात सुनी तो उसने इस बारे में अपनी पुत्री को पुछवाया परंतु पुत्री ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया।

तब राजा ने तय किया कि किसी प्रकार इस बात की परीक्षा तो करनी ही है। सुबह फाग खेलने के लिए सारे सरदार, मैं और गुलाब कुंवर स्नान करेंगे। सभी को पहनने के लिए तीन-तीन हाथ का अगोछा देंगे, तब असलियत का पता चल जाएगा। ऐसा विचारकर राजा अपने महल में जाकर सो गया। गुलाब कुवर भी अपने महल में जाकर सो गई।

रात्रि के अंतिम प्रहर में कुलदेवी ने प्रगट होकर पूछा– गुलाब कुंवर ! सो रही है या जाग रही है ?

तब गुलाब कुंवर बोली– हा, जाग रही हूं।

कुलदेवी ने कहा– राजा ने सुबह होने पर ऐसा करने का विचार किया है।

गुलाब कुवर ने पूछा– अब क्या करू ?

देवी ने कहा– घुडसवारी करने के बहाने जंगल में दूर चली जाना।

अब प्रभात होते ही वह घोडे पर सवार होकर जगल की तरफ चली गई। उजाड में ही सूर्यास्त होने पर वह पूर्व की भांति सो गई। वहां पर चकवा-चकवी दूर बैठे-बैठे आपस में बतिया रहे थे।

चकवी ने कहा– कह रे चकवा बात, ताकि कटे रात।

तब चकवा बोला– वटवृक्ष के नीचे पखेरुओं की जो बींटें पडी हैं, उन्हें घिसकर किसी कोढी के शरीर पर लेपन किया जाए तो उसका कोढ मिट जाएगा।

गुलाब कुंवर पूर्व की भांति उन बींटों को एकत्र कर दूसरे राज्य में पहुच गई। वहा उसने बींटों की औषधि से कई जनों का कोढ मिटा दिया। सयोगवश उस शहर का राजा भी कोढ़ी था। उसने भी उस वैद्य को बुलवाया। उसने बींट का लेपन कर राजा का कोढ भी मिटा दिया। तब उस राजा ने भी गुलाब कुवर को आधा राज्य देकर अपनी कन्या का उससे विवाह किया।

गुलाव कुवर ने पूर्व की भांति इस राजकन्या से भी सौगध की बात कही। अव लोग पहले की तरह खुसर-फुसर करने लगे। राजा ने यह समाचार सुनकर गुलाब कुवर की परख करने के लिए पलग पर तकिए लगाकर सिराहना ऊचा रखा। क्योंकि स्वभावत स्त्री सोते समय सिराहना ऊचा नहीं रखती।

कुलदेवी ने प्रकट होकर उसे फिर समझा दिया कि वह सिराहने की तरफ सोए। उसे सिराहने की तरफ सोया देखकर राजा की शका दूर हो गई। राजा ने उसे राजकुमार ही जाना। फिर भी पुख्ता परख करने के लिए लेखनों की गठरी भेजी।

तव देवी ने गुलाब कुंवर को कहा— लेखने निकालते रहो। अभ्यास करते रहने से लेखना निकालना भी आ जाएगा। देवी ने आगे कहा— अब तुम यहा मत रहो।

देवी के कहे अनुसार गुलाब कुवर सूर्योदय होने के साथ ही घोड़े पर सवार होकर आगे चल पडी। आगे एक शहर आया। गुलाब कुंवर उस शहर के तालाब की पाज पर जा बैठी। उसी दिन उस शहर के राजा का निधन हो गया। वह भी नि सतान था, अत उसके उत्तराधिकारी के चयन हेतु हथिनी का शृगार किया गया। वह हथिनी घूमती-घूमती उस तालाब की पाज पर पहुची। उसने गुलाब कुंवर के गले में वरमाला डाल दी। पुरुष वेश धारण किए हुए गुलाब कुवर के साथ उस राजा की राजकुमारी का विवाह भी कर दिया गया।

अब गुलाब कुवर ने उस राज्य का कार्यभार संभाल लिया। पूर्व की भांति उसने इस राजकुमारी को भी सौगंध की बात कही। एक दिन गुलाव कुवर घुडसवार होकर शिकार पर निकली। आगे जगल में उसे एक अन्य राज्य का राजकुमार मिला। वह राजकुमार वहुत बुद्धिमान था। उसे पता चल गया कि गुलाब कुवर पुरुष के वेश में राजकुमारी ही है। गुलाव कुंवर भी उस राजकुमार पर मोहासक्त हो गई। दोनों ने एकात में बातचीत कर उस वियाबान जंगल में ही विवाह कर लिया।

गुलाब कुवर उस राजकुमार के साथ अपने महल में आई। सत्य उद्घाटित करते हुए राजकुमारी को भी उसने वता दिया कि यह राजकुमार ही अपन दोनों का पति है। इस प्रकार गुलाव कुंवर ने पुरुष वेश में जिन जिन राजकुमारियों से विवाह रचाया था, उन सभी को इकट्ठा किया और अपनी नगरी में लौट आई। अपनी माता को सारे समाचार सुनाए। राजकुमार को राजगद्दी पर वैठाया। दो राजकुमारियों के माता-पिता ने साधुव्रत अगीकार किया। उनके पुत्र नहीं था, अत उन्होंने अपना राज्य भी उस राजकुमार को ही सौंप दिया।

अब वह राजकुमार चारों ही राज्यों का राज-सुख भोगने लगा। यों करते-करते कुछ समय व्यतीत हुआ तो वहां साधु-मुनिराज पधारे। उनकी वाणी और व्याख्यान सुनकर गुलाब कुंवरी इत्यादि चारों रानियों और राजा ने पुत्र को राज्यभार सौंपकर साधुव्रत अगीकार किया। सत्कर्म करते हुए पांचों ही मोक्ष को प्राप्त हुए। यह सारा गुलाब कुवरी का ही पुण्य-प्रताप था। गुलाब कुवरी पुण्यवान थी, अत वह जहां भी गई वहां उसके मनोवांछित कार्य सिद्ध हुए।

(२५२)

धन्ने का भाग्य

एक सेठ के चार पुत्र थे। लाखों रुपयों का कारोबार था, लेकिन अचानक व्यापार में घाटा लग गया। माल से लदे जहाज डूब गए। नौकर चाकरों ने धन दबा लिया। हुंडिया बंद हो गईं। अब तो लोगों का कर्ज चुकाना ही बाकी बचा था। साहूकारे की साख मिट गई। कर्ज मिलना भी बंद हो गया।

बेबस साहूकार फेरी का धंधा करने लगा। गाव-गांव जाकर नमक, तेल और तबाखू बेचने लगा। उसके चारों पुत्र भी अब बड़े हो गए परतु उनके विवाह के लिए कोई संबध नहीं मिल रहा था।

एक बार वह साहूकार किसी गांव में गया। आगे रसोई करने वाली महिलाएं मिलीं। साहूकार ने उनसे कहा— मेरे पुत्रों का कहीं सबंध तो करवाओ। तब उन्हें साहूकार पर दया आई। उन्होंने साहूकार के तीन पुत्रों की अलग-अलग गाव में सगाई करवाई। सगाई करके साहूकार अपने शहर लौट आया। अब उसने शहर के तीन यशस्वी साहूकारों की दूकानों पर जाकर उनसे कहा— आप लोग एक-एक हजार रुपए उधार दे दीजिए ताकि मैं अपने् तीन पुत्रों का विवाह कर सकूं। परदेश जाकर मैं आपके रुपए ब्याज सहित लौटा दूंगा। तब उन तीनों साहूकारों को दया आई और उन्होंने एक-एक हजार रुपए दे दिए।

अब उस साहूकार-ने पुत्रवधुओं के लिए गहने बनवाकर तीनों पुत्रों का विवाह किया। घर में पुत्रवधुएं आईं। अब साहूकार के चौथा और सबसे छोटा पुत्र धन्ना ही कुंवारा था। घर में खाने वाले नौ जनें हो गए। तब साहूकार ने अपने तीनों विवाहित पुत्रों को कमाने के लिए परदेश भेज दिया। छोटे पुत्र धन्ने को पढ़ने के लिए भेजा।

धन्ना पढ़-लिखकर फारसी आदि कई भाषाओं का जानकार हो गया। तव धन्ने ने अपने पिता से कहा— पिताजी, आप अब बुजुर्ग हो गए हैं। गाव-गाव

घूमकर कमाने की आपकी उम्र नहीं रही। अब आप घर बैठकर आराम कीजिए और मुझे दो सौ रुपए दीजिए जिनसे मैं यहीं छोटी-मोटी दूकान कर लूंगा।

तब तीनों पुत्रवधुओं के थोडे-थोड़े गहने देकर दो सौ रुपए इकट्ठे किए और इन रुपयों से छोटी-सी दूकान कर ली। इससे घर का गुजारा चलने लगा।

उसी शहर में एक बहुत धनवान सेठ था परंतु उसके कोई पुत्र नहीं था। सेठानी का स्वर्गवास हो गया और सेठ बूढा हो गया। उसने मन में विचार किया कि मेरे मरने के बाद मेरा सारा धन रिश्ते-नाते वाले ही खाएगे, अत. कोई ऐसा उपाय किया जाए जिससे कि उनके हाथ एक कौड़ी भी न लगे। यह विचारकर उसने एक बढई को बुलवाया। साहूकार ने उस बढ़ई को कहा कि लकड़ी का एक ऐसा पलग बनाना है जिसके पागे और ईस-ऊपले अंदर से खोखले, परंतु मजबूत हों। वह बढई, साहूकार के कहे अनुसार पलंग बनाकर ले आया। अब सेठ ने हीरे-पन्ने और माणक-मोती आदि अपना सारा जवाहरात उस पलंग के पागों और ईस-ऊपलों में भर लिया। पलंग को जोड़कर वह उसी पर सोने लगा।

एक दिन वह सेठ बीमार पड़ गया। तब उसने अपने नाते-रिश्तेदारों से कहा कि मेरे मरने पर मुझे इस पलग सहित जला देना। अपने रिश्तेदारों को ऐसा समझाने के कुछ दिनों बाद उस सेठ ने आयुष्य पूर्ण किया तो नाते-रिश्तेदार उसे पलग सहित लेकर जलाने के लिए ले गए। जब वहां सेठ को पलंग सहित अग्नि के समर्पित किया जाने लगा तो साथ में गए हुए अन्य लोग उस सेठ के नाते-रिश्तेदारों की निदा करने लगे। वे कहने लगे कि इतने सम्मानित साहूकार को पलग सहित जलाते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

तब उस सेठ के रिश्तेदारों ने लोगों को समझाया कि सेठजी की अंतिम इच्छा के अनुसार ही इन्हें पलग सहित जलाया जा रहा है। इन्होंने मरने से पहले कहा था कि यदि ऐसा नहीं किया गया तो तुम सभी मेरे गुनहगार होवोगे।

इस पर लोगों ने कहा कि शमशान तक पलंग सहित ले आए तो कोई बात नहीं, अब यह मेहतरों के काम आ जाएगा। तब इन्होंने पलंग एक तरफ रखकर सेठ की अंत्येष्टि कर दी और अपने घर लौट आए।

अब मेहतर उस पलंग को बेचने के लिए बाजार में लाए। जब वे धन्ना की दूकान के आगे आए तो धन्ना बोला– इस पलग का क्या लोगे ?

मेहतरों ने कहा– पाच रुपए।

तब उसने चार रुपए देकर वह पलग खरीद लिया। लोग इकट्ठे होकर

धन्ने को खरी-खोटी सुनाने लगे— अरे दरिद्र ! महाजन का पुत्र होकर मरे हुए का पलंग खरीद लिया और वह भी श्मशान-घाट का।

धन्ना बोला— जैसे इतने लोग श्मशान में गए, वैसे पलग भी श्मशान में गया।

तब वे बोले— लोगों ने तो स्नान कर लिया, जिससे वे शुद्ध हो गए।

धन्ने ने कहा— मैं भी पलंग को स्नान करवा दूगा, जिससे यह भी शुद्ध हो जाएगा। सुनो, हम तो निर्धन हैं भाइयो ! अत लखपति के पलग पर सोने का ऐश्वर्य भोगेंगे।

तब लोगों ने जाकर धन्ने के बाप से कहा— तेरे पुत्र ने ऐसा अनुचित कार्य किया। तब वृद्ध पिता ने आकर पुत्र को बहुत समझाया, परतु उसने पिता को वही जवाब दिया, जो अन्य लोगों को दिया था।

अब उस पलग को स्नान करवाकर पिता-पुत्र ने उसे दूकान में ले जाकर गिराया। गिरने से उसकी ढेबरी (नट) अलग हो गई और हीरे-पन्ने, माणक-मोती आदि जवाहरात का ढेर लग गया। तब दूकान का दरवाजा बद कर पिता-पुत्र बडे खुश हुए। रात्रि के समय धीरे-धीरे सारे जवाहरात घर ले गए।

एक हीरा बेचने से ही उन्हें उसके बहुत रुपए मिल गए। धन-सपन्न होने पर उसने लोगों से कहा— पुत्र परदेश गए हुए हैं, जिन्होंने धन-माल भेजा है। जब कर्जदाताओं ने अपने रुपए लौटाने के लिए कहा तो सेठ ने ब्याज सहित सभी का कर्ज चुका दिया। तीनों पुत्रवधुओं को भी पीहर से बुलवा लिया और उन्हें सोने-जड़ाव के गहने पहनाकर पीला कर दिया। भाभियां अपने देवर धन्ने के गुणगान करने लगीं। वे धन्ने को लालजी ! लालजी !! कहते थकती नहीं थीं। बडे घराने में उसका विवाह करवाया।

धन्ने ने कहा— पिताजी ! अब तीनों भाइयों को भी यहा बुलवा लीजिए।

तब पिता ने तीनों पुत्रों को समाचार भिजवाए कि अपने पास खूब धन माल हो गया है, अत समाचार मिलते ही घर जल्दी आना।

तीनों भाइयों ने जो दो-दो सौ रुपए कमा रखे थे उन्हें लेकर वे तीनों अपने शहर लौट रहे थे। शहर सिर्फ एक कोस रह गया था कि रात्रि हो गई। रात्रि में चोर मिले, जिन्होंने उनका धन और कपडे छीन लिए और उन्हें निर्वस्त्र छोडकर चले गए। तब उन्होंने एक राहगीर से कहा कि पास ही के शहर में हमारे पिता रहते हैं। तुम जाकर उन्हें कहना कि तुम्हारे पुत्र अमुक जगह बैठे हैं।

समाचार मिलने पर छोटा भाई धन्ना अपने तीनों भाइयों को लिवाने गया। उन्हें वस्त्राभूषण पहनाकर बडे मान-सम्मान के साथ घर ले आया।

अब चारों ही भाई भली भाति सासारिक सुखों का उपभोग करने लगे। घर में धन्ने का विशेष आदर-सम्मान था। उसे तीनों भाभिया और मा-बाप लालजी ! लालजी ! विशेषण से सबोधित करते थे। यह देखकर तीनों बडे भाई मन ही मन कुढने लगे। वे सोचने लगे कि घर में हमारा हुक्म तो चलता ही नहीं है। हमारे लिए जो वस्त्राभूषण करवाए उनकी तो खबर है कितु घर में धन-माल कितना है, इसकी हमें कोई खबर नहीं, अत धन्ने को मार डालना चाहिए। तीनों भाइयों ने मन में इस प्रकार का विचार किया।

एक दिन धन्ना अपनी सबसे बडी भाभी की गोद में आकर बैठ गया। तब भाभी उसके सर से जुए निकालते हुए बोली-- लालजी ! मेरी गोद में सोकर नींद ले लो। यों कहकर भाभी मन में विचार करने लगी कि देवरजी ने तो ऐसे गुण किए और ये (तीनों बडे भाई) पापी ! गुलाब के फूल जैसे छोटे भाई को मारना चाहते हैं। ऐसा विचार आते ही उसकी आंखों से आसू छलक पड़े। अश्रुओं की बूंदें धन्ने के ऊपर गिरीं। तब उसने अपनी भाभी की तरफ देखा। उसकी आर्द्र आखें देखकर धन्ने ने पूछा-- हे भाभी ! आप तो मेरी माता के स्थान पर हैं, आपको किस बात का दु ख है, सो कहो।

वह बोली-- लालजी ! आपके पुण्य-प्रताप से हमारे तो सभी बातों का आनन्द है।

उसने हठपूर्वक पूछा तो भाभी ने सारी बात विस्तार से बतलाई। उसने धन्ने को आगाह किया कि तुम्हारे भाई तुम्हें मारेंगे। इसी कारण से मेरा मन दुखी है।

तब वह बोला-- मुझे दस्त लग रही है, अत पानी का लोटा भरकर लाओ।

तब उसे पानी से भरा लोटा दे दिया। अब धन्ना पानी का लोटा लेकर निकल पड़ा। सारे सुख और धन-दौलत छोडकर वह दौडता जा रहा था। लोटे का पानी पी गया परतु प्यास बुझी नहीं। प्यास सताने पर वह एक स्थान पर बैठ गया। अब और आगे चलना उसके वश की बात नहीं थी। उसने कुछ देर विश्राम किया। पास ही एक खेत में किसान हल जोत रहा था। उसके पास जाकर धन्ने ने कहा-- मुझे प्यास लगी है, पानी पिलाओ।

किसान ने कहा-- वह सामने तलाई दिखाई दे रही है, तुम वहा जाकर पानी पी आओ। मैं तो अभी हल जोत रहा हू।

धन्ना बोला— तुम्हारा हल मैं जोत लूगा। तुम जाकर तलाई से पानी ले आओ, प्यास के मारे मैं तलाई तक जाने में असमर्थ हू।

तब किसान अपना हल धन्ने को सौंपकर स्वय पानी लाने गया। पीछे हल जोतते समय हल जमीन में अटक गया। धन्ने ने बहुत प्रयत्न किया परंतु हल आगे चला ही नहीं। किसान को पानी लेकर लौटते हुए देखकर धन्ने ने सोचा कि हल तो मैं जोत नहीं पाया, अत किसान नाराज होगा। यों सोचकर वह किसान के सामने गया। उसने पानी से प्यास बुझाई और लोटा भरकर वहा से आगे चल पडा।

पीछे किसान अपने हल के पास पहुंचा तो हल को जमीन में अटका हुआ देखा। उसने बैलों को हांकते हुए हल आगे चलाया। तब जमीन में से मोहरों का चरु निकला। मोहरें देखकर किसान धन्ने के पीछे दौडा और उसके पास पहुचकर बोला— भाईजी ! आपके भाग्य से मोहरों का चरु निकला है, अत. उसे आप लें।

तब धन्ना बोला— इसे तू अपने पास रख और मैं कहता हू वैसा कर। जिनधर्म अंगीकार कर, जिससे तेरे पास खूब धन-माल हो जाएगा। हल जोतना और खेती करना छोड़ ।

इस प्रकार उस किसान को जिन-धर्म का अनुयायी बनाकर धन्ना आगे चल पडा। किसान मोहरें लेकर अपने घर आ गया। अब वह लोगों के बीच वोहरा बन गया। धर्म-ध्यान करने से सुखी हो गया।

उधर धन्ना एक शहर में पहुचा। वहां वह एक तालाब की पाज पर सो रहा था। उसी समय उस शहर के राजा ने आयुष्य पूर्ण कर लिया, अत हथिनी का शृगार किया गया। प्रजा ने तय किया कि हथिनी जिसके गले में वर माला डालेगी, वही अपना नया राजा होगा। उसके साथ ही राजा की कन्या का विवाह भी कर देंगे।

अब वह हथिनी घूमती घूमती शहर के बाहर जाकर उस तालाब की पाज पर पहुंची। वहा सोए हुए धन्ने को उठाकर उसके गले में वरमाला डाली। लोगों ने बडे मान-सम्मान के साथ धन्ने को शहर में लाकर राज-सिंहासन पर बैठाया। राजकुमारी का विवाह भी उसी के साथ कर दिया। धन्ना न्याय और नीति-निपुणता के साथ राज्य का सचालन करने लगा। इससे उसकी ख्याति और कीर्त्ति देश-परदेश तक फैल गई।

अब धन्ना राज्य कर रहा था, अत उसने अपने लिए अलग महल का निर्माण शुरू करवाया।

उधर धन्ने के पिता सोच करने लगे। उन्होंने धन्ने को सभी जगह ढूढा परतु उसका कहीं अता-पता नहीं चला। एक बार धन्ने के घरवाले तो सोच में डूबे बैठे थे, तभी घर में चोर घुस आए। सारा धन-माल ले गए। साहूकार के घर पहले जैसी निर्धनता आ गई। पेट पालने के लिए पुत्रवधुओं के गहने तक बेच डाले। अब घर में खाने के लिए कुछ नहीं बचा। दु खी होकर परिवार के सभी नौ सदस्य मजदूरी हेतु परदेश जाने के लिए रवाना हुए।

रास्ते में लोग कबूतरों को जो दाना डालते, उन्हीं दानों को चुनकर ये राबडी बनाकर पीते और आगे चल पडते। चलते चलते एक शहर आया, जहा ये लोग मजदूरी पर लगे। इन्हें एक-एक टक्का मजदूरी मिलती थी परतु इतने से पेट नहीं भरता। जब इन्होंने दूसरे मजदूरों से सुना कि राजा धनसिह अपने शहर में नया महल बनवा रहा है और मजदूरी दो-दो टक्के देता है तो ये लोग उस शहर में गए। वहा उस निर्धन सेठ के तीनों पुत्र और उनकी पुत्रवधुएं मजदूरी पर लगे। पत्थर उठाकर लाने लगे। एक दिन पिता को भी दिहाडी पर साथ ले आए।

तब कोटवाल बोला— यह तो वृद्ध आदमी है, इससे पूरा काम होगा नहीं, अत इसे एक टक्का ही देंगे। इस प्रकार वाद-प्रतिवाद करने लगे।

उसी समय राजा महल देखने आया। अपने भाई-भाभियों और पिता को पहचानकर वह बोला— इस वृद्ध व्यक्ति को दो टक्के दिहाडी दो। फिर उसने वृद्ध से कहा— बाबा ! तुम इतना कष्ट क्यों उठा रहे हो ? मेरे महल की प्रोल में प्रहरी के रूप में बैठे रहना।

वृद्ध प्रसन्न होकर महल में चला गया। अब उसे स्नान करवाकर नए वस्त्राभूषण पहनाए। सिरख-पथरने सौंपकर उसे मंशा भोजन खिलाने लगे। वृद्ध अपने आपको महासुखी मानने लगा।

एक दिन राजा ने उस वृद्ध को बुलवाकर कहा— तुम्हारी पत्नी को कष्ट भोगने पड रहे होंगे, अत. उसे भी यहा बुलवा लो।

तब वृद्ध ने अपनी पत्नी को भी वहा बुलवा लिया। इन दोनों को राजा ने एक महल सौंप दिया। वृद्धा को भी वस्त्राभूषण पहनाकर मशा भोजन खिलाने लगे। वह भी सुखी हो गई। राजा ने कोटवाल से कहा— मजदूरी पर लगे हुए इन छह मनुष्यों को एक महीने तक दिहाडी मत देना।

अब राजा ने उस वृद्धा को बुलाकर कहा— तुम्हारे ये तीन ही बहुए हैं या चार ?

तब वह वृद्धा रोती हुई बोली— महाराज ! बहुए तो चार हैं परतु चौथी बहू बहुत सुकोमल है, सो उसे तो घर से बाहर नहीं निकालते। वह तो हम सभी को खाना बनाकर खिलाती है।

इस पर राजा ने कहा— उसे भी यहां बुलवा लो। वह मेरे यहा भी रसोई बना लेगी।

तब सास बहू को बुलाने गई। बहू बोली— मैं तो राजा की रसोई करने नहीं आऊगी। मुझे तो शील-धर्म का पालन करना है। वृद्धा ने लौटकर राजा को समाचार कहे। राजा ने कहा— तुम तो उसे किसी प्रकार यहा ले आओ।

वृद्धा अपनी बहू को जबर्दस्ती ले आई। उसने अपनी सास का कहना तो मान लिया परतु मन में मरने का निश्चय करके आई।

अब राजा ने अपनी रानी से कहा— हम तो आज इसके हाथ का बना हुआ खाना खाएगे।

रानी ने आकर उससे कहा— तुम हुजूर के लिए खाना बनाओ।

उसने खाना बनाया। राजा ने खाया। प्रसन्न होकर उसने रानी से कहा— आज छक्कर खाना खाया है। इसलिए तुम इसे भी अपने बराबर वस्त्राभूषण पहना दो।

रानी को बडा आश्चर्य हुआ परतु महाराज के हुक्म का अनादर कैसे करे, अत. वह उस वृद्धा की बहू को भी अपने बराबर वस्त्राभूषण पहनाने लगी। इस पर वह बोली— मैं तो ये आभूषण नहीं पहनूगी। भला, ऐसे कीमती गहने मेरे किस काम के ?

तब रानी ने इसे शीलवती समझकर राजा को समाचार कहलवाए— महाराज ! वह तो गहनें पहन ही नहीं रही है।

राजा ने अपनी रानी से पूछा— क्या तुम्हारे अंदर इतनी भी कला नहीं है कि उसे गहने पहनवा सको ? फिर तुम और क्या काम करोगी ?

रानी ने आकर कहा— तुम मेरा कहा मानकर ही यह गहने पहन लो।

तब वह बोली— हे महारानीजी ! राजाजी के मन में तो दुष्ट-परिणाम है और आप उनकी दलाली कर रही हो ? मैं तो राजा के प्रति कभी मन में वछा ही नहीं रखती। मेरे लिए तो पर-पुरुष भाई और पिता के समान है। मुझे मरना मजूर है परतु अपने शील को खंडित नहीं होने दूगी।

तब रानी ने उसे सती जानकर कहा— बहन, तुमने जब मरने का निश्चय कर ही लिया है तो मेरा कहा मानकर ही इन गहनों को पहन ले।

रानी के कहने पर उसने गहने पहन लिए। रानी ने जाकर सारे समाचार राजा से कहे, जिन्हें सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मन में जान लिया कि है तो सती स्त्री, अत अब इससे ज्यादा दूरी क्यों रखू ?

अब राजा ने रानी से कहा– पानी के चरु गर्म करवाओ। मैं महल में स्नान करूगा। रसोई बनाने वाली को भेज देना, सो स्नान करते समय वह मेरी पीठ मलेगी।

रानी ने आकर कहा। तब वह बोली– अब मैं तो जीवित नहीं रहूगी।

रानी बोली– बहन ! मैं राजा को वचन दे चुकी हू, अत तुम्हें जाना तो पडेगा।

तब वह बोली– महारानीजी ! आपका दिमाग तो खराब नहीं हो गया है, आपको यह क्या उलटी सूझी है।

रानी ने कहा– तुम जाओ, जो होना है, वह होकर रहेगा।

अब वह राजा के पास पहुची। राजा ने कहा– मेरी पीठ पर हाथ फेरो।

उसने हाथ जोड़कर प्रार्थना की– महाराज ! मैं तो रसोई बनाने वाली हू। मेरे हाथ खुरदरे हैं और आप तो राजा हैं, अत· बडे सुकोमल हैं।

फिर वह बोली– मैं तो पर-पुरुष को स्पर्श भी नहीं करती। यदि आप मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर करेंगे तो मैं अपनी जिह्वा खींचकर जान दे दूगी।

जब उसने राजा की पीठ पर मस्से और तिल जैसे निशान देखे तो मन में विचार किया कि मेरे पति की पीठ पर भी ऐसे ही चिह्न थे। अपने पति की याद आने पर उसकी आखों से आसू छलक पडे। अश्रुओं की बूंदें राजा की पीठ पर गिरीं। तब राजा ने उससे पूछा– तुम्हारी आखों में आसू क्यों आए ?

वह बोली– बस, यू ही आ गए।

राजा ने कहा– सच सच बतलाओ।

तब वह बोली– आपकी पीठ पर मस्से और तिल के जैसे निशान हैं वैसे मेरे पति की पीठ पर भी थे। ये निशान देखकर ही मेरी आखों में आसू आए हैं।

राजा ने कहा– तुम्हारा पति कहां है ?

तब उसने रोते हुए सारा वृत्तात सुनाया।

राजा ने उससे कहा– मैं ही तुम्हारा पति हू। पलग और जवाहरात आदि की सारी बातें बताते हुए उसने पूछा– अपने पास तो खूब धन-माल था। वह सारा कहा गया ?

तव उसने बताया– सभी परिजन आपकी चिता कर रहे थे। तभी घर में चोर घुस आए। सारा धन-माल चुराकर ले गए।

इस प्रकार उसने पीछे की सारी बात बतलाई। फिर राजा को अपना पति जानकर उसके चरण स्पर्श किए। राजा ने भी अपनी पत्नी को पूरा मान-सम्मान दिया और उसके साथ सुखपूर्वक रहने लगा। उसे पटरानी बना दिया। इससे पूर्व पटरानी कुढने लगी परतु उसका वश नहीं चला। वह दु खी हो गई। तब पटरानी ने राजा से कहा— पूर्व पटरानी को प्रसन्न करोगे तभी आपसे बोलूगी अन्यथा आप से बात भी नहीं करूगी। तब राजा ने अपनी पूर्व पटरानी को बुलाकर सारी बात बतलाई। सुनकर वह भी खुश हो गई।

उधर तीनों भाइयों, उनकी पुत्रवधुओं और मा-बाप ने जब यह सुना कि राजा ने धन्ने की बहू को अपनी रानी बनाकर रख लिया है तब उन्हें बडी चिता हुई। सारे परिजन इकट्ठे होकर राजा के पास पहुचे और हाथ जोडकर उससे प्रार्थना करने लगे— महाराज, आप ऐसा अन्याय करते हो ! हमारे भाई की बहू को रानी बनाकर महल में रख लिया ? हमें मजदूरी पर तो आपकी इच्छा हो तो रखिए परंतु हमारे घर के सदस्य को हमें सौंपिए।

तब राजा ने सारा वृत्तात कह सुनाया। सुनकर तीनों बड़े भाई, छोटे के पैरों में गिर पडे। तब राजा के रूप में धन्ने ने अपने भाइयों को कहा— तुमने तो मुझे मारने की ठान रखी थी, अत अब मेरे साथ तो तुम्हें रखूंगा नहीं।

अपने भाइयों को दस-दस हजार का पट्टा देकर अलग भेजते हुए धन्ने ने उनसे कहा— अब तुम्हें मेरी सेवा-चाकरी में वापस आने की जरूरत नहीं है।

काफी समय बीतने पर साधुओं का आगमन हुआ। तब राजा-रानी ने अपने पुत्र को राज्य का कार्यभार सौंपकर साधुओं से दीक्षा ली और सत्कर्म करते हुए देवलोक में गमन कर गए।

(२५३)

दो बहिनों की कथा

दिल्ली जैसे शहर में एक बादशाह था। उसके चार शाहजादे थे। चारों पढे-लिखे। बडे होने पर बादशाह ने उनसे पूछा— अब क्यों न तुम्हारा विवाह कर दिया जाए ?

तब वे बोले— हम तो ऐसे विवाह नहीं करेंगे। हम हमारी इच्छा से तीर चलाएगे और वह तीर जिसकी हवेली में जाकर गिरेगा, उसकी कन्या से विवाह करेंगे।

बादशाह ने अपने बडे बेटे से कहा– ठीक है, तुम तीर चलाओ।

तब उसने तीर चलाया जो एक काजी के घर में जाकर गिरा। तब हलकारों ने आकर बादशाह से कहा– हुजूर, तीर तो एक काजी के घर में गिरा है।

तब बादशाह ने हुक्म दिया– काजी को बुलवाओ।

काजी हाजिर हुआ। उसने हाथ जोडकर बादशाह से पूछा– हुजूर ने कैसे याद किया ?

बादशाह बोला– तुम्हारी कोई लडकी कुआरी है ?

काजी ने कहा– है, हुजूर !

तब बादशाह ने कहा– उसका विवाह मेरे सबसे बडे शाहजादे के साथ करो।

यह सुनकर काजी बडा खुश हुआ। उसने बड़े ठाट-बाट के साथ अपनी कन्या का विवाह शाहजादे के साथ कर दिया।

अब बादशाह ने अपने दूसरे शाहजादे को बुलाकर पूछा। तब उसने भी उसी प्रकार तीर चलाया, जो वजीर के घर में जाकर गिरा। तब वजीर ने भी अपनी कन्या का विवाह पूर्व की भांति बादशाह के उस शाहजादे के साथ कर दिया।

तीसरे शाहजादे ने भी तीर चलाया तो वह एक पठान के घर में जाकर गिरा। पूर्व की भांति उस शाहजादे का विवाह भी पठान की पुत्री से कर दिया गया।

चौथा शाहजादा बादशाह का लाडला था। बादशाह उसे ही अपना सिहासन सौंपना चाहता था परतु बडे बेटों के रहते उसका वश नहीं चल रहा था। बादशाह इसके लिए उपाय ढूढने लगा। उसनें चौथे शाहजादे से भी तीर चलाने के लिए कहा। उस शाहजादे ने जो तीर चलाया वह एक बाग में जाकर गिरा। चौथे शाहजादे एव हलकारों ने बाग में खोजबीन की परतु उन्हें वहा कुछ नहीं मिला। बाग को खाली देखकर वे लौटने लगे।

वहा विद्याधर की दो पुत्रियां थीं, जिनमें परस्पर अत्यत प्रेम था। बडी बहिन तो आयुष्य पूर्ण कर देवागना हो गई थी परतु छोटी बहिन अपनी बडी बहिन के मृत्युशोक में रोती हुई विलाप कर रही थी। पिता उसका विवाह भी करना चाहता था परतु वह विवाह करने को तैयार नहीं थी। तब बड़ी बहिन देवी के रूप में प्रगट हुई। छोटी ने बडी बहिन के पैर पकड़ लिए। बोली– मैं तो तुम्हारे साथ ही रहूगी। तब बडी बहिन उसे अपने साथ लेकर चलने लगी। उसने छोटी बहिन से कहा– तुम इस बाग में बैठ जाओ। मैं तुम्हारी देखभाल करूगी। इस प्रकार उसे धैर्य धारण करवाया।

शाहजादे को वापस जाते हुए देखकर बडी बहिन बोली– तुम्हारी स्त्री तो यहा है, तुम क्यों जा रहे हो ?

उस देवी के वचन सुनकर उसने अपने नौकरों से पुन बाग में खोजबीन करवाई, चूंकि देवी ने छोटी बहिन को अदृश्य कर रखा था, अत वह दिखाई नहीं दी। तब शाहजादे ने कहा– जो भी कोई अदृश्य है वह सामने आए !

तब बड़ी बहिन ने विचार किया कि अब इसका विवाह कर देना चाहिए। तब उसने प्रकट होकर अपनी बहिन को समझाया कि तुम इससे विवाह कर लो।

इस पर छोटी बहिन ने कहा– तुम मेरा विवाह तो कर रही हो, किंतु मेरी एक शर्त है कि मैं जब भी तुम्हें याद करू तब तुम आ जाना।

देवी ने कहा– ठीक है।

छोटी बहिन ने पुन पूछा कि तुम अधिकाशत कहा रहती हो ?

तब उसने कहा– अमुक दिशा में साठ कोस का निर्जन क्षेत्र है। वहा एक मंदिर बना हुआ है। उस मंदिर के पास एक बावडी है, उस स्थान पर मेरा निवास है।

तब छोटी बहिन ने कहा– जब तक मेरा मन लगा रहेगा तब तक मैं वहा रहूंगी। बाद में तुम्हारे पास आ जाऊगी।

इस प्रकार बात पक्की करके उसने अपनी छोटी बहिन का विवाह उस शाहजादे के साथ धूमधाम से सपन्न करवाया और फिर अपने स्थान को लौट गई। अब शाहजादा अपनी स्त्री को लेकर महल में आया। सांसारिक सुखों का उपभोग करने लगा। काफी समय व्यतीत होने पर उस शाहजादे के तीनों बडे भाइयों ने एकराय होकर विमर्श किया कि बादशाह का अनुराग छोटे शाहजादे पर अधिक है, अत किसी प्रकार इस अनुराग को मिटाना है।

बडे भाई ने कहा– बादशाह को सभी भाई अलग अलग बुलवाकर भोजन करवाओ। सबसे छोटे शाहजादे की स्त्री तो जगली है, अत उसमें भोजन बनाने का सऊर कहा है ? भोजन बना भी देगी तो खिलाने का सऊर नहीं होगा। इससे बादशाह का अनुराग छोटे शाहजादे के प्रति स्वत समाप्त हो जाएगा।

ऐसा विचारकर तीनों बड़े शाहजादे बादशाह के पास गए और उससे प्रतिदिन एक शाहजादे के घर भोजन करने का अनुरोध किया। बादशाह ने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया। उसने तीनों शाहजादों के घर क्रमानुसार भोजन किया। इन तीनों पुत्रवधुओं के पाक-कौशल और सेवाभक्ति से बादशाह बडा प्रसन्न हुआ।

अब सबसे छोटे शाहजादे के घर भोजन की बारी आई। शाहजादा दुश्चिता में पड गया। उसे दुश्चिता में देखकर स्त्री बोली— तुम किस दुश्चिता में बैठे हो ?

तब उसने सारी बात विस्तारपूर्वक बतलाई। इस पर स्त्री ने कहा— सारी चिता छोडो और बादशाह को जाकर कहो कि भोजन करने के लिए बाग में पधारें।

स्त्री ने बाग में पहुचकर अपनी बडी बहिन को याद किया। बडी बहिन प्रकट होकर बोली— मुझे क्यों बुलवाया ?

तब छोटी बहिन ने सारी बात विस्तार से समझाई।

देवी (बडी बहिन) ने कहा— ठीक है।

अब बडी बहिन ने बाग को हरा-भरा और रमणीय बना दिया। समूचे वातावरण को सुगंधित कर दिया। मलयाचल जैसी शीतल हवाए चलने लगीं। विविध प्रकार के व्यजन तैयार कर बडी बहिन ने पूरे शहर के लोगों को भोजन करवाया। बादशाह को बुलाकर उसे भी भलीभांति भोजन करवाया। भोजन करने के पश्चात बादशाह और शहर के लोग उसका गुणगान करने लगे कि ऐसा भोजन तो इससे पहले कभी नहीं किया।

अब तीनों भाई विचार करने लगे कि हमारा यह उपाय तो निष्फल गया। तब दूसरा भाई बोला— अब जैसा मैं कहता हू वैसा करो। चारों की स्त्रियों को सास के चरण-स्पर्श करवाओ। अपनी तीनों की स्त्रिया तो चरण-स्पर्श करना जानती है और वह जगल की स्त्री चरण-स्पर्श करना नहीं जानती। इससे छोटे भाई के प्रति अनुराग का भाव अपने आप उतर जाएगा।

यह तय होने पर तीनों भाइयों की स्त्रियों ने सास के क्रमश चरण-स्पर्श किए। जब छोटे शाहजादे की स्त्री की बारी आई तो शाहजादा फिर दुश्चिता में पड गया। उसकी स्त्री ने पूर्व की भाति उससे पूछा। तब शाहजादे ने पूरी बात विस्तार से बतलाई।

स्त्री ने अपनी बडी बहिन को याद किया। उसके प्रकट होने पर छोटी बहिन अपनी सास के लिए कीमती वस्त्राभूषण लेकर रात्रि में उसके चरण-स्पर्श करने हेतु निकली, जिससे चारों तरफ प्रकाश फैल गया। प्रभापूर्ण शरीर पर वस्त्राभूषण का शृगार करने से वातावरण प्रकाशमान हो उठा। यह प्रकाश वहा तक फैल गया जहा बादशाह का दरबार लगा हुआ था। उस उजास की ओर आश्चर्य से देखते हुए बादशाह ने पूछा— यह कौन है ?

दरबार में उपस्थित लोगों ने बादशाह को बताया कि यह आपकी जगल वाली पुत्रवधू है। यह तो अपनी सास के चरण-स्पर्श करने जा रही है। यह बात

सुनकर बादशाह बहुत खुश हुआ। पुत्रवधू ने जाकर सास के चरण-स्पर्श किए। इसके बाद जब उसने भेंट स्वरूप कीमती वस्तुए सास के सम्मुख रखीं तो सास भी बहुत खुश हुई। पुत्रवधू पुन अपने महल में लौट आई।

एक बार किसी बात को लेकर पति-पत्नी में बोलचाल हो गई। तब वह गुस्सा होकर अपनी बडी बहिन के पास चली गई। सारी बात विस्तारपूर्वक बतलाते हुए कहा– अब मैं तो कभी ससुराल नहीं जाऊगी।

बड़ी बहिन बोली– कोई बात नहीं, यहीं रहो।

उधर शाहजादा उदास हो गया। उसने जाकर बादशाह से कहा– मैं तो उसके पीछे जाऊंगा।

तब बादशाह ने बहुत-से घुडसवार और धन-माल देकर शाहजादे को विदा किया। शाहजादा दूसरे शहर में पहुचा और वहां एक सेठ की हवेली में रहने लगा। उसने सेठ से पूछा– क्या साठ कोस के किसी बियाबान में कोई देवस्थान और बावड़ी है ?

सेठ ने कहा– हां, है।

स्थान का ठीक से पता लगाने के लिए हलकारे और कासिद भेजे गए। तब एक कासिद ने आकर कहा– मैं वह स्थान देख तो आया हू परतु जगह बडी विषम है।

अब शाहजादा उस कासिद को साथ लेकर चला। बावडी के खडहर में छुपकर बैठ गया। उसकी स्त्री स्नान करने आई। वस्त्र उतारकर वह बावडी में स्नान करने लगी। पश्चात जब उसने अपने वस्त्र संभाले तो उसे वे दिखाई नहीं दिए।

स्त्री बोली– मेरे वस्त्र किसने लिए हैं ?

वह बोला– मैंने लिए हैं।

अब स्त्री से साथ चलने का वचन लेकर शाहजादे ने उसके वस्त्र लौटा दिए। तब स्त्री ने अपनी बडी बहिन को आपबीती सुनाई।

देवी बोली– स्त्री को तो अपने ससुराल में रहना ही शोभा देता है, अत तुम चली जाओ।

अपनी साली को देवी के रूप में देखकर, बहनोई बोला– मुझे देवी के दर्शन हुए हैं, अब आप क्या दोगी ?

तब देवी ने उसे एक वीणा दी और कहा कि जब तुम यह वीणा बजाओगे तो देविया प्रकट होकर नाटक करेंगी।

शाहजादा की स्त्री बोली— यदि मैं तुम्हारे साथ चलूंगी तो कोई मेरे रूप पर मोहित होकर मुझे प्राप्त करने के लिए आपको मार डालेगा। इसलिए मैं पहले ही महल में जाकर बैठ जाती हू।

• वह बोला— हा, यह ठीक रहेगा।

अब वह तो विद्या के बल से सीधे महल में पहुच गई। शाहजादा वहा से रवाना हुआ। चलते चलते सूर्यास्त हो गया। थके हारे को भूख और प्यास सताने लगी। एक योगी के आश्रम में प्रकाश दिखाई देने पर वह वहा पहुचा।

तब योगी बोला— अरे मूर्ख ! तू ने मेरे ध्यान में विघ्न डाला है, अत यहा से चला जा।

तब वह बोला— रसोई बनाने के लिए थोडी अग्नि चाहिए, वह लेकर चला जाऊंगा।

अब अग्नि ले जाकर आश्रम से कुछ दूर जाकर उसने खाना बनाया। खाना खाकर पानी पीया और वीणा बजाने लगा। तब देविया प्रकट हुईं और उन्होंने वहा नाटक किया। यह देखकर उस आश्रम के योगी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे लगा कि यह वीणा-वादक तो महा गुणवान है। इसकी वीणा भी करामाती लगती है।

अब योगी ने आकर उससे वह वीणा मागी।

तब वह बोला— बदले में तुम मुझे क्या दोगे ?

योगी ने कहा— मैं तुम्हें घोटा दूगा।

उसने पूछा— इस घोटे में क्या गुण है ?

योगी ने बताया— यह घोटा जिस किसी के भी पीछे रखोगे वह अचेत हो जाएगा और घोटा पुन तुम्हारे हाथ में आ जाएगा। इस पर तुम्हारे अलावा किसी का जोर नहीं चलेगा।

यह जानकर उसने वीणा के बदले घोटा ले लिया। अब उसने घोटे को आदेश दिया कि जाओ, उस योगी को अचेत करके वीणा वापस ले आओ !

अब घोटे ने जाकर उस योगी को ही अचेत कर दिया और वीणा वापस लाकर शाहजादे को दे दी। वीणा और घोटा लेकर शाहजादा आगे चल पडा। आगे जाने पर जब वह थक गया तो उसने फिर वीणा बजाई। वहा एक दूसरा योगी रहता था। वीणा-वादन से प्रभावित होकर वह भी शाहजादे के पास आया और उससे वह चमत्कारी वीणा मागी।

तब शाहजादे ने उससे भी पूछा— वीणा के बदले में तुम मुझे क्या दोगे ?

योगी ने कहा— मैं तुम्हें मशापूर्ण विद्या दूगा।

तब उसने योगी को वीणा देकर उससे मशापूर्ण विद्या प्राप्त कर ली। अब पूर्व की भांति घोटे को निर्देश दिया। तब घोटे ने जाकर उस योगी को भी अचेत कर दिया और वीणा वापस ले आया। इसी प्रकार उसने तीसरे योगी से उडनखटोले की विद्या प्राप्त कर ली।

अब सेठ की दूकान जाकर उसने अपना हिसाब-किताब पूरा किया और अपने नगर में लौट आया। उसके पिता आयुष्य पूर्ण कर गए थे, अत राज सिहासन पर बडा भाई बैठा था।

अब महल के अदर जाकर वह अपनी स्त्री से मिला और उससे परामर्श कर दूसरे दिन बडे भाई को कहा— राज सिहासन मुझे सौंप दो, अब सारा राज-काज मैं सभालूगा।

बडा भाई नहीं माना। तब उसने घोटे को तैयार किया। घोटे को देखकर बडा भाई डर गया और उसने अपना राज सिहासन छोटे भाई को सौंप दिया।

छोटा शाहजादा बादशाह बन गया। तब उसने अपने तीनों बडे भाइयों को अलग-अलग राज्य सौंप दिए। स्वय सुखपूर्वक बादशाह की पदवी भोगने लगा। यह उसके द्वारा पिछले जन्म में किए गए पुण्य कर्मों का प्रभाव था, अत उस पर अन्य किसी का जोर चलता नहीं।

(२५४)

चुप तो स्वादिष्ट है

थली (मरुप्रदेश) के एक निर्धन आदमी ने अपनी बेटी का विवाह मेवाड क्षेत्र के किसी गांव में किया। एक बार वह आदमी अपनी बेटी से मिलने गया। बेटी ने खाने में लपसी बनाई। अदर कच्चे नारियल की बडी चिटकिया डालीं और चिटकियों का ही रायता बनाया। उसे लपसी और रायता परोसा।

अब बेटी के देवर और जेठ पास बैठकर समधी को खाना खिलाने लगे। तब वह लपसी खाने लगा और रायते के सबडके लेते हुए कहने लगा— बेटी ! तुमने राबडीया तो गाढे दूध में बनाया है परतु इसके अदर ये कठोर फल किस ऋतु के डाले हैं।

तव वह बोली— पिताजी, चुप रहो चुप !

वह बोला- बेटा, चुप बडी स्वादिष्ट है।

खाना खाने के बाद वह बाजार में घूमने निकला। आगे दो साझेदार अपने माल के बटवारे को लेकर परस्पर व्यर्थ ही झगडने लगे।

लोग बोले-- ये थली के साहजी परदेशी हैं और गहरे कुअे से निकलने वाले जल को पीने वाले हैं, अत इन्हीं से निर्णय कराओ।

जब दोनों साझेदारों ने अपना अपना पक्ष रखा तो उसे खाने वाली 'चुप' की याद आ गई और वह बोला-- मैंने तो जैसी 'चुप' देखी है उससे बढिया कुछ नहीं है।

तब लोग बोले-- साहजी ने तो अच्छा न्याय किया है। अब तुम दोनों चुप रहो। व्यर्थ में क्यों झगडा करते हो ?

इस प्रकार उन दोनों का झगडा समाप्त हो गया। ऐसे भोले साहजी थे परंतु पुण्य के प्रभाव से बात अनुकूल बन गई।

(२५५)

अढ़ाई छैल

किसी बडे शहर में एक बनिये का बेटा रहता था। उसका नाम अढ़ाई छैल था। उसके मा-बाप चल बसे। अब वह अकेला रह गया। अब उसके पास न तो हवेली थी और ना ही दूकान। कपड़ों की दलाली कर नित्य छ पैसे कमाता था। इनमें से एक टक्का तो खुद पर खर्च करता और एक टक्के की रेवड़िया खरीदकर बच्चो को बाट देता था। एक टक्का कपडे के रखरखाव और अन्य खर्च में लगाता।

इस प्रकार वह दिन काट रहा था। फिर भी उसे किसी बात का विचार नहीं था बल्कि प्रसन्नतापूर्वक रहता था।

अब वह बडा हुआ। कपडे की दलाली में उसे बहुत फायदा होने लगा। अब वह ६ पैसे की बजाय प्रतिदिन ६ रुपए कमाने लगा। इनमें से एक रुपये में तो घोडा किराए पर लेता, एक-एक रुपए में वस्त्र और आभूषण किराए पर लेता। एक रुपया खाने-पीने में खर्च हो जाता। एक रुपए की मिठाई खरीदकर बच्चों को बाट देता और एक रुपया बचाकर उसे गल्ले में डाल देता। इस प्रकार वह ठाट-बाट से रहता।

शाम के समय वह स्नान करके नए कपड़े, कडा, कठी, मोती और अन्य आभूषण पहनता और घोडे पर सवार होकर बाजार में आता। तब उसे बडे-बडे सेठ-साहूकार उठकर सलाम करते। उसके पीछे पीछे लडके घूमते, जिन्हें लोगों ने पूछा कि यह कौन है ?

लड़के बोले— यह अढाई छैल है।

तब लोगों ने जान लिया कि यह कोई विशिष्ट पुरुष है।

एक दिन उस शहर में एक लखी बनजारा आया। उसने वहा के सेठ-साहूकारों से पूछा— क्या इस शहर में कोई ऐसा प्रबल-पुरुष है जो मेरी बालद को कर-मुक्त करवा सके। मैं उसे नजराना भेंट करूंगा।

तब उन लोगों ने कहा— ऐसा तो इस शहर में एक ही शख्स है और वह है अढाई छैल।

बनजारा बोला— मुझे उसकी हवेली का ठिकाना बताओ।

लोगों ने उससे कहा— अभी थोड़ी देर बाद वह बाजार में ही आएगा। तब तक आप यहीं बैठिए।

बनजारा उसकी राह देखता रहा। कुछ देर बाद घोडे पर सवार अढाई छैल आता दिखाई दिया। तब लखी बनजारे ने उठकर उसे मुजरा किया। फिर हाथ जोडकर उसे सवा लाख रुपए का काच भेंट स्वरूप प्रदान किया। अढाई छैल ने यह भेंट स्वीकार कर ली।

अब अढ़ाई छैल ने राजा के नाम एक पत्र लिखा। उसमें उसने लिखा— अढाई छैल की तरफ से राम-राम ! मेरा लखी बनजारा आपके देश में आ रहा है। इससे किसी प्रकार का कर वसूल न किया जाए।

अढ़ाई छैल ने यह पत्र उस बनजारे के हाथ में थमाते हुए कहा— इस पत्र को पश्चिम देश के राजा को दे देना।

उसने सवा लाख रुपए का वह काच भी लखी बनजारे को वापस देते हुए कहा कि यह उस राजा की रानी को भेंट कर देना।

अब लखी बनजारा पश्चिम के देश में पहुंच गया। उसने वहां के राजा को अढ़ाई छैल का पत्र और रानी को सवा लाख रुपए का काच सौंपा।

तब राजा-रानी ने उस बनजारे से पूछा— अढाई छैल कैसा क्या है ?

बनजारा बोला— वह तो किसी राजकुमार से भी ज्यादा सुंदर और बहुत पुण्यवान है।

तब राजा-रानी ने विचार किया कि अपनी राजकुमारी विवाह-योग्य है, अत इसका विवाह अढाई छैल से ही करें। ऐसा विचार कर उन्होंने उस बनजारे से कहा कि यदि तुम अढाई छैल को यहा लिवा लाओ तो तुम्हें मुंह मागे दाम देंगे। उन्होंने बनजारे का कर भी माफ कर दिया।

अब बनजारे ने राजा से अपने देश जाने की आज्ञा मागी। तब राजा ने चार तो पानीपथे घोडे, दो हाथी, दो म्यानें, दो पालकिया ढाई छैल को देने के लिए बनजारे को सौंपीं और उससे कहा— यह भेंट अढाई छैल को दे देना और उसे किसी भी उपाय से यहा भेज देना।

लखी बनजारा वापस आया। पश्चिमी देश के राजा ने जो हाथी-घोडे और अन्य वस्तुए दी थीं वे सारी उसने अढाई छैल को सुपुर्द कर दी। तब अढाई छैल ने उससे पूछा— अब तुम कहा जाओगे ?

बनजारा बोला— मैं तो अब पूर्वी देश में जाऊंगा।

तब अढाई छैल ने पश्चिमी देश के राजा द्वारा भेंट स्वरूप प्राप्त हाथी-घोडे और अन्य वस्तुए देकर बनजारे को कहा— ये सारी भेंट पूर्वी देश के राजा को दे देना।

लखी बनजारे ने पूर्वी देश में पहुचकर वहा के राजा को वे हाथी-घोडे और वस्तुए सौंपते हुए कहा कि ये सारी भेंट अढाई छैल ने आपकी सेवा में भिजवाई है।

तब राजा ने अढ़ाई छैल के संबंध में पूछा कि वह कैसा है ?

बनजारे ने बताया— वह तो अति सुदर है।

तब राजा ने रानी को कहा। रानी बोली— अपनी राजकुमारी बडी हो गई है, सो उसका विवाह अढाई छैल के साथ करना है। पूर्व की भांति उस राजा ने भी हाथी-घोडे, पालकिया और म्यानें अढ़ाई छैल को भेंट स्वरूप देने के लिए बनजारे को सौंपे।

इसी प्रकार उत्तरी और दक्षिणी देश के राजाओं ने भी अपनी राजकुमारी का विवाह अढाई छैल के साथ ही करने का निश्चय किया।

अब लखी बनजारे ने अढाई छैल को कहा— चारों देशों की राजकुमारियों के साथ विवाह करो।

तब अढाई छैल ने लखी बनजारे को अपनी सारी हकीकत कह सुनाई। तब बनजारा बोला— तुम चिंता मत करो, धन-दौलत मेरे पास बहुत है।

अब उस बनजारे ने प्रभूत मात्रा में बालद का सामान बेचकर हाथी-घोड़े खरीदे। उन्हें सजाकर अढाई छैल की बारात ले चला।

अढाई छैल ने चारों राज्यों की राजकुमारियों से विवाह किया। दहेज में खूब सारा धन-माल लेकर अपने शहर लौटा। बादशाह को नजराना भेंट किया। इसका कलाचातुर्य देखकर बादशाह बहुत खुश हुआ। अढाई छैल को रहने के लिए

स्थान बतला दिया। अब वह चारों स्त्रियों सहित सासारिक सुख भोगने लगा। सूर्य कब उदय और अस्त होता, इसकी सुध ही नहीं रहती। ऐसे सुखसागर में वह तैरने लगा।

काफी समय व्यतीत होने पर उस शहर में साधु और मुनीश्वर पधारे। तब अढाई छैल उनकी वदना करने गया। साधुओं की वाणी सुनकर उसे वैराग्य उत्पन्न हुआ। अपनी चारों स्त्रियों सहित दीक्षा अगीकार कर सत्कर्म करता हुआ देवलोक गमन कर गया।

(२५६)

केवन्ना की कथा

जबू द्वीप के भरत क्षेत्र में शालि नामक ग्राम था। उस गाव में एक बुढिया रहती थी। वह अत्यंत गरीब थी। उसके पुत्र का नाम धनपाल था। वह दूसरों का कार्य करके जीवन-यापन करता।

एक दिन दूसरे बच्चों को घर-घर खीर खाते देखकर उसकी भी खीर खाने की इच्छा हुई। तब उसने घर आकर अपनी माता से खीर मागी। बेचारी बुढिया के पास खीर बनाने के लिए कोई सामग्री नहीं थी। तब वह दु खी होकर रोने लगी। उसका रुदन सुनकर पड़ोस की चार स्त्रियां उसके घर आई। बुढिया को रोती देखकर उन्हें उस पर दया आ गई। अब उन चारों स्त्रियों ने अपने अपने घर से बुढिया को खीर बनाने के लिए क्रमश· दूध, चावल, घी और चीनी लाकर दी। बुढिया बडी खुश हुई। उसने खीर बनाकर अपने पुत्र को परोसी और खुद किसी काम से बाहर चली गई।

उसी समय मास खमण (एक माहा का उपवास) के पारणे की गोचरी के लिए एक मुनिराज आ गए। उन्हें देखकर यह बालक खीर के साथ घी-चीनी लेकर यह विचार करने लगा कि मुनिराज को खीर का तीसरा हिस्सा वहराऊ या आधा हिस्सा। इसी सोच-विचार में विलब करते हुए उसने थाली में परोसी हुई खीर का तीसरा हिस्सा मुनिराज को वहराया।

रात्रि के समय उसे अजीर्ण हुआ और शूल दोष से मृत्यु को प्राप्त हुआ।

राजगिरि नामक नगरी में राजा श्रेणिक राज्य करता था। उसकी रानी का नाम चेलना था। उसके मत्री का नाम अभय कुमार था। उसी नगरी में धनावाह नामक सेठ की स्त्री भद्रा की कुक्षि से धनपाल का जीव पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ।

महोत्सव करके उसका नाम केवन्ना रखा। केवन्ना आठ वर्ष की उम्र में ही सभी कलाओं और शास्त्रों का जानकार हो गया। युवावस्था प्राप्त होने पर माता-पिता ने उसका विवाह सागर दत्त की पुत्री जयश्री के साथ कर दिया।

अब विषयानुरक्त केवन्ना सासारिक सुख भोगने लगा। तब माता-पिता ने उसे नाजर की सगति में रखा। वहा से वह एक वेश्या के पास चला गया। वेश्या के प्रेम में अधा होकर वह उसी के घर में रहने लगा। उसे जितने भी धन की आवश्यकता पडती तो माता-पिता इकलौते पुत्र को प्रसन्न रखने के लिए धन भेज देते। इस प्रकार वह बारह वर्ष तक वेश्या की सगति में रहा।

जब केवन्ना के माता-पिता चल बसे तो उनकी खबर भी जयश्री ने अपने पति को नहीं दी। वह जितना भी धन चाहता, उसकी स्त्री बराबर भेजती रही। धीरे-धीरे धन समाप्त हो गया। तब जयश्री ने अपने आभूषण उतारकर थाल में रखे और दासी के हाथ वह थाल वेश्या के घर भिजवाया।

वह थाल देखकर वेश्या की मा समझ गई कि अब यह निर्धन हो गया है। तब उसने उस थाल में रखे आभूषणों के बीच एक हजार दीनार (मुद्रा) रखकर थाल वापस उसके घर भिजवाया। वेश्या की मा ने कहा— बेटी ! अब यह निर्धन हो गया है, अत इसे यहां से निकालो।

तब पुत्री ने कहा— हमने इसका बहुत धन लिया है, अत- इसे विरह की वेदना कैसे दू ?

वेश्या की मां ने यह जानकर कि उसकी बेटी केवन्ना से प्रेम करने लगी है, केवन्ना को कहलाया— इस स्थान पर मिट्टी जम गई है। तुम यदि यहा से हटो तो मैं झाड़-बुहारकर साफ कर दू।

तब केवन्ना उठकर नीचे आ गया और दरवाजे के बाहर जाकर बैठ गया। अब वह अंदर से बुलावे का इतजार करने लगा। तब एक दासी ने आकर कहा— अब यहा क्यों बैठे हो ? तुम्हें निर्धन समझकर यहा से निकाल दिया गया है। अब तुम अपने घर चले जाओ।

तब केवन्ना मन में विचार करने लगा कि वेश्या का प्रेम, जुए का धन और सध्या का वर्ण कभी स्थिर नहीं रहता। जब तक धन था तो यह मुझे ठगती रही। यों पश्चात्ताप करता हुआ वह वहा से उठ खडा हुआ और लोगों से पूछता हुआ अपने घर आ पहुचा। अपने घर की बिगडी दशा देखकर वह चिताग्रस्त होकर घर में आया। स्त्री जयश्री ने उसे पहचान लिया। आदर भाव के साथ उसे स्नेह भरी

दृष्टि से देखा। स्त्री से माता-पिता के निधन और निर्धनता के समाचार सुनकर केवन्ना चितित और लज्जित होकर बैठ गया।

इधर वह वेश्या प्रेम के वशीभूत होकर केवन्ना के घर चली आई और उसकी दूसरी स्त्री बनकर रहने लगी। पहली पत्नी जयश्री ने पति को प्रसन्न करने के लिए आभूषण और उसके बीच में रखी दीनारों का वह थाल सौंपा, जो वेश्या के घर से वापस लौट आया था। यह धन सौंपकर जयश्री बोली— हे स्वामी ! इस धन से कोई व्यापार शुरू करके सुखपूर्वक रहो।

स्त्री का यह वचन हृदयंगम करके वह एक महीने तक अपने घर ही रहा। जयश्री के गर्भ ठहरा। तब सारा धन स्त्री को देकर केवन्ना अकेला ही परदेश के लिए रवाना हुआ। उसकी दोनों स्त्रिया शहर के बाहर व्यापारार्थ जाने वाले सार्थ तक उसे छोड आई। उन्होंने उसके साथ पलंग पर ओढने-बिछाने के वस्त्र भी रख दिए। उसे विदा करके वे वापस लौट आई।

केवन्ना रात्रि के समय सुख की नींद सो रहा था। उस नगर में एक सेठ की स्त्री का पुत्र समुद्र यात्रा में जहाज डूबने से मर गया। पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर सेठ की स्त्री ने विचार किया कि अब पुत्र के बिना यह धन तो राजा के घर जाएगा, अत इसका क्या उपाय किया जाए ?

तब सेठानी ने अपने पुत्र की चारों बहुओं से कहा— ये सारा धन-माल सुरक्षित रखने के लिए मैं दूसरा पुत्र घर ला रही हू, तुम्हें स्नेहपूर्वक उसके साथ रहकर उसे अपना पति मानना पड़ेगा।

बहुएं बोलीं— हे सासूजी ! यह अकार्य हम से किस प्रकार होगा ?

सासू ने कहा— किसी विशेष कारणवश अकार्य करना पडे तो कोई दोष नहीं लगता।

ऐसा कहकर वह चारों बहुओं को साथ लेकर नगर में निकली। पूरे नगर में घूमने पर उन्हें केवन्ना सोया हुआ मिला। उसे नींद में ही सेज सहित उठाकर सेठ की चारों बहुए घर ले आई। नींद खुलने पर जब केवन्ना जगा तो बुढिया बोली, 'अहो पुत्र ! हमें कुलदेवता ने प्रसन्न होकर तुमको दिया है। अब हमारे धन का उपभोग करते हुए इन चारों स्त्रियों के साथ सुखपूर्वक रहो। यों कहकर केवन्ना को रहने के लिए राजी कर लिया।

सूर्योदय होने पर नगर के घर-घर में यह बधाई भेजी कि उसका पुत्र सकुशल घर लौट आया है। केवन्ना भी सारी चिताए छोडकर वहा सुखपूर्वक रहने

लगा। अब उन चारों स्त्रियों के चार पुत्र हुए। यों बारह वर्ष का समय व्यतीत हो गया। तब उस सेठानी ने अपनी बहुओं से कहा कि केवन्ना को जहा से उठाकर लाई थीं, वहीं वापस रख आओ क्योंकि अब हमें हमारे धन का उपभोग करने वाले पुत्रों की प्राप्ति हो गई है।

बहुओं ने कहा– यह तो उचित बात नहीं है। ऐसे कैसे छोड़ आए ?

सास बोली– यदि तुम अपना भला चाहती हो तो इसे यहा से निकालो।

तब सास के भय से बहुओं ने केवन्ना को चंद्रहास-मदिरा पिला दी। दूध समझकर केवन्ना उसे पी गया। इससे उसे गहरी नींद आ गई। तब चारो स्त्रियों ने चार लड्डुओं में चार रतन मिलाकर उसमें रखे। रात्रि के समय उसे जिस सेज सहित उठाकर जहा से लाया गया था, उसी में उठाकर वापिस वहीं छोड दिया।

अब सयोग से बारह वर्ष बाद वह सार्थ भी उसी जगह पहुच गया जहा पूर्व में उसकी दो स्त्रिया उसे छोड़ गई थीं। जयश्री और उस दूसरी स्त्री ने जब यह खबर सुनी तो वे वहा आईं जहा केवन्ना सो रहा था। उन्होंने उसे उठाकर कहा– हे स्वामी ! तुम्हारा शरीर देखने से नहीं लगता कि तुम इतनी दूर से चलकर आए हो। लगता है तुम आकाश में उडकर आए हो।

यह सुनकर केवन्ना स्तब्ध रह गया। दोनों स्त्रिया उसके सेज-बिछौने और लड्डु लेकर उसे घर ले आई। केवन्ना उठकर मुह धोने के लिए बैठा। उसी समय जयश्री का ग्यारह वर्षीय पुत्र जो पढने गया था वह आया। उसे भूखा जानकर दूसरी स्त्री ने उनमें से एक लड्डु निकालकर दे दिया जो केवन्ना के साथ उन चारों स्त्रियों ने डाले थे।

अब पुत्र पढने गया। बीच में उसने लड्डु को तोडा तो उसमें से एक रत्न निकला। उस रत्न को पाटी पर घिसता हुआ वह आगे जा रहा था कि उस पर एक हलवाई की नजर पड गई। जलक्रात रत्न जानकर हलवाई ने उसे मिठाई का लालच देकर वह अमूल्य रत्न ले लिया। अब उस रत्न के बदले मिठाई लेकर वह बालक पढ़ने गया।

उधर केवन्ना जब बचे हुए तीन लड्डु खाने लगा तो उनमें से एक-एक रत्न और निकला। तब उसकी स्त्री जयश्री बोली– हे स्वामी ! जोखिम जानकर आप इन रत्नों को लड्डुओं में छुपा लाए, यह आपने बुद्धिमता की।

स्त्री की बात सुनकर केवन्ना मन ही मन विचार करता हुआ वस्तुस्थिति समझने की कोशिश करने लगा।

इधर राजा श्रेणिक का सिचानक नामक हाथी सरोवर में पानी पीने गया।

वहां एक विशालकाय मगरमच्छ ने उसे पकड लिया और सरोवर में ले जाने लगा। राजा ने यह खबर सुनकर उस हाथी को बचाने के लिए पूरे नगर में ढिढोरा पिटवाया कि यदि इसी समय कोई जलक्रात रत्न लाकर दे तो उसे राजकुमारी और आधा राज्य दू।

यह बात जब उस हलवाई ने सुनी तो उसने जलक्रात रत्न ले जाकर राजा को दिया। जब उस रत्न को सरोवर के जल में रखा गया तो पानी फटने लगा। मगरमच्छ दौडकर गहरे पानी में घुस गया। सिचानक हाथी पानी से बाहर निकलकर अपने स्थान पर चला गया। राजा बहुत खुश हुआ। उसने हलवाई को पूछा– सच-सच बतलाओ कि तुम्हें यह रत्न कहां से मिला ?

तब हलवाई ने कहा– मैंने यह रत्न केवन्ना सेठ के बेटे से लिया।

यह सुनकर राजा बोला– जिसका रत्न है उसे ही आधा राज्य दूगा और उसी के साथ राजकुमारी का विवाह करूंगा।

अब राजा ने हलवाई को थोडा बहुत धन देकर विदा कर दिया और केवन्ना को आधा राज्य सौंपकर अपनी पुत्री का विवाह भी उसके साथ कर दिया। अब वह तीन स्त्रियों का स्वामी बन गया।

एक दिन उसने अपने मंत्री अभय कुमार को यह हकीकत बतलाई कि इस नगर में मैं बारह वर्ष तक रहा हूं और च्यार स्त्रियों के साथ सांसारिक सुख भोगे हैं। उन स्त्रियों से मेरे एक-एक पुत्र भी हुआ परंतु वे स्त्रियां मुझे रात्रि के समय नींद में घर से बाहर छोड़ गईं। मुझे इस बात का आज तक रज है।

मंत्री ने कहा– आप फिक्र न करें, मैं इस बात का पता लगवा लूगा।

अब मंत्री अभय कुमार ने बुद्धि से काम लिया। उसने एक देहरा बनवाया, जिसके दो दरवाजे थे। उसमें एक यक्ष की केवन्ना जैसी मूर्ति बनवाकर स्थापित करवाई। अब पूरे शहर में यह ढिढ़ोरा पिटवाया कि जो पुत्रवती स्त्री अपने पुत्र को साथ में लाकर यक्ष की पूजा करेगी उसके पुत्र को किसी प्रकार कष्ट नहीं होगा और जो ऐसा नहीं करेगी उसके पुत्र को घोर कष्ट सहना पडेगा।

यह बात सुनकर नगर की सारी स्त्रिया अपने पुत्रों के साथ आकर यक्ष की पूजा करने लगीं। मत्री अभय कुमार और केवन्ना देहरे के ऊपर से यह सारा कौतुक देख रहे थे। तभी वह बुढिया सेठानी अपनी चारों बहुओं और उनके चारों पुत्रों को लेकर देहरे में आई। यक्ष की मूर्ति देखकर चारों स्त्रियों के मन में उसके प्रति प्रेम जाग उठा। चारों पुत्र बाबा ! बाबा !! पुकारकर मूर्ति से गले लिपट गए।

यह नजारा देखकर अभय कुमार ने जान लिया कि ये स्त्री और पुत्र केवन्ना के हैं। यह जानकर उसने उस बुढिया सेठानी को बुलवाकर उससे पूछा– सच सच बतलाओ कि ये पुत्र किसके हैं ?

बुढिया सेठानी ने डर के मारे सारा वृत्तात कह सुनाया। तब स्त्रिया, पुत्र और सारा धन केवन्ना को दिलवाया। अब केवन्ना सात स्त्रियों सहित सुखपूर्वक रहने लगा। इस प्रकार कई वर्ष बीत गए। तब उस नगर में भगवान् महावीर स्वामी का पदार्पण हुआ। सभी लोग वदनार्थ गए। केवन्ना भी वदना करने गया। वदना कर उनके सम्मुख बैठा। धर्मोपदेश सुनकर श्रोतागण चले गए। तब केवन्ना ने विनयपूर्वक महावीर स्वामी से प्रश्न किया– अहो भगवन् ! मैं सुखपूर्वक रहते हुए भी बीच में दु खी हुआ, सो कौनसे कर्मोदय के कारण ?

तब भगवान् ने कहा– पिछले भव में तुमने साधु को खीर-खाड और घृत वहराए किंतु विलब से, फलस्वरूप साधु को वहराने से तो तुम्हें सुख मिला परतु विलंब से वहराया और खीर-खाड का तीसरा हिस्सा ही वहराने का मन में विचार लाए, उस कारण और कर्म से तुम्हें इतने संकट सहन करने पडे।

यह सुनकर उसे प्रतिबोध प्राप्त हुआ। सात स्त्रियों के साथ उसने साधुव्रत अंगीकार किया और उसकी शुद्ध भावना से पालना करता हुआ देवलोक गया। जहा अनुक्रम से मोक्ष को प्राप्त होगा।

(२५७)

चाले सरड़-सरड़!

एक साहूकार था। उसकी स्त्री को पाच वर्ष बाद पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। मा ने विचार किया जब मेरे पुत्र का विवाह होगा तब घर में सगे-सबंधी और अन्य अनेक रिश्तेदार आएगे, अत उन्हें सुनाने के लिए परदेश से अच्छे-अच्छे गीत मगवाऊगी।

जब उसका पति परदेश जाने के लिए रवाना हुआ तो स्त्री ने कहा– आप परदेश जा रहे हो परतु लौटते समय एक अच्छा-सा गीत लेकर आना।

साहूकार ने कहा– ठीक है।

अब वह परदेश गया। खूब धन-माल कमाया। जब वह वापिस अपने गांव आने लगा तो गाव के नजदीक पहुचने पर उसे याद आया कि स्त्री ने एक गीत लाने के लिए कहा था, परतु उसे तो गीत लाने की बात याद ही नहीं रही। अब स्त्री को कौनसा गीत सुनाऊगा ?

तब उसने देखा कि एक खेत में एक चूहा अपना बिल खोदते हुए मिट्टी बाहर निकाल रहा है। उसे देखकर सेठ ने अपनी बुद्धि से एक गीत बनाया, 'खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर ।'

अब वह अपने घर आया तो स्त्री ने पूछा– गीत लाए ?

– हां लाया।

– तो मुझे सुनाओ ।

तब उसने कहा– 'खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर।'

सुनकर स्त्री खुश हुई। पश्चात रात्रि को जब वह घट्टी पीसने लगी तो वही गीत गुनगुनाने लगी– 'खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खदर ।'

जब साहूकार दुबारा परदेश गया तो स्त्री ने फिर कोई नया गीत लाने के लिए कहा। साहूकार इस बार भी गीत लाना भूल गया। गाव के नजदीक आने पर उसे गीत वाली बात याद आई। तब उसने देखा कि बाग के अदर एक बिल्ली उसे एकटक देख रही है। तब उसने गीत बनाया– 'चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर ।'

घर आकर स्त्री को यही गीत सुना दिया। स्त्री ने पूर्व की भांति पश्चात रात्रि में वह गीत गाया।

साहूकार अब पुन तीसरी बार परदेश गया। लौटते समय गांव के नजदीक आने पर गीत के अभाव में वह फिर सोच-विचार में पड़ गया। उसी समय उसने एक नेवले को सरपट दौडते हुए देखा। तब उसने गीत बनाया– 'चालै सरड़-सरड, चालै सरड-सरड़, चालै सरड़-सरड ।'

उसने घर आकर स्त्री को यह गीत सुनाया। स्त्री ने पूर्व की भांति पश्चात रात्रि में गीत गाया।

अब वह फिर चौथी बार परदेश गया। गाव के नजदीक आने पर उसे फिर ध्यान में आया कि वह गीत लाना तो भूल ही गया। उस समय उसने एक बदर को इधर से उधर छलाग लगाते हुए देखा। उसे देखकर उसने यह गीत जोडा– 'डाकै अलग-फलंग, डाकै अलग-फलग, डाकै अलग-फलग ।' घर आकर स्त्री को सुनाया।

एक बार चोरों ने विचार किया कि इस साहूकार के घर चोरी करने के लिए चलें। अब चोर वहा आकर सैंध मारने लगे। तब उस साहूकार की स्त्री की नींद उड़ गई। तव वह उठकर जल्दी ही घट्टी फेरने लगी। उसने घट्टी फेरते हुए

पहला गीत गाना शुरू किया— 'खोदै खदर-खदर, खोदै खदर-खद्र, खोदै खदर-खदर !'

उसका गीत सुनकर चोरों ने सोचा कि इसे सैंध लगाने का पता चल चुका है। यह सोचकर चोर रुक गए और ध्यानपूर्वक देखने लगे। तब सेठानी दूसरा गीत गाने लगी— 'चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर, चोगै टमर-टमर !'

चोरों ने सोचा कि इसे तो हमारे द्वारा देखने की भी खबर लग गई है, अत वापस चलने में ही भलाई है। तभी साहूकार की स्त्री ने तीसरा गीत शुरू कर दिया— 'चालै सरड-सरड़, चालै सरड-सरड़, चालै सरड-सरड !'

चोरों ने सोचा इसे तो अपने वापस जाने की भी खबर लग गई है, अत अब तो दीवार फादने में ही फायदा है। वे जैसे ही दीवार फादने लगे तो सेठानी ने चौथा गीत उगेरा— 'डाकै अलग-फलग, डाकै अलंग-फलग, डाकै अलग-फलंग !'

इस प्रकार इसके पुण्य-योग से चोरी की घटना टल गई। धन-माल कुछ भी नहीं गया और चोरों को खाली हाथ लौटना पडा।

(२५८)

तीडे नामक ब्राह्मण की कथा

एक ब्राह्मण का नाम तीडा था। वह ज्योतिषी कहलाता था। वह ज्यादा पढा-लिखा तो नहीं था परतु उसके पिछले भव के पुण्य शेष थे, अत उसकी भविष्यवाणी सही निकलती। एक बार वह शहर की तरफ गया। मार्ग में उसने गधे देखे। वे गधे कुम्हारों के थे। कुम्हारों ने उन गधों को बहुत खोजा परतु कहीं नहीं मिले। तब तीडे ज्योतिषी के पास आकर उन्होंने कहा— तुम्हारी ज्योतिष विद्या से हमारे गधे बतलाओ। तब तीडा ज्योतिषी बोला— मेरे ज्योतिष के अनुसार तो तुम्हारे गधे पूर्व दिशा की तरफ जा रहे हैं।

कुम्हार ऊटों पर सवार होकर पूर्व दिशा की तरफ गए और गधों को घेरकर वापिस शहर में ले आए। उन्होंने ज्योतिषी को चार-पाच रुपयों का धन दिया।

इसके बाद उस ज्योतिषी ने एक ब्राह्मणी के घर रसोई बनवाई। तब वह ब्राह्मणी तो अदर रोटी बना रही थी और यह बाहर दातुन कर रहा था। उसने रोटी बनाने की थपकिया सुनकर बनी हुई रोटियों की सख्या ज्ञात करली। ब्राह्मणी ने सात में से चार रोटिया तो उसे परोस दीं और तीन रोटिया चुरा लीं।

तब तीडे ज्योतिषी ने अपना पोथा निकालकर उस ब्राह्मणी को कहा कि मेरे ज्योतिष के अनुसार तो सात रोटिया बनी हैं और तुमने मुझे चार ही रोटियां परोसी हैं। तीन रोटिया तुमने चुरा ली हैं, परतु मैं छोड़ने वाला नहीं।

अब रसोई बनाने वाली ब्राह्मणी उसे बुरा-भला कहने लगी। शोरगुल सुनकर लोग इकट्ठे हो गए। ज्योतिषी बोला— इसके घर की तलाशी लो।

लोग घर की तलाशी लेने लगे। एक गुदडे में छुपाई हुई तीन रोटिया मिल गईं। तब तीडे ज्योतिषी की प्रशसा सर्वत्र फैल गई।

एक बार राजा की रानी का हार निद्रा नामक दासी ने चुरा लिया। बहुत खोजबीन की परंतु हार तो नहीं मिला। तब लोगों ने कहा कि उस ज्योतिषी को बुलाकर पूछो।

तब रानी ने रात्रि के समय उस ज्योतिषी को अपने महल में बुलवाकर कहा— मेरा हार किसने चुराया है, सो बतलाओ।

ज्योतिषी बोला— अभी नहीं, सुबह बतलाऊगा।

तब रानी ने कहा— ठीक है, यहीं सो जाओ।

तीडा ज्योतिषी वहा सो तो गया परतु चिंता के कारण उसे नींद नहीं आई। तब वह ऊंची आवाज में निद्रा का आह्वान करने लगा— आओ निद्रा ! आओ निद्रा !!

जब निद्रा दासी ने ये शब्द सुने तो उसने सोचा कि इस ज्योतिषी को मेरे द्वारा हार चुराने का पता चल चुका है। वह डर के मारे कांपने लगी और सोचने लगी कि सुबह होते ही यह मेरा नाम बताएगा तो राजा मुझे कुमौत मारेंगे। इस डर से घबराकर उस दासी ने वह चुराया हुआ हार चुपके-से लाकर ज्योतिषी को सौंपते हुए कहा— महाराज ! रानी के समक्ष मेरा नाम प्रकट मत करना। उसने ज्योतिषी को रिश्वत के रूप में सौ रुपए दिए।

सुबह होने पर रानी ने ज्योतिषी से कहा— या तो हार लाओ अथवा चोर का नाम बतलाओ।

तब ज्योतिषी ने वह हार सौंप दिया। हार देखकर रानी बहुत प्रसन्न हुई। उसने ज्योतिषी से पूछा— यह हार किसने चुराया था ?

तीडे ज्योतिषी ने कहा— महारानीजी ! आपको अपना हार मिल गया है, अत चोर का नाम मत पूछिए।

रानी ने कहा— ठीक है।

जब राजा ने यह बात सुनी तो उसने विचार किया कि इस ज्योतिषी की परीक्षा लेनी है। एक दिन राजा अपनी मुट्ठी में तीडे (टिड्डा) को लेकर दरबार में बैठा। उसने ज्योतिषी को बुलाकर पूछा– तुम्हारी ज्योतिष विद्या से बतलाओ कि मेरी मुट्ठी में क्या है ?

तीडे ज्योतिषी ने सोचा कि अब तो मौत आई ही समझो। यह विचारकर वह बोला–

(दोहा)

मारग जाता गधा दीठा, पडकै रोटी पाई ।
निद्रा कहिता हारज पायौ, अबकै तीडा मौत आई।।

(अर्थात् मार्ग में गधे मिलने से, थपकियों से रोटियों की सख्या ज्ञात करने से और निद्रा पुकारने पर हार मिल जाने से बात रह गई, परंतु राजा ने तो अचानक ऐसा प्रश्न पूछ लिया है कि अब तो तीडे की मौत निश्चित है।)

ज्योतिषी का नाम तीडा था और राजा की मुट्ठी में भी तीडा। इस प्रकार बात बन गई। उसका दोहा सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। तीडे को भेंट स्वरूप एक गांव दिया। गाव लेकर तीडा वहा से चला गया। उसने सोचा कि अब आगे ज्योतिष का झूठा नाटक करूगा तो व्यर्थ में इज्जत जाएगी। पुण्य की प्रबलता से वह सुखपूर्वक रहने लगा।

(२५९)

पाप-पुण्य का जोड़ा

एक करोड़पति सेठ था। अच्छा कारोबार चलता था। एक दिन वह सात मंजिल वाले महल में बैठा था कि अचानक उसके हाथ में से इत्र की शीशी छूट गई। नीचे गिरने के बावजूद वह शीशी फूटी नहीं। तब उस सेठ ने मन में जान लिया कि पुण्य तो अब समाप्त होने वाला है।

सचमुच कुछ दिनों बाद ही उसकी जहाजें समुद्र में डूब गईं। मुनीम धन-माल लेकर चपत हो गए। कर्ज चढ गया। दो वक्त की रोटी मिलनी भी मुश्किल हो गई। तब परिवार सहित परदेश जाने लगा।

सेठ-सेठानी, उनका पुत्र और पुत्रवधू, चारों जनें भूखे मरते तीसरे दिन एक शहर में पहुचे। कबूतरों के चुग्गे के लिए जो ज्वार डाली गई थी उसी में से इन चारों ने एक किलो ज्वार चुनकर इकट्ठी की। फिर उसे पत्थर से कूटकर आटा

बनाया। अब बाजार में ही ईंटों का अस्थाई चूल्हा बनाकर राबडी बनाने के लिए उसे हडिया में डालकर चूल्हे पर चढाया। तभी अधपकी राबडी की हंडिया पर पत्थर गिरने से वह फूट गई और राबडी धूल में मिल गई। चारों ही प्राणी हतप्रभ रह गए। मन में सोचने लगे कि अब क्या किया जाए?

सेठ ने विचार किया कि लगता है अब पाप का छोर आ गया है। इससे बढकर पाप और क्या होगा ? ऐसा सोचकर उसने लोगों से उस शहर का नाम मालूम किया। तब उसे ध्यान आया कि इस शहर में उसका एक गुमास्ता रहता था। सेठ ने सौ रुपए की हुडी लिखकर गुमास्ते के पास भिजवाई। गुमास्ते ने सौ रुपए गिनकर दे दिए। तब घी, गेहू और चीनी खरीदकर चूरमा बनाकर खाया। चारों ने नए कपडे खरीदे। उन्हें पहनकर गुमास्ते के घर गए। गुमास्ता आकर सेठ के पैरों में गिरा। गुमास्ते के पूछने पर सेठ ने सारा वृत्तात कह सुनाया।

तब गुमास्ता बोला– मालिक ! यह सारा धन आपका ही दिया हुआ है और आप मुझे भी अपना ही समझें।

ऐसा कहकर उसने सेठ को कई दिन वहीं पर रखा। बाद में वह सेठ को साथ लेकर गया और उसका नया कारोबार शुरू कर दुकानें जमा दीं। दूकान में व्यापार करते हुए उसे खूब फायदा हुआ। वापिस लाखों रुपए का मालिक बन गया। इस प्रकार पाप-पुण्य का जोडा है। पुण्य-कर्म तो जिनाज्ञा के अनुरूप आचरण से और पाप-कर्म जिनाज्ञा बाहर आचरण करने से बधता है।

(२६०)

मूमल-महेन्द्र की कथा

महेन्द्र पवार नामक राजपूत एक बडे शहर के बादशाह की सेवा में कार्यरत था। बादशाह के यहां उसका बहुत मान-सम्मान था। कोई भी आदमी उसका हुक्म टालता नहीं। वह अक्लमंद और कला-चातुर्य से सपन्न तो था ही, साथ ही अनेक कार्यो में भी निपुण था। उम्र छोटी थी परतु था बडा बुद्धिमान।

एक दिन बादशाह सेना सहित घूमने निकला। जगल में अस्सी कोस दूर एक भव्य उद्यान में पडाव डाला। उस उद्यान से बीस कोस दूर एक बडा पर्वत था। वहा विद्याधर की पुत्री मूमल दे रहती थी। उसे देवी का इष्ट था। उसने वहा देवी का मंदिर बनाया।

मूमल दे जब विवाह योग्य हुई तो माता-पिता उसकी सगाई करने लगे।

तब मूमल दे ने माता-पिता से कहा– मैं तो अपनी इच्छा से वर चुनूगी और अब इस पर्वत पर स्थित महल में ही रहूगी। मेरे तो देवी मा का इष्ट है।

अब मूमल दे उस महल में रहने लगी। उस दिन भी वह महल में दीपक जलाकर सो रही थी। उस दीपक का प्रकाश बीस कोस दूर उस बाग तक दिखाई दे रहा था जिसमें बादशाह, महेन्द्र पवार और उसका साला रात्रि विश्राम कर रहे थे।

उस दीपक को देखकर बादशाह ने महेन्द्र को पूछा– उस पर्वत पर किसका दीया जल रहा है ?

तब महेन्द्र बोला– खुदाबद ! मुझे तो इसकी कोई जानकारी नहीं है।

सूर्योदय होने पर महेन्द्र पवार और उसका साला घुडसवारी करने निकले। आगे एक बहुत बडा तालाब आया, जहा घोडों को छोडकर दोनों विश्राम करने लगे। उसी समय मूमल दे की दासिया पानी भरने के लिए तालाब पर आईं। उन्होंने महेन्द्र पवार को रूपवान और पुण्यवान देखकर उसके साले से पूछा– यह पुरुष कौन है ?

तब महेन्द्र के साले ने बताया– ये महेन्द्र पवार हैं, बादशाह के खास आदमी। यहा घुडसवारी करने के लिए आए हैं।

यह सुनकर दासिया बोलीं– ठीक है।

दासिया पानी भरकर लौट गईं। उन्होंने जाकर मूमल दे से कहा– हे राजकुमारीजी ! आज हम पानी भरने गई तो देखा कि तालाब पर एक पुण्यवान और रूपवान पुरुष आया हुआ है। हमने उसे देखकर उसके साथ आए एक आदमी से पूछा तो उसने बताया कि ये तो बादशाह के खास आदमी हैं, इनका नाम महेन्द्र पवार है।

इस प्रकार दासियों ने मूमल दे को महेन्द्र पवार के बारे में बताया।

दासियों की बात सुनकर मूमल दे बहुत प्रसन्न हुई। उसने मन में विचार किया कि पूर्व में मेरे माता-पिता ने जब एक ज्योतिषी से पूछा था तो उसने बताया भी था कि इस कन्या का विवाह महेन्द्र पवार नामक पुरुष से होगा। मैंने भी उस समय प्रण लिया था। आज उसी के अनुरूप समाचार सुन लिए हैं। मैंने जो प्रण लिया था, वह पुरुष तो आ चुका है परतु मिलन हो तब बात बने।

यह विचारकर उसने दासियों से कहा– तुम तालाब की पाज पर जाकर बैठ जाओ। जब वे घुडसवारी करने आए तब तुम उन्हें यहा बुला लाना। उन्हें सारी जानकारी देकर मेरी ओर से कर-बद्ध प्रार्थना करके कहना कि हमारी राजकुमारी ने आपको बुलवाया है, अत कृपा करके पधारिए। उन्हें आपके आगमन की चाह और मन में बहुत आशा है, आप पधारकर उनकी मनोकामना पूर्ण कीजिए।

ऐसा सिखलाकर मूमल दे ने अपनी दासियों को तालाब पर भेजा। दासिया आकर तालाब की पाज पर बैठ गईं। कुछ देर बाद महेन्द्र पवार और उसका साला घोडे पर सवार होकर आए। उन्हें देखकर दासिया खडी हो गईं। दासियों ने विनम्रता पूर्वक महेन्द्र पवार से वैसे ही प्रार्थना की जैसे मूमल दे ने उनसे कहा था।

महेन्द्र पवार बोला— मैं तो विवाह नहीं करूगा।

तब उसके साले ने कहा— तिलक के समय ललाट क्यों हटा रहे हो ? यदि मूमल दे आपसे विवाह करना चाहती है तो इससे बडे सौभाग्य की बात और क्या हो सकती है ? जब दासिया आपसे बारबार विनय-निवेदन कर रही हैं तो आपको बादशाह से छुपकर मूमल के पास जाकर उससे विवाह कर लेना चाहिए।

साले द्वारा इतना समझाने के बावजूद महेन्द्र का मन नहीं बना। तब उसके साले ने कहा— एक बार जाकर देखने में क्या हर्ज है ? यदि तुम्हारा मन माने तो विवाह करना।

तब महेन्द्र पवार बेमन से दासियों के साथ जाने के लिए तैयार हुआ। जब वे पर्वत पर चढने लगे तो सबसे पहले सिहों की चौकी आई। तब दासियों ने महेन्द्र से कहा— यह प्रथम चौकी सिहों की है, अत यहा कोई भक्ष्य डालो।

महेन्द्र ने वहा भक्ष्य डाला। थोडा आगे चलने पर दासिया बोलीं— यह दूसरी चौकी सर्पों की है, अत इनके लिए भी भक्षण-सामग्री डालो।

तब उसने दूध-मिश्री के कटोरे भर-भरकर सर्पों के आगे रखे। उनसे आगे चलने पर तीसरी चौकी आई। दासियों ने बताया— यह चौकी कुत्तों की है। तब महेन्द्र पंवार ने रोटियां बनवाकर कुत्तों को डलवाईं।

अब वे और आगे चले। आगे महल का आगन काच-जडित था। मध्य में माणक-मोती और हीरे-पन्ने जडे हुए। दोलायमान पलग पर मूमल दे बैठी थी। दासियों ने आगे जाकर उसे बताया— राजकुमारीजी ! महेन्द्र पंवार पधारे हैं।

यह सुनकर वह शीघ्रता से पलग से उठ खडी हुई और अगवानी में जाकर महेन्द्र पंवार के पैरों में जा गिरी। मूमल दे ने ज्योतिषी के कहने पर जो प्रण ले रखा था उसके बारे में महेन्द्र पवार को विस्तार से बतलाया।

अब महेन्द्र पंवार और मूमल दे, दोनों उस झूलते हुए पलग पर बैठ गए। मूमल दे हाथ जोडकर बोली— बहुत दिनों से आपकी प्रतीक्षा थी। आज वह शुभ घडी आई है। धन्य है आज का दिन, सो आप महल में पधारे। मुझसे विवाह कर मेरी मनोकामना पूर्ण कीजिए।

महेन्द्र भी मूमल का रूप देखकर उस पर मोहित हो गया। मूमल दे के कहने पर उसने महल में ही गधर्व-विवाह कर लिया। विवाह-सस्कार सपन्न कर वे वापस उस पलग पर बैठ गए और प्रेम-प्रीति की बातें करने लगे।

महेन्द्र ने कहा– अब अपना मिलन तो बादशाह के हुक्म से ही हो सकता है। यदि साथ रहना चाहती हो तो मेरे साथ शहर चलो।

मूमल दे बोली– शहर में तो मैं नहीं जाऊगी। अतराय-कर्म की समाप्ति पर ही मिलन होगा।

महेन्द्र पवार और मूमल दे एक रात्रि साथ रहे।

अब महेन्द्र पंवार और उसका साला दोनों घोडों पर सवार होकर वहां से निकल पडे। वे दोनों वहा आकर बैठ गए जहा बादशाह ने सेना सहित बाग में पडाव डाल रखा था। तीसरे दिन बादशाह वहा से कूच कर शहर में आ गया।

एक दिन महेन्द्र पवार ने मन में विचार किया कि मेरी मा आखों से तो अधी है परतु वह मेरी दोनों स्त्रियों को दु ख देती रहती है। यदि मूमल दे को भी यहा ले आया तो उसे भी यह दु.खी कर देगी। ऐसा विचारकर उसने निर्णय लिया कि मूमल दे को वहीं रखना ठीक रहेगा। दूर रहने पर भी मूमल दे उसके मन में बसी हुई थी। उसे एक पल भी भूल नहीं पाया। मूमल के रूप-सौंदर्य और बुद्धिमता पर मुग्ध महेन्द्र पवार का नेह शहर में उसके साथ रहने वाली दोनों पत्नियों से धीरे-धीरे समाप्त होने लगा। अब उसकी उनमें कोई रुचि नहीं रही। हर समय मन में मूमल दे का ही खयाल रहता।

एक दिन महेन्द्र रेबारियों (एक जाति विशेष के लोग, जो ज्यादातर ऊट पालन करते हैं।) के ठिकाने गया। वहा जाकर उसने रेबारियों से कहा कि क्या तुम में से किसी के पास ऐसा ऊट है जो एक रात में सौ कोस जाकर वापस आ जाए?

तब एक रेबारी बोला– मेरे पास ऐसा ऊट है।

महेन्द्र ने उससे कहा– सध्या के समय उसे सजाकर तैयार रखना।

सूर्यास्त हुआ तब वह रेबारी और महेन्द्र पवार उस तेजतर्रार ऊट पर सवार होकर निकल पडे। अर्द्धरात्रि में मूमल दे के महल पहुच गए। महेन्द्र रात भर महल में मूमल के साथ रहा और सुबह होने से पहले उसी रेबारी के ऊट पर चढकर शहर लौट आया। इस प्रकार महेन्द्र अब प्रत्येक रात्रि को मूमल दे के महल में पहुचकर सासारिक सुख भोगने लगा। शहर में रहने वाली अपनी दोनों पत्नियों के प्रति उसका अनुराग और कम हो गया। महेन्द्र ने उनसे बातचीत भी बद कर दी।

महेन्द्र की दोनों पत्निया सोचने लगीं कि एक तो सास का दु ख, तिस पर पति ने भी बोलना छोड दिया। दोहरे दु ख से गुजरना पड रहा है। एक दिन जब सास ने कठोर वचन कहे तो वे दोनों रोने लगीं। तब सास ने पूछा– तुम दोनों रो क्यों रही हो ? तुम मुझ से तो शायद दु.खी हो परतु पति का सुख तो मिल रहा है।

तब वे बोलीं– पूरे बारह वर्ष बीत चुके हैं। आपका पुत्र कहां जाता है, हमें तो इसकी कोई जानकारी नहीं है।

महेन्द्र की मा अधी थी। फिर भी महेन्द्र के बारे में पता चलने पर वह रेबारियों के डेरे में गई। वहा जाकर उसने पूछा– मेरा पुत्र महेन्द्र किस रेबारी के घर आता है ?

तब किसी द्वेषी ने कहा– फला रेबारी के घर जाता है।

अब महेन्द्र की मा उस रेबारी के घर गई। उसे धमकाकर उससे सच उगलवाया। उस रेबारी ने बता दिया कि मैं और महेन्द्र मेरे ऊट पर सवार होकर मूमल दे के महल में जाते हैं।

महेन्द्र की मां ने चार कीलें मंगवाकर उस ऊट के पैरों में डलवा दीं। इससे ऊट गिर गया और अपने पैरों पर खडा होने में अक्षम हो गया।

बुढिया ने घर आकर अपनी बहुओं से कहा– अब मैं तुम्हारे सुख कर दूगी।

अब महेन्द्र सध्या के समय रेबारी के घर आया। ऊंट को निढाल पडा देखा। उसके पैर सभाले तो कीलें गड़ी हुईं दिखाई दीं। महेन्द्र ने ऊट के पैरों से कीलें निकलवाकर मरहम लगाया। रेबारी से पूछताछ की तो उसने सारे समाचार बताए।

उधर मूमल दे अपने महल में महेन्द्र के इतजार में बैठी थी। तभी उसकी एक सहेली मर्द का वेश धारण किए हुए आकर बोली– बहिन ! मैंने तुम्हारे पति के रूप की बहुत प्रशसा सुनी है, अत उसे देखने के लिए आई हू।

मूमल दे ने उसे बताया कि वे तो अर्द्धरात्रि के समय आएंगे, अत तुम यहीं पर रहो। अब वे दोनों बतियाने लगीं परतु महेन्द्र देर रात तक नहीं आया। तव मूमल दे ने अपनी उस सहेली से कहा कि वे तो अभी तक आए नहीं, अत अब हम दोनों इसी पलंग पर ही सो जाए। जब वे यहा पहुचकर ऊट को विठाएंगे तो हमें पता चल जाएगा।

अव मर्द वेश धारण किए हुए वह सहेली भी मूमल दे के साथ पलग पर सो गई। उधर महेन्द्र ऊट पर चढ़कर रात्रि के अतिम प्रहर में मूमल के महल पहुंचा। आगे मूमल दे को किसी अन्य पुरुष के सग सोया देखकर वह क्रोध से भर

उठा। उसने कटार निकालकर मूमल दे को मारना चाहा। फिर मन में विचार किया कि इससे स्त्री-हत्या का पाप लगेगा। यों विचारकर उसने एक पत्र लिखकर उसे कटार में डालकर उस कटार को दीवार में घुसेड दिया और उसी समय ऊंट पर चढकर अपने शहर लौट गया।

जब मूमल दे की आख खुली तो उसने दीवार में कटार गडी हुई देखी। उसने पास पहुंचकर कटार से वह पत्र निकालकर पढा। पत्र इस प्रकार था– "तुम्हें पराए पुरुष के साथ सोते हुए देख लिया है, अत अब तुम्हारे महल में इस जन्म में आने का तीन तलाक है।"

पत्र पढकर मूमल दे को बडी ठेस लगी। उसने अपनी सहेली को जगाकर विदा किया और खुद महेन्द्र के शहर में आई। बाग में डेरा किया। उधर महेन्द्र ने बादशाह से कहा– अब आपकी इच्छानुसार मुझे युद्धभूमि में भेज दीजिए।

तब बादशाह ने महेन्द्र को किसी लक्ष्य-क्षेत्र के लिए भेज दिया। पीछे से मूमल महेन्द्र पवार के घर पहुची। अपनी सास के पैर छुए। अब महेन्द्र की तीनों पत्निया इकट्ठी हुई। तब सास ने तीनों बहुओं को अढाई-अढ़ाई मासा (तौल विशेष) कस्तूरी दी। दोनों बहुओं और सास की कस्तूरी तो सवा-सवा मासा भर रही और मूमल दे के अढाई मासा ही रही।

तब सास ने जान लिया कि नई बहू बहुत पुण्यवान है। इस पर दोनों बहुओं को सास ने कहा– इसके आगे अपना जोर नहीं चलेगा। यदि यह जीवित रहेगी तो अपने को कभी सुख नहीं मिलेगा, अत मूमल दे को मरवाना ही ठीक रहेगा।

ऐसा विचारकर उन्होंने महेन्द्र का दुपट्टा हिंगलु से रगकर दासी के साथ मूमल दे के पास भिजवा दिया। दासी ने जाकर मूमल दे को वह दुपट्टा यह कहते हुए सौंप दिया कि महेन्द्र पवार तो युद्ध में काम आ गए, यह लो उनका दुपट्टा !

दुपट्टा देखकर मूमल दे ने अग्नि-स्नान करने की उद्घोषणा की। उसने अपने सेवकों से कहा– गाव के बाहर अग्नि-चिता तैयार करो, मैं अपने पति के पीछे सती होऊगी।

अब सेवकों ने अग्नि-चिता तैयार की। मूमल दे ने उस चिता में प्रविष्ट होकर अग्नि-स्नान कर लिया।

उधर महेन्द्र पवार को अनुकूल शकुन न होने से वह वापस लौट आया। उसने गांव के बाहर चिता देखकर पूछा– यह चिता किसकी जल रही है ?

तब सेवकों ने बताया– आपकी मृत्यु का समाचार सुनकर मूमल दे ने अग्नि-स्नान कर लिया है।

यह सुनकर महेन्द्र ने मन में विचार किया कि यह तो सती स्त्री थी और मुझ जैसे पापी ने इस पर झूठा लांछन लगाया। मैंने तो इसे इतना कष्ट दिया और इसने मेरे लिए अग्नि-स्नान कर लिया। यदि मेरे प्रति उसने इस प्रकार की प्रीति निभाई है तो मुझे भी इसी चिता में अग्नि-स्नान करना चाहिए। यों विचारकर वह घोडे सहित चिता में कूद पडा। दोनों साथ ही भस्म हो गए।

यह समाचार सुनकर पीछे मा और दोनों बहुओं ने रोना-पीटना शुरू कर दिया और विलाप करने लगीं। परंतु अब पश्चात्ताप करने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं था। अपने ही हाथों से ऐसा अकार्य करवाकर वे बहुत दु खी हुईं। उनकी शेष उम्र अशेष दु ख में व्यतीत हुई।

इस प्रकार जो अपने लिए सुख की चाह रखता है और दूसरों का बुरा चाहता है, उसका कभी भला नहीं हो सकता। पुण्य के बिना सुख नहीं मिल सकता।

(२६१)

लाली के लेखे

एक राजपूत और उसकी पत्नी। घर में दो ही प्राणी। उनके लाली नामक इकलौती और लाड़ली लडकी थी जिसका विवाह बडे घराने में कर दिया था।

लाली के पास पहनने के लिए आभूषणों की कोई कमी नहीं थी। पीहर पक्ष से भी खूब गहने बनवाए गए थे और ससुराल वालों ने भी खूब गहने करवाए।

एक बार लाली अपने पीहर में अस्वस्थ हो गई। कई वेदों ने उपचार किया परतु स्वस्थ नहीं हुई। कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। मा-बाप दु खी होकर विलाप करने लगे। बारह दिन बीत गए फिर भी मा-बाप का दु ख कम नहीं हुआ।

इधर एक ठग को इस बात का पता लगा कि लाली के मां-बाप को अपनी लडकी के प्रति अत्यत मोह। एक बार वह राजपूत तो किसी कार्यवश दूसरे गांव गया हुआ था, पीछे से वह ठग ज्योतिषी का रूप धारण कर लाली की मा के पास पचाग लेकर पहुचा।

लाली की मां ने उससे पूछा– आप कहां से आए हैं ?

तब ठग बोला— तुम्हारी लाली बिटिया ने मुझे भेजा है। उसने मुझ से कहा कि मेरे माता-पिता मेरी चिंता में व्यथित रहते हैं।

इस प्रकार ज्योतिषी के रूप में उस ठग ने लाली के बारे में और भी कई झूठे समाचार उसकी मां को सुनाते हुए कहा कि लाली ने अपने गहने मंगवाए हैं।

लाली की मां बड़ी खुश हुई— भला हो इस ज्योतिषी का, जो लाली के समाचार तो लाया। इस प्रकार खुश होकर उसने ज्योतिषी को लाली के सारे गहने सौंपते हुए कहा— ये गहने मेरी लाली को दे देना। उसे और भी किसी चीज की जरूरत पडे तो ले जाना परंतु तुम प्रतिदिन मेरे पास आकर लाली बिटिया के समाचार सुनाना।

अब वह ठग अपने घर आ गया। गहनों को जमीन में गाड़कर उसने ज्योतिषी के रूप में आकर फिर राजपूत की स्त्री को कहा— लाली बिटिया ने कपडे मगवाए हैं। इसी प्रकार बर्तन मंगवाए, शृगार-पेटी और अन्य वस्तुएं मंगवाईं। लाली की मा ने एक-एक कर उसे सारी वस्तुए दे दीं।

अब उसने उस ज्योतिषी का वेश धारण किए ठग से कहा— एक दिन हमारी लाली बिटिया के दर्शन तो करवा दे।

तब वह ठग बोला— लाली बाई ने कहा है कि जब मेरे पिता घर आएगे तब मैं माता-पिता दोनों से एक साथ ही मिलूगी।

यह बात कहकर ठग अपने घर आ गया। अगले दिन राजपूत भी युद्धभूमि से लौट आया। उसने अपनी स्त्री को प्रसन्नचित्त देखकर पूछा— तुम बडी खुश नजर आ रही हो, सो क्या कारण है ?

तब वह बोली— अपनी लाली के राजी-खुशी होने के समाचार आए हैं।

पति ने पूछा— किसने बताए ?

इसने कहा— ज्योतिषी ने बताए हैं।

यह सुनकर राजपूत के मन को झटका लगा। उसने जान लिया कि ज्योतिषी लाली के सारे गहने और सामान ले गया है। फिर भी उसने अपनी पत्नी से पूछा— लाली के सारे गहने मुझे दो, सो उसके ससुराल पहुंचा आऊं।

पत्नी बोली— वह तो लाली के लेखे लग गया।

उसने पूछा— कपडे ?

वह बोली— लाली के लेखे लग गए।

तब उसने पूछा– बर्तन आदि ?

पत्नी बोली– वे भी लाली के लेखे लग गए। डब्बी-कूपले और सिरख-पथरने आदि सारा सामान लाली के लेखे लग गया।

तब राजपूत ने जान लिया कि अवश्य ही कोई ठग ज्योतिषी का रूप धारण करके आया है। यह सोचकर वह चिता में पड गया।

पत्नी बोली– आप चिंता न करें, ज्योतिषी के रूप में वह ठग आता दिखाई दे रहा है।

यह देखकर राजपूत उस ठग के आने से पहले ही घर में छुपकर बैठ गया।

कुछ ही देर में वह ठग वहा पहुंचा और बोला– ए लाली की मा, लाली के समाचार सुनो !

तभी घर के अदर की ओरी में छुपा राजपूत हाथ में तलवार लेकर बाहर निकला। राजपूत को देखकर ठग दौड़ने लगा। राजपूत ने सोचा कि पैदल पहुंचकर तो इसे पकड नहीं पाऊगा। तब उसने घोडी पर सवार होकर ठग का पीछा किया।

अब आगे ठग और पीछे राजपूत। उसे देखकर ठग ने सोचा कि यह तो घोडी पर सवार है, अत आ पहुचेगा। तब वह ठग वटवृक्ष पर चढ गया। वटवृक्ष के पास पहुंचकर राजपूत भी घोडी से नीचे उतर गया और ठग के पीछे वटवृक्ष पर चढ़ने लगा।

तब वह ठग वटवृक्ष की शाखा पकडकर नीचे खडी घोडी की पीठ पर सवार हो गया और घोडी को भगाकर अपने गाव आ गया।

इधर वह राजपूत हताश होकर पैदल चलते हुए शाम तक अपने घर पहुचा। उसे पैदल देखकर उसकी पत्नी ने पूछा– घोडी कहा है ?

राजपूत बोला– वह भी लाली के लेखे गई।

राजपूतानी ने पूछा– तलवार कहा है ?

वह बोला– तलवार भी लाली के लेखे।

ऐसे भोले मनुष्य, जिन्हें मोह में अधे होने के कारण कुछ भी ध्यान नहीं रहता।

(२६२)

एक दिन का राज

दो साहूकारों के पुत्रों ने राजकुमार से दोस्ती कर ली। वे तीनों साथ-साथ खेलते थे और उनमें परस्पर अत्यंत प्रेम था। साहूकार के पुत्र ने राजकुमार से कहा– कुवरजी ! अभी तो आप हम से बहुत स्नेह रख रहे हैं परतु जब राजा बनोगे तो हमें भूल जाओगे।

राजकुमार बोला– मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूगा।

तब सेठ के पुत्र बोले– कुवरजी ! अभी तो आप कह रहे हैं परतु बाद में याद रखना बहुत कठिन है, अत वचन दीजिए।

राजकुमार बोला– मागो !

तब उन्होंने कहा– हम दोनों को एक-एक दिन का राज देना पडेगा।

अब राजकुमार ने दोनों को एक-एक दिन के राज के अलग अलग पत्र लिखकर सौंप दिए।

इस बात को काफी समय बीत गया। एक दिन राजा ने आयुष्य पूर्ण किया। तब राजकुमार ने राज्यभार सभाल लिया। सुखपूर्वक राज करने लगा।

उधर राजकुमार का एक बालमित्र अपनी दूकान में बही-पत्र टटोल रहा था। उसमें उसे वह पत्र मिल गया जिसमें राजकुमार ने उसे एक दिन के लिए राज सौंपने का वचन दिया था। अब वह पत्र लेकर श्रेष्ठीपुत्र राजा के पास चल पडा। आगे प्रोल के प्रहरी ने उसे पूछा– तुम कौन हो ?

तब उसने कहा– मैं राजा का बालमित्र हू।

प्रहरी ने सूचना भिजवाई तो राजा ने अंदर आने की आज्ञा दे दी। राजा के पास पहुच कर साहूकार के पुत्र ने वह पत्र दिखाया। पत्र देखकर राजा बोला– ठीक है, लो आज का राज तुम करो।

अव राजा तो रनिवास में चला गया और साहूकार का पुत्र सिंहासन पर वैठा। पूरे शहर में अपने राजा बनने की उद्घोषणा करवाई। इसके वाद उसने नाई को बुलवाकर कहा– जिस प्रकार राजा के हजामत बनाते हो, उसी तरह मेरी भी हजामत वनाओ।

नाई को हजामत बनाने में पूरा सवा प्रहर लगा। फिर उसने स्नान किया और नए वस्त्राभूषण पहने। छक्कर भोजन किया और सो गया। दिन के चौथे प्रहर में आख खुली। तव उसने शहर के सभी साहूकारों को इकट्ठा किया। सारी वस्तुओं

पर दुगुना कर लगा दिया। किसी साहूकार से लाख रुपए लिए और किसी से दो लाख। इस प्रकार पूरी प्रजा से यथायोग्य रुपए बटोरकर राज खजाने में डाले। वे रुपए अपने नाम उधार लिखवा दिए। संध्या के समय सभी साहूकारों को महल से विदा कर दिया।

रात्रि भोजन करने के बाद उसने भाग घुटवाई और नर्तकियों से नृत्य करवाया। देर रात्रि को सोने के कारण सुबह होने पर भी उसकी नींद नहीं खुली। तब राजा के सेवकों ने उसे धक्के मारकर बाहर निकाल दिया।

जब वह बाजार में आया तो लोग उधार के रुपए मागने लगे। कोई लाख रुपए माग रहा था तो कोई पचास हजार। एक ही दिन में उसने इतना कर्ज चढा लिया कि उधार देने वाले उसके घर का सारा धन-माल उठाकर ले गए। उसकी हवेली, दूकान और नोहरा आदि अचल सम्पत्ति भी छीन ली। इससे वह बहुत दु:खी हो गया। अब उसे एक वक्त की रोटी मिलना भी मुश्किल हो गया। उसने शेष जीवन घोर दु खों में व्यतीत किया।

इधर राजा के दूसरे बालमित्र साहूकार को भी अपने बही-पत्र-टटोलते हुए 'एक दिन का राज' वाला वह पत्र मिल गया। पत्र देखकर बडा खुश हुआ। अब वह भी उस पत्र को लेकर राजमहल की तरफ चल पड़ा। आगे प्रोल के प्रहरी ने पूछा– कौन हो तुम ?

उसने कहा– मैं राजा का बालमित्र हूं।

तब प्रोल के प्रहरी ने जाकर राजा से निवेदन किया– महाराज ! आपका एक बालमित्र साहूकार आया है, वह आप से मिलना चाहता है।

राजा ने कहा– उसे अंदर आने दो।

राजा के पास पहुंचकर उस बालमित्र ने उसे प्रणाम किया और वह पत्र निकालकर उसके सम्मुख रखा। पत्र पढकर राजा प्रसन्न हुंआ। राजा ने विचार किया कि पहले वाले बालमित्र ने एक ही दिन में राज्य के भडार भर दिए, अत इसे भी एक दिन का राज देकर देख लेते हैं, देखें यह क्या करता है। राजा ने उस बालमित्र साहूकार से कहा– यह ले भाई, आज का राज।

अब राजा तो रनिवास में जा बैठा और नए राजा ने पूरे शहर में अपनी आन-दुहाई दिलवायी। इसके बाद उसने सभी साहूकारों को बुलवाया। साहूकार सकते में आ गए। वे सोचने लगे कि पहले वाले एक दिन के राजा ने तो हमारा सारा धन लेकर राज-खजाना भर लिया, अव न जाने यह क्या आफत खडी करेगा ? लोग डरते-सहमते आकर उपस्थित हुए।

राजा ने उन लोगों से कहा— तुम लोग डर क्यों रहे हो ?

तब साहूकार बोले— पहले वाले एक दिन के राजा ने दुगुना कर लगाया था, इसी कारण घबरा रहे हैं। नया राजा बोला— तुम घबराओ मत।

अब उसने राज्य कर पहले से आधा कर दिया। राज्य की सीमा पर गधे की प्रतिमा स्थापित करवाकर (प्राचीन काल में यह परपरा थी कि किसी घोषणा का उल्लंघन करने वाला गधे सदृश माना जाता था, अत. लोग उसका उल्लघन नहीं करते।) इस सूचना का रोपण करवा दिया। सारे गुनाह माफ किए। किसी साहूकार को पाच हजार और किसी को दस हजार रुपए यूं ही दे दिए। तब लोग बडे प्रसन्न हुए। उसने अपने घर भी दस-बीस हजार रुपए का धन-माल पहुंचा दिया। रथ, डोली, पालकी और अन्य अनेक वस्तुए आवश्यकता के अनुसार घर पहुचाई। सूर्यास्त से कुछ समय पहले उसने पूर्व राजा को पुन सिहासन सौंप दिया।

राजा का वह बालमित्र साहूकार जब बाजार से होते हुए अपने घर लौटने लगा तो दूकानों में बैठे साहूकार उसे झुककर जुहार करने लगे। लोग उसके गुणगान करते नहीं थके। उसे धन्य, धन्य ! कहने लगे। इस प्रकार वह अपने घर आया तो सभी सज्जन-स्नेही बहुत प्रसन्न हुए।

(२६३)

खाती देखूं जीमतौ

किसी साहूकार के यहा एक खाती काम करता था। साहूकार उस खाती को ताजे माल खिलाता था। सेर भर की रोटी के ऊपर पाव घी और पाव गुड।

उस खाती को इस प्रकार का भोजन करते देखकर एक डोम (दमामी) ने सोचा कि खाती का काम अच्छा है। भोजन में कम से कम ताजा माल तो खाने को मिलता है। दमामी का काम बेकार है। कितने जनों के बाप-दादाओं के नाम लेकर उन्हें शुभराज करता हू फिर भी खाने को रूखे-सूखे और ठडे टुकडे मिलते हैं। खैर ! अब आज के लिए तो टुकड़े माग लाऊ। यह सोचकर वह रोटी की जुगाड में निकल पडा।

दोपहर को जब वह उसी रास्ते से वापस आया तो उसने देखा कि खाती खाना खाकर लक्कड़ चीरने में लग गया है। उसके सर से बहता पसीना पैरों तक आ रहा था। इस प्रकार खाती को कडी मेहनत के साथ कुल्हाडी से लक्कड चीरते देखकर वह सोचने लगा कि इससे तो मेरा काम ही अच्छा है। वह बोला—

(दोहा)

खाती देखूं जीमतौ, सहीज खाती होऊ ।
लक्कड़ा देखूं फाड़तौ, डूंब को डूंब रहूं ।।

अर्थात् जब खाती को खाना खाते हुए देखता हू तो मन करता है कि क्यों न मैं भी खाती का कार्य कर लू, परंतु जब लक्कड़ चीरते समय उसे पसीना-पसीना हुआ देखता हू तो मन कहता है दमामी का दमामी ही बना रहू।

(२६४)

दो-दो बातें नहीं हो सकतीं

एक जाटनी भूख से जूझ रही थी। उसके लालिया नामक एक बेटा था जिसे उसने दस मण (चार क्विटल) जवार (अनाज) के बदले बेच दिया।

उसके बाद जाटनी ने खेती की। खेत में खूब सारी जवार पैदा हुई। अब उसे अपना बेटा याद आया। वह मगरे पर चढकर जोर से आवाज देने लगी– हे लालिये बेटे ! जल्दी लौट आ। जल्दी आ रे लालिया, ओ लालिया ! अपने खेत में खूब जवार हुई है।

तब लोग बोले–

(दोहा)

ऊंचा मगरा री जाटणी, नेहड़लौ निवार ।
दो-दो वातां ना हुवै, लालीयौ नै जवार ।।

(अर्थात्– हे ऊचे मगरे पर रहने वाली जाटनी ! अपने स्नेह का निवारण कर। दो-दो बातें एक साथ नहीं हो सकतीं। जवार के बदले लालिये बेटे को बेच दिया और अब जवार होने पर पुत्र के लिए प्रलाप कर रही है। लालिये के बदले अब जवार से ही संतोष करना पडेगा।)

सुनकर जाटनी बहुत दुःखी हुई। पुत्र के लिए विलाप करने लगी, परतु अब कुछ नहीं हो सकता।

(२६५)

मूलदेव की कथा

जिस पुरुष में जुआ खेलने की लत लगी हो, उसके धर्म का नाश निश्चित है। इस सवध में यहां मूलदेव की कथा लिख रहे हैं –

उज्जयिनी नगरी में विचारधवल नामक राजा राज्य करता था। उसी नगरी में सुदर, कलावत और गुणों की खान माना जाने वाला देवदत्त नामक ब्राह्मण भी रहता था।

उधर पाटलीपुत्र नगर के राजा का पुत्र मूलदेव जुए के व्यसन में पडकर अपने पिता का धन बर्बाद कर रहा था। पिता ने सोचा कि यह पुत्र गुणवान तो है परतु जुआरी है।

मूलदेव पाटलीपुत्र से चलकर उज्जयिनी नगरी में गया। वहा वह औषधि विशेष से वामन-रूप धरकर देवदत्ता नामक वेश्या के घर के पास रहने लगा। वह मधुर स्वर में गाता था। उसका स्वरमाधुर्य और सगीत सुनकर देवदत्ता वेश्या ने अपनी दासी कुब्जा को भेजकर उसे अपने यहा बुलवाया। मूलदेव भी उससे मिलने को आतुर था। वह उस वेश्या के घर गया। वहा उसने वीणा वादन कर राग अलापी। देवदत्ता उसकी आवाज पर मोहित हो गई। उसने कहा कि ऐसी कला का जानकार कुरूप नहीं हो सकता।

तब मूलदेव अपने कृत्रिम रूप को हटाकर वास्तविक रूप में आया। अब देवदत्ता वीणा बजाने लगी। उसका वीणा-वादन सुनकर मूलदेव ने कहा— इस वीणा के बीच में तुम्हारा केश अटका हुआ है, उसके कारण ही यह स्वर भग हो रहा है।

देवदत्ता ने जब वीणा में केश अटका हुआ देखा तो उसे बडा आश्चर्य हुआ। उसने मन में विचार किया कि यह तो कोई विद्याधर अथवा देवता का गधर्व है। यह सोचकर वह मूलदेव पर आसक्त हो गई।

तब माता ने अपनी पुत्री देवदत्ता से कहा— इस निर्धन मूलदेव को छोडकर अचल जैसे धन सपन्न व्यक्ति का ध्यान धरो।

देवदत्ता ने जवाब दिया— मैं गुणों की अनुरागिनी हूं, धन की नहीं। ऐसा कहकर उसने परीक्षा करने के लिए दासी को भेजकर धनवान अचल से गन्ने मगवाए। दूसरी दासी भेजकर मूलदेव से भी गन्ने मगवाए।

अचल धनवान ने पूरी गाडी भरकर गन्ने भेजे। उन गन्नों को देखकर देवदत्ता वेश्या ने कहा— क्या मैं हथिनी हू, सो गाडी भरकर गन्ने भिजवाए हैं।

इधर मूलदेव ने गन्ने को छीलकर उसके छोटे-छोटे टुकडे बनाकर उसे एक उत्तम पात्र में रखा और वील, इलायची और मिश्री आदि सामग्री डालकर उस पात्र को देवदत्ता के पास भिजवाया।

यह देखकर द्वेष धरते हुए अचल ने उस वेश्या की माता को एक सौ आठ दीनार सौंपते हुए कहा– इस बार मूलदेव जब भी तुम्हारे यहा आए, मुझे खबर कर देना।

तब वेश्या की माता ने अपनी पुत्री को कहा कि अचल एक सौ आठ दीनार देकर गया है और यह कहकर गया है कि मैं बाहर जा रहा हू, अत आ नहीं पाऊगा।

यह सुनकर देवदत्ता ने मूलदेव को संदेशा भेज दिया। मूलदेव आकर सेज पर विराजमान हो गया। तभी वेश्या की माता ने इसकी खबर अचल को भिजवा दी। तब अचल भी आ गया। उसे आते हुए देखकर देवदत्ता ने मूलदेव को सेज के नीचे छुपा लिया। दुष्ट अचल सेज के ऊपर जम गया। वह स्नान और दातुन भी वहीं करता था। उसने मूलदेव को देख लिया और उसकी चोटी पकडकर बाहर निकालते हुए कहा– जीवित रहते हुए फिर कभी इस तरफ मुह मत करना।

इस प्रकार मूलदेव को लज्जित होकर वहा से निकलना पड़ा। उज्जयिनी से चला तो वेना नदी के तट पर उसे निर्घुण शर्मा नामक ब्राह्मण मिला। रास्ते में भोजन का समय होने पर उस ब्राह्मण ने भोजन किया परंतु उसने मूलदेव को खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया। इस प्रकार तीन दिन भूखा-प्यासा रहकर उसने जगल पार किया। अब क्षुधा पीड़ित मूलदेव ने उस ब्राह्मण को पूछा– भाई, यहा आस-प्रास कोई गाव है ?

ब्राह्मण बोला– हां, दाईं तरफ नजदीक में ही एक गांव है, परतु मैं तो वहां पर नहीं रुकूगा। यह कहकर ब्राह्मण आगे चल पडा।

चूंकि उस घने जंगल को मूलदेव ने उस ब्राह्मण के साथ ही पार किया था, अत इसे उपकार मानकर मूलदेव ने उस ब्राह्मण को कहा– जब मेरे पास धन-दौलत हों तब मुझ से जरूर मिलना।

यह कहकर ब्राह्मण को विदा किया। अब मूलदेव अकेला ही भिक्षा के लिए इधर से उधर भटकने लगा। तब कहीं पर उसे उडद-बाकले (उडद के उबले हुए दाने) मिले। उन्हें लेकर वह तालाब पर आया। तभी सामने से एक साधु मास-खमण के पारणे की गोचरी करने के लिए आता दिखाई दिया। मूलदेव ने विनय भाव से वे उड़द- बाकले उस साधु को वहरा दिए। मूलदेव की इस दानशीलता से उस क्षेत्र का देवता प्रसन्न हुआ। देवता ने मूलदेव से कहा– वर मागो !

मूलदेव वोला– देवदत्ता वेश्या, हजार हाथी और राज्य दीजिए।

देवता से यह वरदान लेकर मूलदेव आगे चला। वेना नदी के तट के पास तपस्वियों की जमात थी, मूलदेव भी रात्रि को वहीं रहा। जब उसे नींद आई तो उसने स्वप्न में चंद्रमा को मुख में प्रवेश करता हुआ देखा। एक तपस्वी के शिष्य ने भी यही स्वप्न देखा। सूर्योदय होने पर शिष्य ने अपने गुरु से स्वप्न का फलन पूछा। तब गुरु ने कहा— आज घी-गुड का रोटा मिलेगा।

स्वप्न के अनुरूप तपस्वी और शिष्य को वही मिला। मूलदेव ने भी प्रभात के समय नगर में जाकर एक स्वप्न-पाठक को प्रणाम करके उससे स्वप्न का फलन पूछा। तब उसने कहा— आज से सातवें दिन तुम राजा बनोगे।

सयोग से उसी नगर के राजा का निधन हो गया। वह नि.सतान था। तब लोगों ने एक घोडे पर मंत्र का प्रयोग कर उसे नए राजा की खोज के लिए छोड़ा। सातवें दिन वह घोडा घूमता-घूमता वेना नदी के तट पर पहुचा। वहा उसने मूलदेव को राजा के रूप में चुना। अब मूलदेव उस नगर का राजा बन गया। हजार हाथियों वाले राज्य को पाकर वह सब प्रकार से सुखी रहने लगा।

अब मूलदेव ने उज्जयिनी के राजा से मुलाकात की। कई लाख दीनार और द्रव्य भेंट कर उससे स्नेहभाव बढ़ाया। तब उसने देवदत्ता वेश्या को मंगवा लिया। मूलदेव ने उसे अपनी पटरानी बनाकर रख लिया।

अब एक दिन समुद्र के मार्ग से चलता हुआ अचल, वेना नदी के तट पर पहुचा। उसे कर चोरी के आरोप में पकड़ लिया गया। सेवकों ने उसे बधक बनाकर राजा के सामने हाजिर किया। राजा ने अचल को पहचान लिया।

राजा ने उससे पूछा— क्या तुम मुझे जानते हो ?

अचल बोला— महाराज ! आपको कौन नहीं जानता ?

अब अचल के सामने देवदत्ता को बुलवाया गया। देवदत्ता ने अचल को कहा— ये राजपुत्र हैं, जिनसे तुम द्वेष रखते थे।

यह सुनकर अचल अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना करता हुआ राजा के पैरों में गिर पडा। मूलदेव राजा ने उसे बेडी-बधन से मुक्त करवाकर विदा किया। अचल उज्जयिनी नगरी चला गया।

अब जिस ब्राह्मण ने मूलदेव के साथ जंगल का रास्ता पार किया था, वह मूलदेव के राजा बनने का समाचार सुनकर वहां आया। मूलदेव ने उसे गांव देकर प्रसन्न किया। इस प्रकार राजा मूलदेव अंतिम समय में धर्मपालन करता हुआ देवलोक गमन कर गया, जहां से मोक्ष को प्राप्त होगा। इस प्रकार जुए से धनहानि जानकर इस व्यसन को त्याग देना चाहिए।

(२६६)

वररुचि की कथा

मद कहो या मदिरा, जो पुरुष इसका सेवन करता है, उसका यश घटता है, अपयश बढता है। इस सबध में यहां वररुचि की कथा लिख रहे हैं –

पाटलीपुत्र नामक नगर में नद नामक राजा राज्य करता था। उसके मत्री का नाम सकडाल था, जिसके दो पुत्र थे– स्थूलिभद्र और श्रीयक।

अब एक दिन राजसभा में वररुचि नामक पडित आया। उसने उस राज्य की स्तुति में एक सौ आठ नए छंदों की रचना कर नंद राजा को प्रसन्न कर दिया। सभा में उपस्थित सभी लोग प्रसन्न हुए।

सकडाल मत्री केवल जैन धर्म की प्रशंसा किया करता था अन्य मतावलंबियों की नहीं। तब पडित वररुचि ने विचार किया कि किसी प्रकार सकडाल मत्री को प्रसन्न किया जाए। उसके प्रसन्न हुए बिना राजा दान में कुछ भी नहीं देगा। तब उसने सकडाल मत्री के घर जाकर उसकी स्त्री लक्ष्मीदेवी को आशीर्वाद देते हुए कहा– यदि मंत्रीजी राजा के आगे मेरी प्रशसा कर दे तो मैं राजा के दान का पात्र बन जाऊगा। तुम उन्हें समझाकर कहो कि वे राजा के आगे मेरी प्रशसा करें।

यह बात सुनकर लक्ष्मीदेवी ने भोजन के समय अपने स्वामी सकडाल मत्री को कहा– यदि कोई परदेशी ब्राह्मण आकर राजा से दान पाता है तो इसमें तुम्हारा कौनसा धन लगता है ?

अपनी स्त्री का कहा मानकर सकडाल मत्री ने राजा के समक्ष पंडित वररुचि की प्रशसा कर दी। राजा ने प्रसन्न होकर वररुचि को एक सौ आठ दीनारें दीं। इस प्रकार वररुचि को दान-सम्मान पाते हुए बहुत दिन हो गए। तब मत्री ने सोचा कि ऐसे तो राज खजाने का धन घटता जाएगा। इस प्रकार के फालतू खर्च को तो रोकना ही उचित रहेगा। यह विचारकर मत्री ने राजा से कहा– यह ब्राह्मण आपको पुराने-काव्य सुना रहा है। इनकी रचना इसने नहीं की है। ऐसा काव्य तो मेरी सातों पुत्रियों को भी याद है।

अब मंत्री की सात कन्याए कनात के पीछे बैठ गईं। उस ब्राह्मण ने राजा के समक्ष जो काव्य सुनाया उसे सुनकर इन कन्याओं ने भी विद्या के प्रभाव से उसे दुबारा सुना दिया। तब राजा उस ब्राह्मण पर क्रोधित हुआ और उसका दरबार में आना बद करवा दिया।

अब वह ब्राह्मण सध्या के समय गगा नदी के बीच एक सौ आठ दीनारों की थैली रख आता और सुबह जब स्नान और गगा-स्तुति करके लौटता तो वे

दीनारें घर ले आता। लोगों से कहता— मुझे गगा देवी ने दान दिया है। इस प्रकार वह लोक में यश प्राप्त करने लगा।

उस ब्राह्मण के कपट की पोल खोलने के लिए मत्री सकडाल ने रात्रि के समय सेवक को भेजकर नदी में से एक सौ आठ दीनारों की थैली मगवा ली। सूर्योदय होने पर राजा और अन्य गणमान्य लोग नदी के किनारे पहुच गए। उस ब्राह्मण ने स्नान करते हुए गगा-स्तुति की परतु आज दीनारों की थैली नहीं निकली। इस प्रकार वह लोगों के सामने बहुत लज्जित हुआ। तब सकडाल मत्री ने एक सौ आठ दीनारों की वह थैली राजा और अन्य गणमान्य लोगों को दिखाकर उस ब्राह्मण को सौंपी। तब वह ब्राह्मण शर्मिंदा होकर एकात के एक नगर में चला गया और वहां बालकों को पढ़ाने लगा।

अब सकडाल मंत्री के पुत्र श्रीयक का विवाह तय हुआ। उस विवाह में राजा को भेंट देने की इच्छा से शस्त्र, छत्र, चामर और हाथी-घोडों की व्यवस्था की जाने लगी। वररुचि ब्राह्मण को मिनी नामक दासी से इस बात की खबर लग गई। वह नगर के बालकों को इस प्रकार पढाने लगा—

नंद राय नवि जांणण ही, जे सकडाल करेसि।
नद राय कू मारनै, सिरीयौ राज ठवेसि ॥

यह दोहा बालकों को मौखिक याद हो गया। यह बात जव राजा के कानों में पडी तो उसने सेवक को सच्चाई जानने के लिए मत्री के क्रियाकलापों की जानकारी लेने भेजा। सेवक ने लौटकर राजा को बताया कि लोकवाणी सत्य है।

यह सुनकर राजा क्रोधित हुआ। उसने मत्री के पूरे परिवार का खात्मा करने की ठान ली। राजा की ऐसी उग्र मानसिकता देखकर मंत्री ने अपने पुत्र श्रीयक से कहा— सुबह जब मैं राजा के पास जाऊगा, जहर खाकर जाऊगा। तब तुम आकर मेरा मस्तक विच्छेद कर देना। ऐसा करने से ही पूरे परिवार को सकुशल रख पाओगे।

इस प्रकार सकडाल मत्री ने विकल होकर अपने पुत्र श्रीयक को सारी वात समझाई। तव श्रीयक ने वैसा ही किया।

यह देखकर राजा ने श्रीयक को कहा— यह तुमने क्या किया ? श्रीयक बोला— मेरा पिता राजा का गुनाहगार था, ऐसा पिता किस काम का ?

यह सुनकर राजा वहुत प्रसन्न हुआ। उसने श्रीयक को अपना मत्री नियुक्त कर दिया। श्रीयक के भाई स्थूलिभद्र ने वैराग्य प्राप्त कर दीक्षा ग्रहण कर

ली। जब श्रीयक को इस बात का पता लगा कि उसके पिता की मृत्यु वररुचि के वचन के कारण हुई है, तब वैर लेने की चाह से उसने उपकोशा नामक वेश्या को बुलवाकर उसको कहा— तुम ऐसा कार्य करो जिससे वररुचि तुम्हारे वश में आकर मदिरा-पान करने लगे।

मंत्री के कहने पर उपकोशा वेश्या वररुचि को अपने वशीभूत कर उसे मदिरा पिलाने लगी। यह खबर पाकर मत्री ने कमल-पुष्प पर मेढल के फल का पुट देकर वररुचि को राजसभा के बीच बुलवाया। कमल देखकर वररुचि उसे सूघने लगा। तब मदिरा की बदबू प्रकट हो गई। तब वहा उपस्थित सभी लोगों ने उसका अपमान किया। ब्राह्मण होकर मदिरा-पान करने के प्रायश्चित के स्वरूप उसे गर्म शीशा पिलाया गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। मरकर नरक में गया।

इस प्रकार मदिरा पीने से अपयश फैलता है। मरने के बाद भी हीन गति को प्राप्त होता है। ऐसा जानकार मदिरा-पान नहीं करना चाहिए।

(२६७)

अजीत की कथा

वेश्या के पास जाने से कुल का विनाश होता है। यहां अजीत की कथा लिख रहे हैं :—

वाणीपुर नगर में जितशत्रु राजा राज्य करता था। उसकी पटरानी का नाम श्री था। उसी नगर में विजयमित्र नामक एक सार्थवाह निवास करता था। उसकी स्त्री का नाम सुभद्रा था। उनके एक पुत्र था। पूर्व भव में वह हस्तिनापुर के भीम नामक शिकारी का पुत्र था। भीम की स्त्री का नाम उत्पला था। उस पुत्र का नाम था— गोत्रस।

वह शिकारी के रूप में अनेक जीवों के नाक-कान आदि भेदता। ऐसे पाप-कर्म करते हुए उसने पाच सौ वर्ष की आयु पूर्ण की। पश्चात वह नरक में गया, जहा तीन सागरोपम आयु तक रहा। वहा से च्युत होकर उसने विजयमित्र सार्थवाह के यहा पुत्र-रूप में जन्म लिया।

तत्काल प्रसवित पुत्र को माता ने अपवित्र भूमि से उठाया। उसका नाम अजीत रखा गया। अजीत यहां सुखपूर्वक रहने लगा।

वहुत दिनों वाद समुद्र यात्रा में निकले हुए सार्थवाह विजयमित्र के जहाज वीच समुद्र में टूटकर डूब गए, जिसके कारण विजयमित्र मृत्यु को प्राप्त हुआ। पति

के मृत्यु-वियोग से दुखी सुभद्रा की भी मृत्यु हो गई। तब राजा ने अजीत को घर से निकालकर उसका घर अन्य किसी को दे दिया।

अब अजीत स्वच्छदवृत्ति से रहने लगा। वह सातों ही प्रकार के व्यसनों का सेवन करता था। वह कामध्वजा वेश्या के यहां भोग-विलास करता हुआ सुखपूर्वक रहने लगा।

एक बार राजा जितशत्रु की श्री नामक रानी अस्वस्थ हुई। रोग के कारण वह अत्यत दुर्बल हो गई। तब राजा उस वेश्या के यहा पहुंचा। वहा उसने अजीत को वेश्या से सुख-विलास करते हुए देखा। यह देखकर क्रोधित राजा ने अजीत को बधन में डलवा दिया। बाद में उसे पूरे नगर में घूमाते हुए शूली पर लटका दिया। अजीत मृत्यु को पाकर पहली नरक में गया।

इस प्रकार वेश्या की सगति से कुल का विनाश होता है, यह जानते हुए उत्तम कुल के मनुष्यों को इस दुर्व्यसन का त्याग करना चाहिए।

(२६८)

राजा श्रेणिक की कथा

हिंसा, जीव-हत्या से दया-धर्म का नाश हो जाता है। यहां राजा श्रेणिक की कथा लिख रहे हैं :–

राजगृह नामक नगर में राजा श्रेणिक राज्य करता था। उसके सम्यक्त्व को प्राप्त करने से पहले की बात है। वह शिकार करने के लिए निकला। आगे जगल में एक गर्भवती हरिनी थी। उस हरिनी को राजा श्रेणिक ने एक ही तीर में ढेर कर दिया। हरिनी के साथ उसके गर्भ में पल रहा बच्चा भी मर गया। हरिनी और उसके छौने को मरा हुआ देखकर राजा श्रेणिक दया-विरोधी वचन कहने लगा– मेरे अदर कितनी शक्ति है सो मैंने एक ही तीर के प्रहार से हरिनी और उसके गर्भस्थ शिशु, दोनों को प्राणरहित कर दिया।

ऐसा कहकर उसने निकाचित कर्म के साथ नरक आयु का बधन बाध लिया। उन कर्मो से कितने ही सत्कर्म करने पर भी मुक्ति नहीं मिल सकती। बाद में उसने अनाथी मुनि से सम्यक्त्व धारण किया। निकाचित कर्मों के बधन के कारण उसे पहले ८४,००० वर्ष की नरक-आयु पूर्ण करनी पडेगी। आगामी चौवीसी में वह प्रथम पद्मनाभ नामक प्रथम तीर्थंकर होगा परंतु अभी तो वह नरक में पडा है।

इस प्रकार हिंसक कर्म की कभी सराहना नहीं करनी चाहिए।

(२६९)

बृहष्पति पुरोहित की कथा

पराई स्त्री की सगति करने से सपूर्ण धन का नाश तो होता ही है, इस अधर्म के कारण नरक-गति में जाना पडता है। यहां बृहष्पति पुरोहित की कथा लिख रहे हैं –

कसूबा नगरी में सतानीक राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम मृगावती था। उनके एक पुत्र था। उसका नाम युवराज उदायन था। उदायन की पत्नी का नाम पद्मावती था। राजा का पुरोहित सोमदत्त था और उसकी पत्नी का नाम वसुमती था। उनके बृहष्पतिदत्त नामक एक पुत्र था।

समय आने पर राजा सतानीक का निधन हो गया। युवराज उदायन राजा बना। बृहष्पतिदत्त को राज्य का पुरोहित बनाया गया। बृहष्पतिदत्त पुरोहित राजा का बालमित्र और अत्यंत विश्वासपात्र था, अत वह जब कभी भी राजमहल में जाता तो उसे कोई मना नहीं कर पाता था।

एक दिन उदायन राजा ने उस बृहष्पतिदत्त पुरोहित को रानी पद्मावती के साथ सासारिक सुखों का उपभोग करते हुए देख लिया। तब राजा ने क्रोधित होकर अपने सेवकों से बृहष्पतिदत्त पुरोहित को बंधन में डलवा दिया। बाद में उसका घर और सारा धन-माल छीनकर उसे शूली पर चढ़वा दिया। वह पुरोहित मरकर नरक में गया।

इस प्रकार पराई स्त्री की संगति करने से धन का नाश तो होता ही है, नरक में भी जाना पडता है। यह जानकर पर-स्त्री का त्याग करना चाहिए।

(२७०)

क्रोध से हानि

उज्जयिनी नगरी में समुद्रदत्त नामक सेठ निवास करता था। उसकी पत्नी का नाम धारिणी था। उनके घर पर यज्ञदत्त काम करता था। कुछ समय बाद रोगग्रस्त होने के कारण सेठ समुद्रदत्त मृत्यु को प्राप्त हो गया। पुत्र ने अपने पिता के मृत्यु-संस्कार के कार्य संपूर्ण करवाए।

कर्म-योग से समुद्रदत्त की पत्नी धारिणी, यज्ञदत्त पर आसक्त हो गई। कहा भी गया है कि यौवनावस्था में काम पर नियत्रण रखना बडा कठिन होता है।

यज्ञदत्त के साथ उसके इस लोकविरुद्ध कृत्य के लिए पुत्र शिवकुमार माता को वर्जित करता।

तब धारिणी ने एक दिन यज्ञदत्त को कहा कि मेरा पुत्र शिवकुमार हम लोगों के अनुकूल नहीं है। जैसे कुमुद को सूर्य, तट को नदी का प्रवाह और जगल को दावाग्नि विनिष्ट कर देती है उसी प्रकार शिवकुमार आपका विनाश कर देगा, अत उसे षड्यत्रपूर्वक मरवा दीजिए।

तब यज्ञदत्त ने कहा— तुम्हारी यह बात युक्तिसंगत नहीं है। यह तुम्हारा पुत्र है और मेरा स्वामी। इसी के पुण्य-प्रताप से हम सुखपूर्वक रह रहे हैं, भला स्वामी से द्रोह करने का पाप कैसे किया जा सकता है ? ऐसे पाप के बारे में तो सोचा भी नहीं जा सकता।

धारिणी बोली— जो हमारे सुख में विघ्न पैदा करने वाला हो उसे मारने में कैसा पाप ?

धारिणी का यह वचन मानकर विषयासक्त यज्ञदत्त ने शिवकुमार को मारने की ठान ली। अब धारिणी ने उसके साथ षड्यत्र रचकर शिवकुमार को कहा— हे पुत्र ! तुम किसी का विश्वास मत करना।

एक बार फिर उसने छलपूर्वक शिवकुमार को कहा— हे पुत्र ! ग्वाले गोकुल की रक्षा भली भांति नहीं कर रहे हैं, अत. तुम दोनों वहा जाओ।

तब शिवकुमार और यज्ञदत्त हथियार लेकर गोकुल जाने के लिए रवाना हुए। वे दोनों आगे-पीछे चलने लगे। दोनों में से किसी को परस्पर विश्वास नहीं रहा। ऊबड-खाबड पथ पर चढ़ते-उतरते समय अचानक यज्ञदत्त ने म्यान में से तलवार निकाली। यज्ञदत्त की इस हरकत को जानकर शिवकुमार आगे दौड गया। गोकुल पहुचकर उसने ग्वालों को समझाया। वे सारे रात्रि के समय गायों के बाडे में ही बिस्तर बिछाकर सो गए। कुछ देर बाद शिवकुमार उठा। उसने अपने पथरने पर घास-फूस बिछाकर ऊपर चद्दर डालकर उसे ढक दिया। वह स्वय गायों के बीच में छुपकर खडा हो गया। यज्ञदत्त वहा पहुचा तो उसने शिवकुमार की खाली सेज पर तलवार से प्रहार किया। तभी पीछे से शिवकुमार ने आकर यज्ञदत्त को मार गिराया।

अब शिवकुमार स्वय ही चिल्लाने लगा— अरे चोरों ने यज्ञदत्त को मार डाला, चोरों ने यज्ञदत्त को मार डाला !

उसका शोर सुनकर सभी ग्वाले दौडकर आए। तब तक शिवकुमार ग्वालों

के साथ चोरों का पीछा करने का बहाना बनाते हुए बाड़े का एक चक्कर निकालकर वापस आ गया।

इस प्रकार यज्ञदत्त के चोरों द्वारा मारे जाने की बात गढकर शिवकुमार अपने घर लौट आया। तब उसकी माता ने पूछा– यज्ञदत्त कहा है ?

शिवकुमार बोला– वह पीछे आ रहा है। शिवकुमार सोचने लगा कि देखो, कर्मविपाक के कारण माता अपने पुत्र को ही मरवाना चाहती है। इसी सोच-विचार में वह पूरी रात सो नहीं पाया। तब उसे दिन में निद्रा आने लगी।

इधर माता ने देखा कि पुत्र शिवकुमार के खाडे (हथियार) पर चींटिया चढ़ रही हैं। जब उसने खाडे को निकालकर देखा तो वह खून से सना हुआ था। तब धारिणी ने जान लिया कि शिवकुमार ने यज्ञदत्त को मार दिया है। यह जानकर माता धारिणी ने निद्रा में सोए शिवकुमार को उसी खांडे से मार डाला। शिवकुमार की धाय माता पास में ही अनाज कूट रही थी। धारिणी का यह कृत्य देखकर धाय माता उठी और उसने धारिणी के सर पर मूसल दे मारा। मूसल के प्रहार से धारिनी भी मर गई।

इस प्रकार वे तीनों निर्दयता से अंतर्द्रोह करते हुए मृत्यु को प्राप्त हुए।

(२७१)

मूर्ख की सेवा

मूर्ख व्यक्ति की सेवा नहीं करनी चाहिए। निम्न और हीन व्यक्ति की सेवा भी नहीं करनी चाहिए। यहा मोदकी तपस्वी की कथा लिख रहे हैं –

वद्रअचल नामक गाव के पास एक जटाधारी मूर्ख तपस्वी रहता था। उसने वनोद्यान में अपना आश्रम बना रखा था। ग्रामीण जन उस अज्ञान तपस्वी से प्रभावित होकर उसकी विशेष सेवा करते थे।

इस प्रकार कई दिनों बाद एक देवता कामधेनु के रूप में आया। वह कामधेनु उस उद्यान में सरस हरी घास चरने लगी। तब उस कामधेनु ने तपस्वी को कहा– तुम भी मेरे साथ नदन-वन में चलकर मनोवांछित लड्डुओं का भोजन करो।

तब वह कामधेनु उस तपस्वी को अपनी पूछ पकडवाकर आकाश में उडने लगी। नदन वन में लाकर उस तपस्वी को सरस लड्डुओं का भोजन करवाया। अव वह तपस्वी लड्डुओं के लोभ में प्रतिदिन कामधेनु की पूछ पकडकर वहा जाने लगा।

एक दिन गांव वालों ने पूछा कि तुम प्रतिदिन कहां जाते हो ? तब उस मूर्ख तपस्वी ने उन ग्रामीणों को लड्डुओं का भोजन करने की बात बतला दी। यह बात सुनकर गांव के लोग कहने लगे– हमें भी वे लड्डु दिखलाओ। तुम्हारी कृपा से हमें भी मोदकों का भोजन मिले। उसे हम तुम्हारी सेवा का प्रतिफल मानेंगे।

यह सुनकर वह मूर्ख तपस्वी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने ग्रामीणों को कहा कि मैं कामधेनु की पूछ पकड़ूगा। मेरा शरीर इतना समर्थ है कि मैं तुम सब को साथ ले चलूं, अत तुम में से एक मुझे पकड लेना और फिर शृंखलाबद्ध होकर एक-दूसरे के पैर पकड लेना। वहा पहुचने पर मैं अवश्य ही तुम्हें लड्डुओं का भोजन करवा दूगा।

तपस्वी की बात सुनकर सभी गांव वाले उसके पास ही बैठे रहे। अब आधी रात होने पर कामधेनु आई। घास-फूस चरने के बाद कामधेनु की पूंछ को उस तपस्वी ने पकड लिया। उसका पाव पकड़ सभी गांववालों ने शृंखलाबद्ध होकर एक-दूसरे के पैर पकड लिए।

अब कामधेनु आकाश में उडने लगी। तब बीच में गाव के लोगों ने उस तपस्वी को पूछा कि वे लड्डु कितने बडे हैं ? तब उस मूर्ख तपस्वी ने अपने हाथों को फैलाकर कहा कि लड्डु इतने बडे हैं। उसके ऐसा करते ही कामधेनु की पूंछ छूट गई। उस तपस्वी के साथ सभी गाववाले धरती पर आ गिरे। किसी का मुह फूटा, किसी के दात टूट गए। किसी के हाथ टूटे और किसी के पैर। गाव के लोग भी उसके साथ नीचे गिरे। सभी बडे दुखी हुए और जगत् में हसी के पात्र बने।

इस प्रकार मूर्ख की सेवा नहीं करनी चाहिए।

(२७२)

लेहताण !

एक सेठ का लडका बहुत भोला था। उसमें जरा भी अक्ल नहीं थी। घर में धन बहुत था, अत. उसका विवाह बडे घराने में किया गया। उसे सास-श्वसुर और साले-सालिया भी भोले ही मिले।

एक बार वह नाई को साथ लेकर अपने ससुराल गौना करने गया। ससुराल वालों ने अपने जमाई का तो खूब आदर-सत्कार किया परतु नाई की पूछ नहीं हुई। तब नाई ने गुस्से में आकर जमाई को कहा– ससुराल में तुम्हारा बहुत अनादर हो रहा है। पूरे गाव में घर-घर एक बात को लेकर तुम्हारी निदा हो रही है।

जमाई ने पूछा– किस बात की ?

तब नाई ने कहा– तुम खाना बहुत ज्यादा खाते हो। ससुराल में आदमी को भूखा रहना चाहिए, भले ही जूठा छोडना पडे। यदि तुम्हें भूख ज्यादा सताए तो मेरे पास आ जाना।

अब जमाई भूखा रहने लगा। दो-चार दिन हो गए, जमाई पूरा खाना नहीं खाता था। तब सास-श्वसुर आदि ने विचार किया कि जमाई के कोई शारीरिक अस्वस्थता है, इसी कारण यह पूरा खाना नहीं खा रहा है।

एक रात्रि जब पत्नी को नींद आ गई तो जमाई उठकर नाई के पास गया। जमाई ने नाई को कहा– भाई ! मैं तो भूख के मारे मर रहा हूं।

तब नाई ने उस जमाई को कोठे (खाने-पीने के सामान का कोठार) के केलू उतारकर अगोछे के सहारे नीचे उतारा, जो सास-श्वसुर के घर में था। नाई ने जमाई से कहा कि जब तुम खा-पीकर छक जाओ तो एक दही की हडी अंगोछे से बांध देना, सो मैं भी खा लूगा। छककर खाना खाने के बाद तुम कहना– ले ताण, ले ताण, ले ताण। तब मैं तुम्हें ऊपर खींच लूंगा।

जमाई ने दही की हंडिया अगोछे से बाध दी। नाई ने उसे ऊपर खींचकर उसमें से पाव-आधा सेर दही खाया और बाकी कोठे में बैठे जमाई के सर पर गिरा दिया। इससे जमाई की दाढी-मूंछ और शरीर के कपडे दही से भर गए।

जमाई ने अपने को ऊपर खींचने के लिए नाई को पुकारा– ले तांण, ले ताण, ले ताण।

जमाई की आवाज सुनकर नाई तो कोठे के केलुओं को यथावत लगा अपने कमरे में जाकर सो गया। उधर जमाई के चिल्लाने से सास-श्वसुर जागे।

सास बोली– लगता है कोठी में लेहताण घुस गई है।

तब सास-श्वसुर भागकर कोठे के पास आए। बेटा और उसकी बहू भी भागकर आए। बोले– अरे क्या हुआ ?

तब पिता ने कहा– कोठे में लेहताण घुस गई है।

यह सुनकर नाई आया और बोला– आप लोग घबराइए मत, मैं कोठे में उतरकर लेहताण को बाहर निकाल दूगा।

अब नाई कोठे में घुसा। जमाई को पकड़कर बाहर निकाला और उसे सास-श्वसुर के आगे पटकता हुआ बोला– तुम्हारे कर्म फूट गए हैं। लेहताण तो तुम्हारे जमाई को लग गई है। अब मैं तो अपने घर चला। अगर तुम्हारा जमाई मर गया तो तुम्हारी बेटी विधवा हो जाएगी।

यह सुनकर उन्होंने नाई को पकडे रखा और कहा— किसी प्रकार से हमारे जमाई को ठीक कर दो।

इस पर नाई बोला— ठीक तो कर दूगा परतु रुपए पूरे सौ लूगा।

बेचारा जमाई नीचे लज्जावश निढाल पडा था। ससुराल वालों ने नाई को सौ रुपए देते हुए कहा— भाई ! अब जमाई में से लेहताण को बाहर निकालो।

तब नाई ने कहा— ठीक है निकाल दूगा परतु तुम्हारे में से कोई मेरे पीछे आएगा तो उसमें यह लेहताण घुस जाएगी।

इससे डरकर उनमें से एक भी जना नाई के साथ नहीं गया। नाई ने जमाई को तालाब के किनारे ले जाकर कहा— अब तुम्हें जिस चीज की इच्छा हो वह खाओ।

यों कहकर उसे वापस सास-श्वसुर के पास ले आया। सेठ-सेठानी और ससुराल के सभी परिजन खुश हुए। अब वे नाई की आवभगत करने लगे। इस प्रकार नाई ने झूठी लेहताण लगा दी। आज ससार में भी ऐसी ही लेहताण लगी हुई है।

(२७३)

बहिन ! सर क्यों धुन रही हो ?

एक ब्राह्मण के पांच बेटे और चार बेटियां थीं। सभी भाई-बहिनों के विवाह किए हुए थे। सबसे छोटे भाई ने एक दिन पिता से प्रार्थना की— मैं तो पढने के लिए काशी जाऊगा।

पिता ने सोचा कि यह भोला है, अत अगर पढ लेगा तो ठीक ही है। यह विचारकर उसे पढने के लिए काशी भेज दिया। उसने वहा बारह वर्ष तक विद्याध्ययन किया। एक गूनी (बैल के दोनों तरफ लदे हुए दो जुडवा बोरे) में समाए, इतने ग्रथ पढे। पढ़ाई पूरी करके उसने उन ग्रथों को गूनी के एक तरफ के झोले में भरा और उसे बैल पर लादकर घर लौटने लगा। गूनी गिरे नही, इस लिए उसे एक तरफ से वह पकड़े हुए था।

अपने शहर के पास वाले गाव में पहुंचने पर वह तालाव में पशु की तरह पानी पीने लगा क्योंकि उसने एक हाथ से ग्रथों से भरी गूनी के एक पासे को पकड रखा था।

उसे पशुवत पानी पीते देखकर एक बुद्धिमान बहिन बोली— अरे भाई ! यों क्या पानी पी रहा है ?

तब वह बोला— क्या करू बहिन, गूनी के एक झोले में ये जितने ग्रथ हैं उतने ही पढ पाया, अत गूनी के एक तरफ का झोला पकडे रहना पडता है।

उसे भोला जानकर उस बहिन ने समझाया— अरे भाई, इन ग्रथों को आधे-आधे बांटकर दोनों तरफ भर लो।

ऐसा करके जब उसने गूनी को बैल पर लादा तो वह गिरी नहीं। तब वह हाथ जोड़कर बोला— बहिन ! तुमने तो बडी अच्छी अक्ल दी है। मैंने बहुत शास्त्र-ग्रंथ पढे परतु कहीं भी यह उल्लेख नहीं मिला कि किसी सामग्री को आधी-आधी करके रखने से वह गिरती नहीं है।

उस बहिन ने विचार किया कि यह इतना ही मूर्ख है या इससे भी बढकर है। यह सोचकर वह अपना सर धुनने लगी।

तब वह बोला— बहिन ! तुम सर क्यों धुन रही हो ?

उस बहिन ने कहा— भाई ! तुम्हारे घर में एक बात बहुत खराब हुई है।

उसने पूछा— बहिन ! ऐसी क्या बात हो गई ?

बहिन बोली— तुम यदि दु खी न हों तो बतलाऊं।

वह बोला— मैं दु:ख प्रकट नहीं करूगा। जो बात हुई है सो कहो।

तब उस बहिन ने कहा— तुम्हारी पत्नी विधवा हो गई है। मन में इसी बात का दु:ख उत्पन्न हुआ इसीलिए मैंने अपना सर धुना था।

यह सुनकर वह अपना सीना और सर पीटने लगा। जोर-जोर से रोने लगा। कहने लगा— बेचारी ब्राह्मण की बेटी का शेष जीवन कैसे व्यतीत होगा ?

तब उस बहिन ने अच्छी तरह से जान लिया कि यह तो बिलकुल भोला है। वह बोली— अब तुम जल्दी से अपने घर चले जाओ अन्यथा रात्रि में तुम्हारे ये ग्रथ कोई छीन लेगा।

अब वहा से उसने बैल को तेजी से दौड़ाया, सो अपने शहर के बगीचे में आकर ठहरा। बोरी बिछाकर बैठ गया और रोने लगा। किसी ने जाकर उसके पिता को समाचार दिए। तब माता-पिता, भाई-भाभिया और बहिनों ने वहा आकर पूछा— अरे भाई ! तुम रो क्यों रहे हो ?

उसने कुछ जवाब नहीं दिया। बस रोये जा रहा था। माता-पिता ने कहा— अरे बेटा ! ऐसा क्या नुकसान हो गया है ?

वह बोला— तुम्हें क्या पड़ी है। जिसका मन दु खी हो वही जान सकता है।

तब भाई-भाभी बोले— तुम्हें क्या दु:ख है ?

वह बोला– मुझे तो बहुत बडा दुःख हुआ है।

अब उसकी बडी बहिन, जो विधवा थी। उसने पूछा– अरे भाई ! कुछ बतलाओ तो सही कि आखिर तुम्हें क्या दुःख है ?

वह बोला– बहिन ! तुम नहीं जानती।

बहिन बोली– हां भाई, हमें तो कुछ भी जानकारी नहीं है।

तब वह बोला– मेरी पत्नी विधवा हो गई है। बेचारी ब्राह्मण की बेटी ! उसका शेष जीवन बिगड गया। बस, मुझे इसी बात का बडा दुःख है।

बहिन ने समझाया– अरे भाई ! तुम्हारे जीते जी वह विधवा कैसे हो सकती है ?

वह बोला– तो मेरे जीते जी तुम विधवा कैसे हुई ?

बहिन बोली– अरे मूर्ख ! मैं तो तुम्हारे बहनोई के मरने के कारण विधवा हुई। पति के जीवित रहते पत्नी कभी विधवा नहीं होती। यह देखो ! तुम्हारी पत्नी गहने-कपडे पहिने हुए तुम्हारे सामने खडी है।

यह सुनकर वह बोला– हे बहिन ! मैंने इतने शास्त्र पढे परंतु किसी में भी ऐसा लिखा हुआ नहीं मिला कि पति के मरने पर ही पत्नी विधवा होती है।

वह ऐसा मूर्ख था।

(२७४)

धड़ा जोड़ में यूं का यूं

एक पंचोली हिसाब-किताब और औसत निकालने के मामले में बड़ा सावचेत था। एक बार वह अपनी पत्नी और पुत्र-पुत्रवधू के साथ अपने गाव लौट रहा था। रास्ते में एक नदी आई।

अब वह पंचोली उस नदी में पानी की गहराई मापने लगा कि कहा पानी कम है और कहा ज्यादा। इस बात का पता लगाने के लिए वह एक बांस लेकर नदी में उतरा। उस बांस से पानी की गहराई का पता लगाया। कहीं तो पानी घुटनों तक, कहीं जाघों तक, कहीं कमर तक, कहीं सीने तक और कहीं गले तक था। उसने थोडा और आगे बास रखा और अदाजा लगाया कि यहा पानी सर से ऊपर तक है।

अब नदी से बाहर आकर उसने कागज में घुटनों, जांघों, कमर, सीने, गले और सर से ऊपर तक के पानी का अलग अलग विवरण लिखा और कुल

पानी का औसत निकाला। औसत घुटने तक पानी का आया। यह जानकर उसने नदी में बैलगाडी को आगे रवाना किया। आगे पानी गहरा होने से बैल, गाडी सहित बहने लगे। गाडी और बैलों को बहता देखकर औसत पर ध्यान देते हुए वह बोला–

धडा जोड में यूं का यूं, गाडी वैहल तणीजै क्यू ?

धडा जोड में यूं का यूं, टाबर छोरू वहै क्यूं ?

यों करते-करते सभी पानी में डूबकर मृत्यु को प्राप्त हुए। पचोली पढा-लिखा तो था बहुत परतु उसमें व्यावहारिक ज्ञान नहीं था। भला, पानी में औसत का क्या काम। ऐसे भी मूर्ख होते हैं।

(२७५)

शेर और बछड़ा

एक गाय का बछडा जंगल में पहुंच गया। अब उसे डर लगने लगा। जगल में चारे-पानी की कोई कमी नहीं थी परंतु बछडे का डर भी कम नहीं था।

उसी समय जंगल का राजा आ गया। शेर को देखकर बछडा और अधिक भयभीत हो गया। उसने सोच लिया कि अब शेर उसे नहीं छोडेगा। फिर भी उसने विचार किया कि शेर चाहे मारे अथवा छोड़े, क्यों न इसके पैरों में जा गिरू। ऐसा विचारकर वह शेर के पैरों में गिरकर लटके-झटके करने लगा।

बछड़े की यह हरकत देखकर शेर को दया आ गई। उसने मन ही मन विचार किया कि मैं इसे नहीं मारूगा।

अपने प्रति शेर का दयाभाव देखकर बछड़ा बोला– भाई साहब ! मुझे अपना दोस्त बना लो।

शेर ने उसे अपना दोस्त बनाते हुए कहा– अब तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है।

बछडा बोला– मुझे आप से तो किसी प्रकार का भय नहीं है क्योंकि आप तो मेरे रक्षक हैं, परतु जगल के दूसरे जानवरों से डर लगता है।

शेर ने कहा– मैंने एक बैल को मारा था, जिसके गले में बधी हुई घटी यहां पडी है। यह घटी तुम अपने गले में बांध लो। जब भी जंगल में तुम्हें किसी प्रकार का खतरा हो तो यह घटी बजा देना। मैं तुरंत तुम्हारे पास पहुच जाऊगा।

बछड़ा बोला– हा, यह ठीक रहेगा।

अब शेर शिकार करने के लिए जंगल में दूर चला गया। पीछे बछडे ने सोचा कि मेरे घटी बजाने पर शेर आएगा भी या नहीं ? उसे पूरा विश्वास नहीं हुआ। तब उसने बिना किसी खतरे के ही घटी बजा दी। घटी सुनकर शेर दौडता हुआ बछडे के पास पहुंचा। उसने बछडे से पूछा— कहो दोस्त, घटी क्यों बजाई ?

बछडा बोला— दोस्ती की परख करने के लिए घटी बजाई।

इस पर शेर ने समझाया— तुम डरो मत। अब घटी तभी बजाना जब तुम्हारे सामने कोई सकट आए।

कुछ दिन बीते तो बछडे से नहीं रहा गया। उसने परख करने के लिए बिना किसी सकट के फिर से घटी बजा दी।

शेर ने आकर उसे फिर समझाया। इसी प्रकार उसने तीसरी बार घटी बजाई। तब शेर ने सोचा कि यह तो बेकार में घंटी बजाता है। इस प्रकार बछडे के प्रति उसका विश्वास टूट गया।

एक दिन उस जंगल में दूसरे जंगल का शेर आ गया। इस शेर को देखकर बछड़ा भयभीत हो गया। उसने कई बार घटी बजाई किंतु बछड़े द्वारा वार-बार बेकार में घटी बजाने की बात सोचकर शेर नहीं आया। तब दूसरे जंगल का शेर उस बछडे को मारकर खा गया। बाद में उस जगल का शेर आया। अपने मित्र बछडे की बहुत तलाश की परतु उसे वह कहीं नहीं मिला। तब उसने सोच लिया कि दूसरे जगल का शेर उसे खा चुका है।

(२७६)

खड़ी कटारी

एक निर्धन साहूकार विवाह करके घर लौटा। मांचे की दावण (रस्सी) खोलकर दोनों पति-पत्नी सो गए। दावण खोल देने से वे दोनों जमीन के टकराने लगे। तभी रात्रि को एक चोर चोरी करने के लिए घर में घुसा।

तब पत्नी ने चेताया— घर में चोर घुस आया है।

पति बोला— बोल मत। यदि यह चोर तलवार का वार करेगा तो माचे की ईस या ऊपलों पर लगेगा। अपन तो नीचे सो रहे हैं।

पत्नी वोली— यदि यह चोर खडी कटारी चलाएगा तो ?

यह सुनकर वह बोला— हा वता तेरे बाप को, जो नहीं चलाए तो भी चलाए। तू चुप नहीं रह सकती, वडी आई वताने वाली।

(२७७)

छह और छह बारोत

एक लखपति सेठ के इकलौता बेटा था। माता-पिता उसे बहुत लाड-प्यार से रखते थे। उन्होंने उसे पढाया-लिखाया भी नहीं।

एक सेठ की कन्या की सगाई करने के लिए उसके मुनीम लडके की तलाश में घूम रहे थे। वे उस लखपति सेठ के पास पहुचे और उससे कहा— हमें हमारे सेठजी की लडकी की सगाई आपके सुपुत्र से करनी है। आपका लड़का कैसा क्या है ?

तब सेठ ने उनसे कहा— मेरा लडका तो अभी खाना खाने घर गया है।

अब सेठ ने घर जाकर अपने लड़के को कहा— कोई तुम्हारी सगाई करने के लिए आए हैं। यदि वे तुम्हें कोई हिसाब-किताब पूछे तो जैसे मैं कहूं वैसे जवाब दे देना। जैसे कि छह और छह कितने ? तो तुम कहना बारह। यदि तुम्हें बारह का नाम याद न रहे तो बारोत (दरवाजे की चौघट) को याद रखकर बता देना ताकि मैं उन्हें कह दूंगा कि जरा जीभ अटक गई है बाकी पढ़ा-लिखा बहुत है।

अपने बेटे को समझाकर सेठ वापस दूकान पर आ गया। कुछ देर बाद लड़का भी दूकान पर आया। लडकी वाले सेठ के मुनीम उसका सुंदर चेहरा देखकर बडे खुश हुए। तब सेठ ने दरवाजे की तरफ देखकर अपने लडके से पूछा— छोटु ! छह और छह कितने होते हैं रे ?

लडका बारह अथवा बारोत कहना तो भूल गया और बोला— छह और छह दरवाजा।

तब लडकी वाले सेठ के मुनीम समझ गए कि लडका दिखने में तो सुंदर है परंतु आता जाता कुछ नहीं है। उन्होंने वापस लौटकर सेठजी को सारे समाचार कहे कि लडके में तो कुछ भी गुण नहीं है।

ज्यादा लाड़-प्यार करने से ऐसा ही होता है।

(२७८)

अशुभ बोली

एक बुढ़िया बड़ी ऊट-पटाग बोलती थी। लोग हल जोतने अथवा अन्य कृषि कार्य करने खेत जाते तो वह उन्हें अशुभ बोल बोलती थी। सभी लोग उससे परेशान हो गए। सभी ने मिलकर उससे कहा— हम लोग काम पर जाते हैं और

तुम अशुभ बोल बोलती हो। तुम्हारी इस बोली के कारण हमारा काम सिद्ध नहीं होता, अत तुम चुपचाप बैठी रहा करो।

वह बुढ़िया बोली— तुम लोग मेरे घर का खर्च वहन कर लो तो मैं कुछ भी नहीं बोलूंगी।

तब लोगों ने कहा— ठीक है। तुम्हें प्रत्येक घर से पांच-पांच किलो अनाज मिल जाएगा। तुम चुप रहना।

यह तय होने के बाद उन लोगों ने उस बुढिया को उसके घर में बनी कोठी में बंद कर दिया। अब लोगबाग अपने-अपने खेत जाने लगे। बुढ़िया कोठी में बंद थी फिर भी उससे चुप नहीं रहा गया। कोठी के छिद्र से उन लोगों को खेत की तरफ जाते देखकर बुढिया बोली— सुनो भाइयो ! तुम्हारे खेत में चाहे एक पैसे का भी अनाज पैदा न हो परंतु मैं तो प्रत्येक घर से पाच-पांच किलो अनाज लेकर रहूगी।

बुढ़िया के अशुभ बोल सुनकर लोग वापस अपने घर आ गए। उन्होंने बुढिया से कहा— तुम्हें अनाज का एक दाना भी नहीं मिलेगा। अब जैसा तुम्हारे मन में आए वैसा बोलो।

ऐसी मूर्ख थी वह बुढ़िया।

(२७९)

मुंहफट

एक शहर में पठान राज करता था। एक दिन उसकी हजामत बनाने के लिए नाई आया। उसने हजामत बनाते समय सर के बाल काटकर उसके चोटी रखी।

पठान ने पूछा— अरे ! चोटी क्यों रखी ?

तब नाई बोला— खुदावद ! पर्वतों के गाव है। मान लो तुम्हें कभी चोरों के पीछे वाहर (रक्षार्थ) चढ़ना पडे और चोर तुम्हारी गर्दन उडा दे तो तुम्हारी चोटी पकडने के लिए काम आएगी। यह चोटी इसीलिए रखी है।

यह बात सुनकर पठान को गुस्सा आ गया। उसने उस नाई को वहीं रोक दिया। जब नाई की स्त्री को पता लगा तो उसने वहां जाकर पठान को कहा— हे खुदावद ! आपने मेरे पति को क्यों पकड रखा है ?

तब पठान बोला— यह मुहफट हमें उलटा-सीधा बोलता है। कहता है चोर

आपका सर उडा दे तो चोटी पकडने के लिए काम आएगी, इसीलिए सर में चोटी रखी है। इसके द्वारा इस प्रकार ऊट-पटांग बोलने के कारण ही मैंने इसे पकड रखा है।

तब नाई की स्त्री बोली— खुदाबंद ! इस बात के लिए चोटी रखने की कहां जरूरत थी। 'घणी खम्मा' ! पहली बात तो आपके जीवन में ऐसा अशुभ अवसर आए ही क्यों। यदि दुर्योग से चोर आपका सर उडा भी दे तो चोटी का क्या करना है ? इसके लिए तो आपके कान ही काफी हैं, अत कान पकडकर ही घर ले आएगे।

पठान ने इसे भी मुहफट जानकर पकडवा दिया। जब नाई की मा ने यह बात सुनी तो वह भी पठान के पास पहुंचकर बोली— खुदाबद ! मेरे बेटे-बहू को नाहक क्यों पकड़ रखा है ?

पठान ने कहा— बुढिया ! इन्होंने मुझे बहुत ऊट-पटाग बातें कही हैं। मेरी चोटी और कान पकडने का कहा है।

बुढिया बोली— खुदाबंद, घणी खम्मा ! पहली बात तो आपकी ऐसी दुर्गति क्यों हो और यदि पर्वतों के गांव के कारण चोर आकर आपका सर उडा भी दे तो आपका सर लाने के लिए चोटी और कान का क्या काम है ? मुझ पर भरोसा रखो, मैं आपका सर रूई में लपेट उसे छबडी में डालकर गाजे-बाजे के साथ घर तक पहुंचाऊंगी।

तब पठान ने बुढ़िया को भी पकड लिया। अब नगर के लोगों ने आकर पठान से प्रार्थना की— खुदाबंद ! इनके घर के तो सभी बोलने में मुहफट हैं।

इस पर पठान ने उन तीनों को छोड़ दिया।

(२८०)

बोली से पहचाना

एक गुरु के तुरतपुरी चेला था। उसको गुरु ने कहा— जाओ, भिक्षा माग लाओ।

चेले ने पूछा— गुरुजी, भिक्षा मागते समय क्या कहूं ?

गुरु ने कहा— यों कहकर मांगना— सत्य राम।

गुरु की सीख धारण कर चेला भिक्षा मागने गया। रास्ते में वह 'सत्य राम' नाम भूल गया। आगे वहिनें चरखा चला रही थी। उनके पास पहुचकर 'सत्य राम' की जगह वह बोला— घट राड !

तब बहिनें बोलीं– अरे दरिद्री ! यों क्या बोल रहा है। तू तो कोई तुरतपुरी दिखाई देता है।

वह बोला– बहिनो ! तुम्हारे अदर ऐसा कौनसा ज्ञान है, जो तुमने मुझे पहचान लिया।

तब वे बहिनें बोलीं– तुम्हारी बोली से पहचाना।

(२८१)

पढ़े, परंतु गुने नहीं

एक ज्योतिषी, एक वैद्य, एक न्यायशास्त्री और एक तर्कशास्त्री। चारों ही जनें व्यापार करने के उद्देश्य से रुपए लेकर एक बैलगाडी में सवार होकर सामान खरीदने के लिए शहर जा रहे थे। रास्ते में जगल आया। उस जंगल में एक तालाब था। तब चारों जनों ने तय किया कि पहले यहा खाना बनाकर खाएगे, फिर शहर जाएगे।

अब ज्योतिष विद्या के जानकार को बैल चराने के लिए भेजा गया। वैद्य को सब्जी लाने के लिए भेजा। तर्कशास्त्री को घी लाने भेजा और न्यायशास्त्री को रसोई बनाने के लिए बैठाया गया।

न्यायशास्त्री खीचडी बनाने लगा। खीचडी खदबद-खदबद करने लगी। तब न्यायशास्त्री ने खीचडी को कहा– मुझसे ही झूठी बहस कर रही हो। बाद में उसने न्याय-शास्त्र देखा तो उसमें लिखा हुआ था– जो प्रत्यक्ष झूठी बहस करता हो उसके मूह पर धूल उछालनी चाहिए। तब उसने खीचडी में धोबा भरकर धूल गिरा दी। धूल गिरने से खीचड़ी का खदबद-खदबद करना बंद हो गया।

उधर वैद्य सब्जी लेने गया हुआ था। वह विचारने लगा कि मूले और बैंगन तो वात-रोग उत्पन्न करने वाले हैं। कई तरकारिया तो ऐसी होती हैं जो कफ पैदा करती हैं तो कई तरकारियां पित्त बनाती हैं। अंत में वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि नि रोग तो नीम है। यह सोचकर वह नीम लेकर ही आ गया।

तर्कशास्त्री एक पात्र में घी लेकर आ रहा था। रास्ते में उसके मन में यह तर्क उत्पन्न हुआ कि घी का आधार पात्र है या पात्र का आधार घी है। इसी तर्क की परख करने के लिए वह पात्र को उछालता हुआ आ रहा था। पात्र हाथ से गिरने पर सारा घी भी नीचे गिर गया।

इधर बैल चरा रहा ज्योतिषी यह सोचकर सो गया कि बैल चाहे कहीं

भी चले जाएं, मैं ज्योतिष-विद्या से इनका पता लगा लूगा। बैलों को चोर चुराकर ले गए।

अब चारों जनें इकट्ठे हुए। सभी ने अपने अपने समाचार सुनाए। तब चारों बोले— भूखों मर रहे हैं, अत शीघ्रता से शहर में चलो। अब उन्होंने सोचा कि बैल तो है नहीं, सो गाडी का क्या किया जाए ? तब विचार किया कि घसीटकर ले चलो। थोडी दूर चलने पर जब थक गए तो तय किया कि घसीटने से तो यह चलेगी नहीं, अत. इसे जला देते हैं। तब गाडी को जलाकर चारों जनें आगे चल पडे। ऐसे मूर्ख थे, जो पढे तो बहुत थे, परतु व्यावहारिक ज्ञान-शून्य थे।

(२८२)

दूध की मलाई

एक सेठ बडे घराने में विवाहकर वधू के साथ घर आया। कुछ समय व्यतीत होने पर वह सेठ निर्धन हो गया। पेट भरना भी दुर्भर हो गया। अकाल पडने के कारण भूखों मरने की नौबत आ गई।

तब सेठानी ने सेठ को कहा— मेरे मायके जाकर भैंस ले आओ। घर में भैंस होगी तो अकाल का एक साल किसी तरह गुजार देंगे।

अब वह भैंस लाने ससुराल जाने के लिए रवाना हुआ। तब पत्नी बोली— तुम भैंस मेरे मायके से लेकर आओगे तो दूध के ऊपर की मलाई तो मैं खाऊगी।

तब वह बोला— तुम तो मेरे पीछे आई हो, इसलिए मलाई तो मैं खाऊंगा।

यों करते करते वे आपस में झगड़ने लगे। दोनों पति-पत्नी गुत्थमगुत्था हो गए। यह देखकर लोग इकट्ठे हुए। एक औत्पात्तिक बुद्धिवाले आदमी ने आकर पूछा— ये दोनों लड क्यों रहे हैं ?

झगडे का कारण पता चलने पर उसने लठ लेकर बर्तन फोड़ डाले। तब पति-पत्नी झगडा छोडकर कहने लगे— अरे ! हमारे बर्तन क्यूं फोडे ?

वह बोला— तुम्हारी भैंस मेरा खेत चर गई है।

तब उन्होंने कहा— भैंस तो अभी तक हम लेकर ही नहीं आए हैं फिर भला तुम्हारा खेत कैसे चर गई ?

उसने कहा— यदि यह बात है तो फिर तुम दूध की मलाई के लिए झगडा क्यों कर रहे हो ? ऐसा कहकर उनका झगडा मिटाया।

(२८३)

गधे का कलेजा

एक जंगल में शेर अपने शिकार की तलाश में घूम रहा था। घूमते घूमते एक सियार उसके हाथ लगा। शेर उस सियार को मारने लगा।

तब सियार बोला— महाराज ! मुझे खाने पर भी आपकी भूख तो मिटेगी नहीं, अत मैं आपके लिए कोई बडा शिकार लेकर आता हू। आप निश्चिंत होकर अपनी गुफा में विराजिए।

ऐसा वचन देकर सियार वहा से चल पडा। आगे जाने पर सियार को एक गधा मिला। सियार ने उस गधे को कहा— हमारे राजा के प्रधान की मृत्यु हो चुकी है, अत नया प्रधान तुम्हें बनाया जाएगा। तुम मेरे साथ चलो।

बेचारा गधा उस सियार के साथ रवाना हो गया। जब वे दोनों शेर की गुफा के पास पहुचे तो शेर दहाडता हुआ तेजी से बाहर आया। उसे इस तरह गुफा से निकलते देखकर गधा डर के मारे भाग छूटा।

तब सियार ने शेर को कहा— महाराज ! आप के इतनी क्या जल्दी थी? मैं तो जैसे-तैसे करके गधे को आपके पास लेकर आया था। आपके उतावलेपन के कारण वह तो भाग गया।

शेर बोला— तुम उस गधे को किसी तरह एक बार फिर ले आओ।

सियार ने कहा— मैं गधे को ले तो आऊंगा परतु इस बार आप कोई जल्दी नहीं करोगे।

अब सियार वापस गधे के पीछे गया। उसको कहा— अरे भाई ! तुम बड़े भोले हो, सो दौड आए। तुम्हें प्रधान के पद का दायित्व सौंपा जा रहा है इसीलिए राजा तुम्हें प्रणाम करने के लिए तुम्हारे सामने आ रहे थे और तुम मूर्खानन्द वहा से दौड आए। अब मेरा कहा मानो और वापिस चलो। प्रधान के बिना राजा की कोई शोभा नहीं है।

गधा एक बार फिर सियार के साथ चल पडा। शेर की गुफा के पास पहुचने पर सियार ने गधे को समझाया— देखो ! राजाजी तुम्हारे सामने प्रणाम करने के लिए आएगे, अत तुम उनसे घबराना मत।

यह विश्वास दिलाकर सियार गधे को ले चला। मूर्ख गधा उसकी बात में आ गया। आगे जाने पर शेर ने सामने आकर पंजे के प्रहार से गधे को मार डाला।

अब शेर ने सियार को कहा— मैं स्नान किए बिना शिकार ग्रहण नहीं करता। मैं स्नान करके आ रहा हू तब तक तुम इसकी रखवाली करना।

सियार बोला— आप भले ही पधारिए, मैं यहीं बैठा हू।

शेर स्नान करने चला गया। पीछे से सियार मृत गधे की आंखों और कलेजे का कोमल-कोमल मास निकालकर खा गया। अब शेर स्नान करके लौटा। गधे के कलेजे और आखों का मास निकला हुआ देखकर शेर को गुस्सा आ गया। उसने सियार को कहा— अरे दुष्ट ! गधे का कलेजा और आखों का मांस खाकर मेरे शिकार को जूठा कर दिया ?

तब सियार ने हाथ जोड़कर कहा— कैसी बात कर रहे हैं महाराज ! इस गधे के न तो कलेजा था, ना ही आखें। इसके आखें होती तो आपको देखने के बाद यहा क्यों आता ? और इसमें बुद्धि होती तो यह मतिअध दुबारा लौटकर क्यों आता ?

सियार के इस तर्क से शेर बात मान गया और उसने उस गधे का भक्षण कर लिया।

(२८४)

मूर्ख से पाला

स्वभाव की जड़ता के कारण मूर्ख और पशु समान होते हैं। यहां मूर्ख कुलपुत्र की कथा लिख रहे हैं :—

रत्नपुर नामक ग्राम में मूर्ख कुलपुत्र रहता था। जब वह बालक था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई। माता ने बहुत कष्ट सहकर उसका पालन-पोषण किया। युवा होने पर माता ने उसे किसी दूसरे गाव में एक धनाढ्य आदमी की सेवा में भेजा। उसे विदा करते समय माता ने समझाया कि तुम्हें मार्ग में जहा भी लोग मिले तो उन्हें प्रणाम करना।

माता की सीख धारण कर वह उस गाव के लिए रवाना हुआ। रास्ते में एक शिकारी मिला। मूर्ख कुलपुत्र ने उसे ऊची आवाज में जुहार (प्रणाम) किया। उसकी आवाज सुनकर जाल में फंसते हरिन भाग छूटे। तब उस शिकारी ने उसे बहुत बुरा-भला कहा।

वह बोला— मुझे तो अपनी माता ने कहा था कि जो भी मिले उन्हें जुहार करना।

तब शिकारी ने उसे समझाया कि ऐसे आदमी मिलें तो उनके सामने झुक्कर चलना।

अब वह आगे चला। वहा धोबी कपड़े धो रहा था। उसे देखकर वह झुक्कर चलने लगा। तब धोबी ने समझा कि यह तो कोई चोर है। चोर समझकर धोबी उसे प्रताडित करने लगा।

तब उस मूर्ख ने कहा— मुझे तो ऐसे झुककर चलने के लिए शिकारी ने कहा था।

धोबी बोला— ऐसे आदमी मिले तो उनसे कहना— निर्मल हों।

धोबी की सीख धारण कर वह आगे चला। रास्ते में एक किसान मिला, जो अनाज बोने के लिए अपने खेत जा रहा था।

उस किसान को देखकर मूर्ख कहने लगा— निर्मल हों।

किसान ने इसे अपशकुन मानकर उस मूर्ख को प्रताडना देते हुए कहा— अरे मूर्ख ! निर्मल होने पर आकाश में न बादल होंगे, न बिजली चमकेगी और ना ही वर्षा होगी। तब अनाज कैसे पैदा होगा ? तुम्हें तो यू कहना चाहिए कि खूब हो।

किसान का कहा मानकर वह आगे चल पडा। रास्ते में कुछ लोग एक मुर्दे को जलाने के लिए ले जा रहे थे। तब वह बोला— ऐसा तो खूब हो।

अमागलिक जानकर उन लोगों ने भी उसे बहुत बुरा-भला कहा। तव वह वोला— मुझे तो खेत जाते हुए किसान ने ऐसा वोलने के लिए कहा था।

तब उन लोगों ने समझाया— यदि ऐसे लोग मिलें तो कहना चाहिए कि ऐसा कभी मत हो।

यह शिक्षा धारण कर अव वह आगे चला। गांव में पहुचा। वहां एक विवाह में वर-वधू का मिलन हो रहा था। तव वह वोला— ऐसा कभी मत हो।

ऐसा कहने पर उसे वहा भी डाट-फटकार मिली। अव वह और आगे गया। उस घर में पहुचा जहा उसकी माता ने भेजा था। गृहस्वामी ने उसे पहचान लिया। मित्र का पुत्र होने के कारण उसे प्रेमपूर्वक रखा।

कई दिनों वाद अनाज महगा हो गया। घर में धान का अभाव खलने लगा। मजवूरी में एक दिन घरवाली को राव (छाछ से वना व्यजन) वनानी पड़ी। घर के सभी सदस्यों को राव खिलाई। गृहस्वामी वाहर सभा में वैठा हुआ था। तव घर की मालकिन ने उस मूर्ख सेवक को कहा— राव ठडी हो रही है, तव तक तुम गृहस्वामी को सभा से वुला लाओ।

मूर्ख सेवक भरी सभा में जाकर बोला– मालिक ! राब ठडी हो रही है, खाने के लिए घर चलो।

यह सुनकर वह शर्मिंदा होते हुए सभा से उठकर घर आया। घर आकर उसने कुलपुत्र को डाटते हुए कहा– मूर्ख ! घर की बात छुपाकर रखनी चाहिए। ऐसी बात एकांत में बुलाकर कहनी चाहिए। ऐसी सीख देते हुए गृहस्वामी ने भोजन किया।

एक दिन घर में आग लग गई। तब स्त्री ने उस मूर्ख कुलपुत्र को कहा– जल्दी से जाकर गृहस्वामी को बुला लाओ ताकि आग बुझाई जा सके।

मूर्ख सेवक वहां जाकर खडा हो गया जहां सभा जुड़ी हुई थी। कुछ देर बाद जब घर के मालिक ने उसकी तरफ देखा तो उसे एकांत में बुलाकर धीरे से कहा– आपके घर में आग लग गई है, अत· जल्दी चलो।

गृहस्वामी बोला– अरे मूर्ख ! ऐसी बात थी तो तूने घर से आते ही क्यों नहीं कहा। अब तक तो पूरा घर जलकर राख हो गया होगा।

मूर्ख सेवक बोला– मालिक ! आपने ही तो कहा था कि घर की बात सबके सामने नहीं, एकात में बुलाकर कहनी चाहिए।

गृहस्वामी ने कहा– अब ध्यान रखना। धुआ देखते ही धूल की पोटली लेकर सावधान रहना।

अब एक दिन घर का मालिक स्नान करके अपनी चोटी सुखा रहा था। वह नगे सर पूजा करने के लिए धूप तैयार करने लगा। धूप से धुआ निकलता देखकर वह मूर्ख हाथ में धूल की पोटली उठाकर सावधान की मुद्रा में खडा हो गया।

मालिक ने पूछा– अरे ! यह धूल की पोटली क्यों ले रखी है ?

मूर्ख सेवक बोला– मालिक ! आपने ही तो कहा था कि जहा भी धुआं उठता दिखाई दे तो धूल की पोटली लेकर सावधान रहना चाहिए।

तब वह गृहस्वामी से भी प्रताडित हुआ। एक दिन दासी को गोबर की छबडी और उस मूर्ख को पानी का घडा देकर गृहस्वामी ने कहा– यह दासी जैसा करे वैसा ही तुम्हें करना है।

अब वे दोनों गांव के बाहर गए। दासी ने गोबर की छबडी घुटनों के बल नीचे गिराई। यह देखकर उस मूर्ख ने भी पानी के घड़े को घुटनों के बल नीचे गिरा दिया। नीचे गिरते ही घडा फूट गया। तब दासी ने उस मूर्ख सेवक के एक थप्पड जडते हुए उसे बुरा-भला कहा। मूर्ख क्यों कम उतरता। उसने भी दासी के एक चाटा जडकर उसे खरी-खोटी सुनाई।

तब दासी ने आकर गृहस्वामी से पुकार की। गृहस्वामी ने उस मूर्ख को दोषी जानकर घर से निकाल दिया। अब वह मूर्ख वापस अपने घर गया। महादु:खी हुआ। इस प्रकार मूर्ख को पशु के समान कहा गया है।

(२८५)

चरपराट तो मिट जाएगा

गर्मी के दिनों में दोपहर के समय एक दमामी नगे पाव किसी दूसरे गांव की तरफ जा रहा था। मार्ग में उसे एक घोडे पर सवार ठाकुर मिला। तब दमामी ने उसके बहुत गुणगान किए। सुनकर ठाकुर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि मेरे पास तो चढने के लिए घोडा है और यह बेचारा धूप में नगे पांव घूम रहा है। यह सोचकर उसने उस दमामी को अपनी पगरखी (जूतों का जोडा) दे दी। पगरखी देने के बाद घुडसवार ने सोचा कि मैं तो गांव में जाकर नए जूते पहन लूगा। यह विचारकर वह आगे चल पडा।

इधर दमामी ने विचार किया कि ठाकुर तो बड़ा दातार निकला। इसमें दान देने का विलक्षण गुण है। इसने तो बिन मागे जूतों का जोडा दे दिया, यदि मैं मागता तो यह अपना घोडा भी दे देता। क्यों न पीछे जाकर इससे घोडा ही माग लिया जाए।

दमामी ने दौडकर पीछे से आवाज दी— अन्नदाता ! घोडे को रोकिए।

ठाकुर ने घोड़ा रोक लिया। दमामी बोला— माई-बाप ! आपके तो भाग्य वडे प्रवल हैं। मैं थक गया हू, अत इस गरीव पर कृपा करके आपका घोड़ा दे दीजिए।

यह सुनकर ठाकुर को गुस्सा आ गया। उसने सोचा कि मैंने तो इस पर तरस खाकर इसे जूतों का जोडा दिया और अब यह मेरा घोडा मागकर मुझे ही नगे पाव चलने को मजवूर कर रहा है। ठाकुर वोला— इधर आओ ! तुम्हें घोडा देता हूं। वह नजदीक पहुंचा तो ठाकुर ने उसके चार-पांच कोडे जमा दिए। फिर भी वह दमामी हसने लगा।

तव ठाकुर ने उसे चकित्त होकर पूछा— तुम हंस क्यों रहे हो ?

वह वोला— अन्नदाता ! आपके कोडे खाए हैं, सो इन कोडों का चरपराटा तो मिट जाएगा परतु यदि मैं आपसे घोडा नहीं मागता तो मन में दरफराटा रह जाता। मेरे मन में यह रहता कि मैं मागता तो ठाकुर घोडा दे देता, ठाकुर घोडा दे देता। इसे मन का दरफराटा कहते हैं।

(२८६)

खरे-खोटे की परख

एक सराफ का बेटा मूर्ख था। वह अपने ससुराल जाने के लिए तैयार हुआ, जो किसी दूसरे गांव में था। तब उसके पिता ने कहा— बेटा, सूर्यास्त के बाद यात्रा मत करना क्योंकि तुम्हारे पास जोखिम का सामान ज्यादा है।

अब वह ससुराल के लिए रवाना हुआ। मार्ग में उसे एक सेठ का बेटा मिला। वह भी मूर्ख था और उसमें कुलक्षण भी बहुत थे। अब वे दोनों साथ-साथ चलने लगे। एक-दो मंजिल चले। अगला गांव चौथाई कोस ही दूर रहा था कि सूर्यास्त हो गया।

तब सराफ का बेटा बोला— मेरे पिता का कहा हुआ है कि सूर्यास्त के बाद यात्रा मत करना, अत अब मैं तो आगे नहीं चलूंगा।

अब सराफ का बेटा तो जोखिम का सामान (गहने-कपडे) लेकर एक पेड पर चढ गया और सेठ का बेटा उस पेड़ के नीचे बैठ गया। रात होने पर चोर आए। उन्होंने सेठ के बेटे को लूट लिया। पल्लू में सौ रुपए बंधे थे, वे छीन लिए।

तब उसने चोरों को सबोधित करते हुए कहा— ठाकुरो ! मेरे ये रुपए खरे हैं या खोटे, इसकी मुझे जानकारी नहीं है। इस पेड पर वह सराफ का बेटा चढ़ा हुआ है, आप चाहें तो उससे खरे-खोटे की परख करवा लीजिए।

तब उन चोरों ने पेड पर चढ़कर सराफ के बेटे से कीमती गहने-कपडे और सारा धन-माल छीन लिया।

ऐसे मूर्ख की सगति करने से सराफ का बेटा बहुत दु:खी हुआ।

(२८७)

तूकारा और जीकारा

एक सेठ के बेटे की बहू छोटे गांव से आई। वह सुसराल में सभी को तूकारा देकर बतलाती और अपने पीहर की ग्रामीण बोली बोलती थी।

तब सास ने उसे समझाया— हे बहू ! ससुराल में सभी को जीकारा देकर बुलवाना चाहिए।

बहू बोली— ठीक है।

अब तीसरे प्रहर में भैंस का पाडा (कटडा) आया। तब बहू बोली— सासुजी ! भैंसजी के पाडेजी को रस्साजी से बांध दू जी !

यह सुनकर सास ने कहा— अरे बहू ! इतने जीकारों का क्या काम ?

तब बहू बोली— सासुजी ! ऐसा रागद्वेष तो आपके अतर्मन में होगा, मेरे लिए तो जेठजी का बेटाजी और भैंसजी का पाडाजी, दोनों बराबर है।

(२८८)

दर्पण में चेहरा

एक बूढा किसान अपने पोते को साथ लेकर खेत जा रहा था। पोते को बीच रास्ते में एक दर्पण उलटा पडा हुआ दिखाई दिया। उसे देखकर पोते ने कहा— दादाजी ! यह क्या पडा है ?

दादा ने उस दर्पण को उठा लिया। उसने दर्पण में देखा तो उसमें अपना चेहरा दिखाई दिया। यह देखकर वह बोला— ठाकुर साहब ! मेरा गुनाह माफ कीजिए। मैंने तो इसे लावारिस समझकर उठा लिया परंतु आप तो इसके अदर विराजमान हैं। मुझे इस बात का पता नहीं था इसीलिए गलती से इसे उठा लिया।

ऐसा कहकर उसने दर्पण को यथावत रखते हुए उसके आगे मत्था टेका। इस प्रकार वह बूढा किसान अपने आपको भी नहीं पहचान पाया। ससार में ऐसे भी मूर्ख होते हैं।

(२८९)

धवल केशों में धूल

एक बूढा किसान अपने खेत में गया। खेत में उसका पोता बोला— दादाजी ! भूख लगी है। तब किसान ने उसे रोटी का टुकडा दिया। बाजरी की रोटी के उस टुकडे को लेकर पोता कूए के पास आया। कूएं में देखने पर उसे पानी में अपना ही चेहरा दिखाई दिया। परछाई देखकर लडका डर गया। रोटी का टुकडा कूए में गिराकर वह अपने दादा के पास गया।

पोते ने दादा को कहा— दादाजी ! मेरी रोटी का टुकड़ा एक लड़के ने छीन लिया।

तब दादा ने उसको पूछा— कहा है वह लड़का ?

पोता बोला— उस कूएं में है।

बूढे किसान ने विचार किया कि हमें तो खेत में ही रहना है, अत यहा चोर के आने की आदत ठीक नहीं है। तब वह जेई लेकर कूए के पास आया। उसे पानी में बालक की जगह बूढे का चेहरा दिखाई दिया। तब उसने सोचा कि पोता सच्चा है। अपनी तरह परछाई के भी दाढी-मूंछ बढी हुई और उसकी पूरी कद-काठी देखकर वह बोला– यह तो बूढा है रे बूढा, लडका नहीं है।

यह कहते हुए वह बूढा किसान अपने दोनों हाथों में धूल लेकर पानी में परछाई पर गिराते हुए बोला– तुम्हारे 'धोलों में धूल' ! बच्चे की रोटी छीनकर तुम कितने समय तक जीवित रह पाओगे।

इस प्रकार वह बूढा किसान अपनी परछाई को भी पहचान नहीं पाया और अपने ही 'धवल केशों में धूल' गिराई। ऐसा मूर्ख था।

(२९०)

झफा

एक मूर्ख किसान था। जगल में गायें-भैंसें चराता था। उसके दाढी-मूछ और सर के बाल बढ़ते ही जा रहे थे परंतु खिजमत करवाता नहीं। तब लोगों ने उसका नाम 'झफा' रख दिया और उसकी पत्नी को भी झफे की बहू कहकर बतलाने लगे। झफा दिन भर जगल में रहता और रात होने पर घर आता।

एक दिन झफे की बहू ने नाई को कहा– तू इनकी खिजमत क्यों नहीं करता।

नाई बोला– बाईजी ! मैं क्या करू यह खिजमत करवाता ही नहीं है। जबर्दस्ती करने का प्रयास करता हू तो मार-पीट करता है।

झपे की पत्नी बोली– जगल में जाकर खिजमत कर डालो।

तब नाई जंगल की तरफ गया। आगे झफा गहरी नींद में सो रहा था। उसने झफे के हाथ-पैर कसकर बाध दिए क्योंकि उसे भय था कि अगर यह जग जाएगा तो मारेगा। अब नाई ने अपने उस्तरे से झफे की दाढी-मूछें और सर के सारे बाल काट दिए। उन बालों को लेकर नाई घर आ गया।

कुछ देर बाद झफे की नींद खुली। मुह और सर पर हाथ घुमाया तो सफाचट। उसे लगा कि मैं झफा तो नहीं हू। वह सोचने लगा कि फिर झफा कहां गया? कहीं खो गया या फिर मैं ही झफा हू ? वह भ्रमित हो गया।

भ्रम मिटाने के लिए उसने अपनी गायों और भैंसों को आवाज लगाई– आओ काली, आओ गोरी, आओ पीली ! इस प्रकार आवाज लगाने पर गाय-भैंसें नजदीक आ गईं।

तब झफा सोचने लगा कि मेरी आवाज सुनकर गाय-भैंसें तो नजदीक आ गईं, अत. झफा तो मैं ही हू। परतु मेरी दाढी-मूछ और सर के बाल नहीं है, इसलिए लगता नहीं कि मैं झफा हू। हो सकता है गाय-भैंसें भी इसी भ्रम में मेरी आवाज सुनकर आ गई हों ?

अब झफा दोपहर के समय ही गाय-भैंसों को लेकर घर आ गया।

तब लोगों ने पूछा– अरे झफा ! आज गाय-भैंसों को लेकर इतना जल्दी घर कैसे आ गया ?

झफे को लगा कि ये लोग भी भ्रम में भूल गए हैं। इन्होंने तो इसी बात से अंदाजा लगाया होगा कि गायें-भैंसें आई हैं तो पीछे झफा ही होगा। अब झफा बाजार में आया। बाजार में भी लोगों ने उसे वैसे ही संबोधित किया। तब वह अपने मोहल्ले में आया। गली में बहिनें चरखा चला रही थीं। वे बोलीं– अरे झफा आज घर इतना जल्दी कैसे चला आया ? यही बात उसके माता-पिता और बहिन ने पूछी।

झफे ने विचार किया कि ये सारे लोग भ्रमित हैं। मुझे कोई पहचान नहीं पा रहा है परतु मेरी पत्नी को तो इस बात का भली भांति पता होगा। यदि पत्नी ने पहचान लिया तो यह बात तय है कि मैं झफा ही हूं। ऐसा विचारकर उसने घर के बाहर से ही ऊची आवाज में पूछा– अरे झफे की बहू ! झफा कहा है ?

पत्नी ने कहा– तुम्हीं तो हो।

झफा बोला– भला पहचाना ए मेरी माता !

स्त्री बोली– मैं तुम्हारी पत्नी हू और तुम मुझे माता कहते हो ?

झफा बोला– इस बार कुछ बोली तो माता नहीं, दादी कहूगा।

ऐसा मूर्ख था– झफा।

(२९१)

खारा व्याख्यान, मीठा व्याख्यान

सेठ और सेठानी, घर में दो ही जीव। पत्नी तो धर्म के मर्म को भली भांति जानती थी, परंतु पति भोला था। वह धर्म का मर्म समझ नहीं पाया।

एक बार साधु पधारे। सेठानी प्रतिदिन व्याख्यान सुनने जाती और मनोयोग से सुनती।

एक दिन पति बोला— मैं भी व्याख्यान सुनने जाऊगा।

पत्नी ने कहा— तुम्हें समझ में तो आएगा नहीं।

पति ने कहा— फिर भी मैं तो जाऊगा।

पत्नी बोली— ठीक है जाओ, परतु व्याख्यान सुनते समय सचेत रहना।

अब वह व्याख्यान सुनने गया। साधु मुनिराज ने नमस्कार मत्र प्रारभ किया और इधर यह नींद लेने लगा। नींद आ गई। साधुवृद ने व्याख्यान समाप्त करते हुए दया फरमाई तो लोग जाजम (बडी दरी) झडकाने लगे। तब उसकी नींद खुली। उसने तो व्याख्यान का अंश मात्र भी नहीं सुना। केवल लोगों को जाजम झड़काते हुए देखकर घर आ गया।

पत्नी ने पूछा— आज व्याख्यान का विषय क्या था ?

वह बोला— आज तो जाजम झड़काने वाला व्याख्यान था।

तब पत्नी ने जान लिया कि नींद आने पर इन्हें कुछ सुनाई नहीं दिया और व्याख्यान समाप्ति के समय नींद खुली होगी।

दूसरे दिन फिर गया। साधुओं ने नमस्कार मत्र शुरू किया और यह दीवार का सहारा लेकर नींद लेने लगा। व्याख्यान समाप्ति पर दया फरमाई। उधर नींद में मुंह खुला होने के कारण कुत्ते ने अपना एक पैर ऊचा उठाकर उसके मुह में पेशाब कर दिया। इससे उसका मुंह खारा हो गया। अब वह थूकता थूकता घर आया और पत्नी से बोला— आज तो साधुओं ने खारे-खारे व्याख्यान सुनाए, अत मुंह अभी तक खारा है।

तब पत्नी ने जान लिया कि आज कोई कुत्ता मुंह में पेशाब कर गया है।

तीसरे दिन फिर गया। साधुओं ने फिर नमस्कार मंत्र प्रारंभ किया और वह नींद लेने लगा। नींद में मुह खुला था। उसकी पत्नी भी व्याख्यान सुनने आई हुई थी, अत वह साथ में बताशे लेकर आई थी। व्याख्यान समाप्ति पर जैसे ही साधुओं ने दया फरमाई पत्नी ने जाकर अपने पति के खुले मुह में बताशे डाल दिए। पत्नी घर आ गई। कुछ देर बाद पति की आंख खुली तो वह भी उठकर घर आया।

तब पत्नी ने पूछा— आज का व्याख्यान कैसा था ?

पति बोला— आज तो बहुत ही मीठा-मीठा व्याख्यान सुना। उससे मुंह अभी तक मीठा है।

तब पत्नी ने उसे सारी बात समझाते हुए कहा कि तुम ऐसे क्या व्याख्यान सुनते हो। अब बहुत व्याख्यान सुन लिए, घर ही बैठे रहिए।

(२९२)

डंडा कौन रख गया ?

एक भाभी गौना करने अपने ससुराल गया। उसके पास चार रुपए की एक तरवार थी। तब उसने विचार किया कि इस तरवार का बोझ कौन उठाए, क्यों न इसे यहीं जमीन में गाडकर चला जाऊ और लौटते समय ले लूगा। यह विचारकर उसने तलवार वहीं गाड दी और ससुराल की तरफ चल पडा।

इधर जब वह तलवार गाड रहा था तो दूर खड़े अेक अेवड चराने वाले ने उसे देख लिया। तब उसने सोचा कि मेरे पास जो कुल्हाडा है उसे तलवार की जगह गाड देता हू और यह चार रुपए की तलवार निकालकर ले लूं। ऐसा विचारकर उसने अपना कुल्हाडा वहा गाड़ दिया और वहा गडी तलवार ले गया।

अब वह भाभी गौना करके ससुराल से लौटा। जहा तलवार गड़ी थी, वहां खोदने लगा तो तलवार की जगह कुल्हाडा निकला। उसे देखकर भांभी बोला— मैं तो अपनी तलवार सीधी गाडकर गया था परतु इसे टेढी-मेढी कौन कर गया ?

तब उसकी पत्नी बोली— लगता है ज्येष्ठ माह की तेज धूप के कारण कच्चा लोह पिघल गया।

वह बोला— पिघल गया सो तो ठीक है परतु इसके पीछे यह डडा कौन रख गया ? ऐसा मूर्ख था।

(२९३)

दूसरों पर दोष

एक ठाकुर के भाई ने अपने लड़के को गौना करने के लिए भेजा। गौना लेकर लौटते समय राह में होली के गेवरिये अश्लील शब्द बोलते हुए गालिया निकाल रहे थे।

तब दूसरे लोगों ने भी उन्हें गालिया निकालते हुए कहा— ठाकुर खानदान की महिला बाजार से गुजर रही है और तुम ऐसी गदी गालिया निकाल रहे हो।

इस प्रकार लोग दूसरों को तो दोषी ठहराते हैं परतु स्वय अश्लील भाषा का प्रयोग करते है उसका उन्हें ध्यान ही नहीं रहता। ऐसे मूर्ख लोग दूसरों को मूर्ख कहते हैं।

इच्छा हो तो रखो !

एक कामदार लोभी था। एक दिन उसके पास एक जाट आया। जाट ने कामदार को कहा— कामदारजी ! क्या आप मुझे अपने यहा नौकर रखोगे ?

तब मूहताजी ने पूछा— तुम क्या साखी (साक्षी का पद या दोहा) जानते हो?

तब जाट बोला—

(दोहा)

साखी-सबदी कछु न जाणूं, जाणूं मोटो साखो ।
अढी सेर का रोटा खावूं, दाय पड़ै तो राखो ।।

(अर्थात् कला-चतुराई कुछ भी नहीं जानता। मैं तो एकमात्र काम जानता हू और वह यह कि सुवह-शाम अढ़ाई किलो आटे की रोटियां खा सकता हूं। अब आपकी इच्छा हो तो मुझे रखिए।)

तब मूंहताजी ने विचार किया कि भोले स्वभाव का नौकर है, यदि रोटी खाने के बदले में इसे रख लिया जाए तो कोई महंगा नहीं है। यह तो मेरे कई काम कर सकता है। यह सोचकर उन्होंने जाट को रख लिया। उससे यह कहा गया कि किसी भी पड़ी हुई वस्तु को कभी मत उठाना !

कई दिनों बाद मूंहताजी सर्दियों में घोड़ी पर सवार होकर निरीक्षण करने निकले। उन्होंने जाट को अपने साथ ले लिया। अब आगे तो घोडी पर मुहताजी और उनके पीछे जाट। जब धूप तेज हुई तो मुहताजी ने सौ रुपए का अपना कीमती दुशाला नीचे गिरा दिया। उन्होंने सोचा कि पीछे जाट चल रहा है, सो इसे उठा लेगा।

जाट ने एक बार वह दुशाला उठा लिया। फिर उसने सोचा कि मूहताजी ने कहा था कि किसी की गिरी हुई वस्तु कभी मत उठाना। यह सोचकर उसने दुसाला वहीं छोड दिया और घोडी के पीछे-पीछे चलता रहा। आगे मूंहताजी ने निरीक्षण कर घोडी को हरा चारा डाला। शाम के समय जब मूहताजी को ठड लगने लगी तो उन्होंने पीछे चल रहे जाट से अपना दुशाला मांगा।

तव जाट बोला— हुजूर, आपने ही तो फरमाया था कि किसी की गिरी हुई वस्तु नहीं उठानी चाहिए, अत मैंने तो दुशाला नहीं उठाया।

मूंहताजी ने कहा— वाह रे मूर्ख ! मैंने पराई वस्तु उठाने के लिए मना किया था परंतु घर की वस्तु उठाने के लिए कव मना किया। घर की वस्तु तो ले लेनी, छोडनी नहीं चाहिए।

जाट बोला— ठीक है मूंहताजी, अब घर की वस्तु को उठा लूंगा।

अब वे वापस घर लौटने लगे। रास्ते में घोडी लीद करने लगी। तब जाट ने सोचा कि मूंहताजी ने कहा था, अत घर की वस्तु नहीं छोडनी चाहिए। यह विचारकर उसने घोडी की लीद थैले में भरली। अब घोडी जब भी लीद करती, जाट उसे थैले में भर लेता। इस प्रकार पूरा थैला लीद से भर गया। अब वह जाट उस थैले का बोझ सर पर उठाए चलने लगा। एक प्रहर रात्रि बीतने पर घर पहुंचा।

मूहताजी ने पूछा— इतनी देरी से कैसे आया ?

जाट ने बताया— लीद लेकर आया हूं। बोझ अधिक था, अत देरी हो गई।

मूहताजी ने पूछा— लीद क्यों लाया है ?

तब जाट बोला— आपने ही तो कहा था कि घर का माल छोडना नहीं चाहिए। इसीलिए मैं लीद को थैले में भरकर लाया हूं।

मूहताजी ने कहा— अरे मूर्ख ! अब इस लीद को रोएगा कि इसका क्या करेगा ?

अब एक दिन राजा सिहासन पर बैठा था। उसके सम्मुख मूहताजी और बहुत-से अमीर-उमराव बैठे थे। तब मूंहताजी की पत्नी ने उस जाट को कहा कि खाना तैयार है, तुम मूहताजी को बुला लाओ।

जाट दौडता हुआ राजसभा के बीच में पहुचकर बोला— मूंहताजी, मूहताजी ! आपकी पत्नी आपको रोटिया खाने के लिए बुला रही हैं।

यह सुनकर राजा और अन्य सभासद हंसने लगे। मूंहताजी को बहुत शर्म आई। वे सभा से उठकर जाट के पास आए और बोले— अरे दरिद्र ! इस प्रकार पत्थर नहीं उछालना चाहिए। पहले धीरे से आकर खडा होना चाहिए। जब मैं सामने देखूं तो एकांत में बुलाकर इस प्रकार की बात कान में कहनी चाहिए।

इस प्रकार जाट को समझाया। फिर कुछ दिन बीते। एक दिन मूहताजी तो राजसभा में बैठे थे और उनकी हवेली में आग लग गई। मूंहताजी की पत्नी ने जाट को कहा— हवेली में आग लग गई है, अत जल्दी से जाकर मूहताजी को बुला लाओ।

तब वह धीरे-धीरे चलकर राजसभा में आया। हाथ जोडकर खड़ा हुआ। बहुत समय बीत गया। तब किसी ने मूहताजी से कहा— आपका नौकर खडा है। तब मूहताजी ने उसके सामने देखा। हाथ जोडे हुए जाट ने कहा— मूहताजी ! एक बार आप एकात में पधारिए, मुझे कुछ कहना है।

एकात में आकर मूहताजी ने पूछा— कहो, क्या बात है ?

जाट ने बताया— आपकी हवेली में आग लग गई है।

तब मूहताजी बोले— अरे मूर्ख ! ऐसी बात बतलाने में इतनी देर क्यों लगाई, आते ही क्यों नहीं कहा ? अब तक तो सारा माल जलकर राख हो गया होगा।

जाट बोला— आपने ही तो कहा था कि घर की बात एकात में कहनी चाहिए।

मूंहताजी ने कहा— आग लगने की बात बतलाने में धीरज नहीं रखना चाहिए।

अब मूहताजी अपने इस नौकर से नाक-नाक आ गए। परेशान होकर उन्होंने इसे मूर्ख समझकर घर से निकाल दिया।

(२९५)

दुबारा कौन रोए ?

एक सेठ विवाह करके परदेश चला गया। उसने बारह वर्षों तक घर पर कागज-पत्र नहीं डाला। उसके माता-पिता और भाई-भाभी चिंता करने लगे परंतु उसका कोई समाचार नहीं आया।

जब उस सेठ के नाम वाला कोई दूसरा आदमी मरा तो एक द्वेषी व्यक्ति ने उनके घर उस सेठ की मृत्यु का समाचार भिजवा दिया। समाचार मिलने पर घरवालों ने रोना-पीटना शुरू कर दिया। उसकी पत्नी ने अपनी चूडियां तोड़कर लंबी बांहों की कुरती पहन ली और विधवा बनकर घर के एक कोने में बैठ गई। इस प्रकार वह दो वर्ष तक कोने में बैठी रही। इस दौरान बहुत दु ख भोगे। बाद में कोना छुडवाकर उसे पीहर ले गए।

परदेश में लाखों रुपए कमाने के पश्चात पद्रहवें वर्ष में वह सेठ रुपए, घोड़े, रथ, पालकियां आदि लेकर सीधा अपने ससुराल वाले गांव पहुंचा। ससुराल में समाचार भिजवाए। तब सास-श्वसुर और साले-सालिया बहुत खुश हुए। चूड़िया-चुनरी और गहने-कपड़े लेकर बाई के पास आकर बोले— बाई ! तुम्हारे भाग्य प्रबल हैं। तुम्हारे पतिदेव लाखों रुपए कमाकर सकुशल घर लौट आए हैं, अत यह चूडियां-चुनरी और गहनें पहनो।

तब वह बोली— अब मैं तो ये सब नहीं पहनूगी।

माता-पिता ने समझाया— अरे अभागिनी ! क्यों नहीं पहनोगी ?

वह बोली— ये पहनने से मेरा पहले का रोना-धोना व्यर्थ चला जाएगा।

पति मरेगा तब फिर कोने में बैठकर रोना पडेगा। इस कारण पहले का रोना-पीटना तो निरर्थक चला जाएगा।

उसे बहुत समझाया गया परंतु वह नहीं मानी। जब यह समाचार उस सेठ ने सुने तो घर लौटकर उसने दूसरा विवाह कर लिया।

(२९६)

आप रहै सैंठौ, तो लोक रहै बैठौ

एक सेठ और उसका बेटा। वे दोनों एक अच्छी नस्ल की घोडी लेकर दूसरे गांव रवाना हुए। बेटा घोडी पर बैठा था। पिता पैदल चल रहा था। आगे जाने पर सामने से आते हुए कुछ लोग मिले। उन्होंने पूछा– यह घोडी पर चढ़ा हुआ कौन है ?

तब पिता ने कहा– यह मेरा बेटा है।

तब उन्होंने बेटे से पूछा– जो पैदल चल रहा है वह कौन है ?

बेटा बोला– मेरे पिता हैं।

तब उन लोगों ने बेटे को कहा– अरे मूर्ख ! बेचारा बाप तो पैदल चल रहा है और तू जवान होकर घोडी पर बैठा है। इस उम्र में भी तू इतना अविनीत है तो बुढापे में बाप की सेवा क्या करेगा ?

बेटे को ये वचन बहुत कडवे लगे। तब उसने अपने पिता को घोडी पर बैठाया और स्वय पैदल चलने लगा। आगे जाने पर दूसरे लोग मिले। उन्होंने पूछा– घोडी पर चढा हुआ कौन है ?

तब बेटा बोला– मेरे पिता हैं।

लोगों ने कहा– अरे वृद्ध ! यम कहीं का, हृदयविहीन ! तू बूढा तो घोडी पर बैठा है और बेचारे बच्चे को पैदल चला रहा है। तुम जैसा मूर्ख दुनिया में नहीं मिलेगा। पैदल चलने से यदि यह बेटा रक्तप्रवाह से मर गया तो वंश तुम्हारा ही नष्ट होगा।

बाप-बेटे ने विचार किया कि लोग तो हम दोनों की निंदा कर रहे हैं। यह सोचकर वे दोनों ही घोड़ी पर बैठ गए। कुछ आगे चलने पर फिर लोग मिले। उन्होंने पूछा– आप कौन हैं ?

वे बोले– हम तो महाजन हैं।

लोगों ने पूछा– घोडी तो घर की है या किराए की है ?

उन्होंने कहा– घोडी तो घर की ही है।

तब लोगों ने कहा– अरे पापियो, दुष्टो, हत्यारो ! तुम इतने निर्दयी हो कि दोनों घोडी पर जमकर बैठ गए ? तुम जाति से तो महाजन हो परतु तुम्हारे कर्म कसाई जैसे हैं।

अब बाप-बेटे दोनों पैदल चलने लगे। आगे चलते हुए घोडी को लगाम पकड़कर खींचने लगे।

आगे लोग मिले, जिन्होंने पूछा– तुम कौन हो और यह घोडी किसकी है?

उन्होंने बताया– हम बाप-बेटे हैं और यह घोड़ी हमारी ही है।

तब लोगों ने कहा– वाह रे मूर्खो ! घर की घोडी और पैदल चल रहे हो? दुनिया में तुम्हारे से भोला और कौन होगा ?

ये वचन उन्हें बहुत कठोर लगे। तब दोनों ने उस मार्ग को ही छोड दिया और घोड़ी लेकर ऊजड चल पड़े। आगे चोर मिले। चोरों ने अच्छे नस्ल की वह घोडी और सारा धनमाल छीन लिया। लोगों की झूठी सीख मानने का यही परिणाम मिलता है।

आप हुवै भोळौ, तो लोक हुवै दोळौ ।
आप रहै सैंठौ, तो लोक रहै बैठौ ।।

(२९७)

पाप का धूप

एक जाट और जाटनी। उनके एक लड़का हुआ। वह जब एक महीने का हुआ तो जाटनी उसे छबडे में डालकर खेत ले गई। वहा उसे एक पेड के नीचे रखकर वह कृषि-कार्य में जुट गई। उस समय जाट खेत के चारों तरफ बाड बना रहा था। उसके हाथ में जेई थी।

कुछ देर बाद जब बच्चा रोने लगा तो जाटनी ने जाट को कहा– बच्चा रो रहा है, अत उसे चुप कराओ।

अब जाट अपने बच्चे के पास आया। उसने सोचा कि बच्चे को खिलाने पर यह रोना बद कर देगा। यह सोचकर वह उस तीखी जेई से बच्चे को इधर-उधर हिलाने लगा। तब जेई बच्चे के पेट में घस गई, जिससे वह मर गया।

जब जाटनी ने आकर देखा तो बच्चा मरा हुआ पडा था। वह बोली– अरे पापी ! तुमने मेरे बच्चे को मार डाला।

तव जाट बोला— अरे पापिन ! मुझे क्या पता था कि तुम पाप का धूप जनोगी।

लोगों ने जब बच्चे के मरने का समाचार सुना तो सभी जाट को धिक्कारने लगे। वह जगत् में निंदित हुआ।

(२९८)

सर पर धोती

एक जाट का बेटा था। वह मूर्ख था। उसके घर एक भैंस दो-चार दिनों में प्रसवित होने वाली थी। तब उस भैंस को घर पर ही रखा गया। जाट का बेटा उस भैंस को तालाब पर ले जाता और पानी पिलाकर वापस घर ले आता था।

एक दिन भैंस को पानी पिलाने ले जाते समय उसने विचार किया कि भैंस के पाडी (कटडी) जन्मे तो अच्छा है। उस पाडी के सर पर यदि सफेद तिलक हो तो सारे मनोरथ सिद्ध हो जाएगे। ऐसे विचारों में खोया हुआ वह भैंस को पानी पिलाने तलाव के अंदर ले गया। उसने भैंस की पूछ को पकड रखा था। भैंस उसे खींचती हुई पानी में आगे ले गई। तब उसने अपनी धोती खोलकर सर पर बाध ली।

अव भैंस ने प्रसव किया। उसने एक पाडी को जन्म दिया। उस पाडी के सर पर सफेद तिलक देखकर जाट का बेटा बहुत खुश हुआ। वह इस खुशी में पागल हुआ पाडी को गोद में उठाकर घर की तरफ चल पडा। पीछे-पीछे भैंस आने लगी।

उसकी धोती अव भी सर पर ही बधी हुई थी। रास्ते में लोग मिले। उन्होंने पूछा— अरे ! यह क्या ? वह बोला— मेरी भैंस ने प्रसव किया है।

लोगों ने कहा— सो तो ठीक है, परतु यह क्या है ?

वह बोला— पाडी है और क्या ?

तव लोग बोले— अरे ! सर पर क्या है ?

वह वोला— इसके सर पर तो तिलक है, तिलक !

उसे जो भी पूछते उन्हें यही जवाव देता। इस प्रकार वह वाजार में पहुचा। वहा अन्य लोगों ने पूछा तो उसने उपर्युक्त जवाव दिया। आगे मोहल्ले में वहिनें चरखा चला रही थी। वह वहा आया। उनके पूछने पर भी इसने वही जवाव दिया और यही जवाव अपने माता-पिता को दिया।

तव उसकी पत्नी ने वाहर आकर उसके एक थप्पड जडते हुए कहा— अरे मूर्ख, हृदयविहीन, वेशर्म ! तुम्हारे सर पर क्या है ?

तव वह दौडकर अपने घर में घुसा।

(२९९)

चबाना तो मुझे ही पड़ता है

एक सेठ महा आलसी था। उसकी पत्नी आटा पीस, रोटी पकाकर उसका चूरमा बनाती। उस चूरमे के ग्रास वह अपने हाथों से सेठ के मुह में देती। तब भी वह टसकता हुआ उस ग्रास को गले से नीचे उतारता था।

तब पत्नी ने पूछा– आटा मैं पीसती हू, रोटी का चूरमा बनाकर उसका ग्रास तुम्हारे मुह में देती हूं फिर भी तुम टसकते हो ?

वह आलसी सेठ बोला– सो तो ठीक है परंतु चबाना तो मुझे ही पडता है।

(३००)

तीज और तेरस इकट्ठी

एक ब्राह्मण था। वह बिलकुल पढा-लिखा नहीं था। वह एक छोटे-से गाव में रहता था। उसने पद्रह बास इकट्ठे कर रखे थे। अब उसने शहर में जाकर पूछा कि आज क्या तिथि है ? तब लोगों ने कहा– आज एकम है।

वह अपने गाव आया और उन पंद्रह बासों में से एक बास को अलग रखा। जब कोई गांव वाला तिथि पूछने आता तो वह कोने में रखे बास को देखकर कहता– आज एकम है। इसी प्रकार दूज, तीज. .बासों की सख्या गिनकर वह प्रतिदिन तिथिया बताता था।

एक दिन तीज थी। शहर में जाने पर उसे इस तिथि का पता लगा तो उसने घर आकर तीन बांस अलग रख दिए। अब वह तो गाव के बाहर गया और पीछे से उसकी पत्नी ने झाडू निकालते समय सारे बास एक कोने में रख दिए।

कुछ देर बाद ब्राह्मण अपने घर लौटा। उसी समय किसी आदमी ने आकर पूछा– पंडितजी ! आज क्या तिथि है ?

सारे बांसों को कोने में इकट्ठा देखकर वह ब्राह्मण बोला– भैया, आज तो तीज और तेरस इकट्ठी हो गई है।

तब वह पूछने वाला समझ गया कि यह ब्राह्मण तो मूर्ख है। तीज और तेरस एक साथ कभी नहीं हो सकती। दूज और तीज अथवा तीज और चौथ तो एक साथ हो सकती है परतु तीज और तेरस के इकट्ठा होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। यह है मूर्ख ब्राह्मण की कथा।

